माओ के देश में

करेन्ट पब्लिशर्स, मालरोड, कानपुर ।

जुलाई १९५० के दिनों में जिनके पास रहकर चीनी-जन-क्रांति की विचारधारा और अमल समझने का मौक़ा मिला—और जिनसे पहली बार अपने देश में कृषि-क्रांति के अगुवा तेलङ्गाना के लाखों किसानों के संघर्षों की कहानियाँ सुनने को मिलीं।

प्रिय साथी

बासव पुन्नैया को

डायरी क्यों ?

यह किताब चीन पर लिखी गई बहुत सी किताबों की लिस्ट बढ़ाने के लिए नहीं लिखी गई। ५ हफ्तों में ५० करोड़ चीनियों के देश और उनकी जिंदगी के बारे में सब कुछ जान लेना, समझ लेना और उसे अपनी जनता के लिए सरल भाषा में पेश कर सकना कठिन काम है। कम से कम मेरे ऐसे व्यक्ति के लिए तो बहुत ही कठिन।

अपने देशवासियों के दिल में चीन के महान नेताओं, वहाँ की जनता की कामयाबियाँ जानने-समझने की बहुत जोरदार इच्छा है। यह भावना निरन्तर दिन पर दिन तेज हो रही है।

"माओ के देश में" जो मैंने देखा, जो सुना और जो प्रतिक्रिया हुई, उसी को डायरी के रूप में लिखा गया है। कई साथियों ने इसे प्रकाशित करने पर जोर दिया और वह आपके सामने है।

अपने देश से "मई दिवस" के अवसर पर २० ट्रेड यूनियन कार्यकर्ता अखिल चीनी मजदूर फेडरेशन के बुलाने पर चीन गए थे। अखिल-भारतीय ट्रेडयूनियन कांग्रेस के उप-सभापति कामरेड संतसिंह यूसुफ के साथ मुझे भी चीन जाने का मौका मिला। हालाँकि पासपोर्ट मिलने में बहुत देर हो गई थी, तो भी भारत-स्थित चीनी राजदूतावास की मेहरबानी से चीन की यात्रा हो गई। दूतावास के लोगों को मुश्किल भी उठानी पड़ी। चीन के मजदूर फेडरेशन और दूतावास के अधिकारियों को जितना भी धन्यवाद दिया जाय, थोड़ा होगा।

इस डायरी की सामग्री के लिए मुख्यतया चीन के कृपालु साथियों को ही धन्यवाद देना चाहिए। साम्राज्यवादी झूठ और प्रचार के खिलाफ यह सत्य अपने देशवासियों और जनता के सामने है। हिन्द-चीन दोस्ती को मजबूत करने में, विश्वास है, यह डायरी सहायक होगी।

मजदूर सभा, ग्वालटोली, कानपुर
९ जुलाई, १९५२

राम आसरे

महान पड़ोसी चीन

अपने हिमालय के पार, पुरानी सभ्यता और संस्कृति का पड़ोसी चीन, मुक्ति के तीन साल से कुछ कम हीं दिनों में बहुत आगे बढ़ गया है।

आज के चीन की प्रगति का सच्चा अंदाजा किताबों और मैगज़ीनों से नहीं हो सकता। चीन जाने से पहले मैंने चीन पर प्रकाशित तमाम साहित्य पढ़ा था। चीनी नेताओं के लेखों और भाषणों को भी पढ़ा था। लेकिन चीन जाकर जो कुछ आँखों से देखा वह सब कुछ पढ़े हुए ज्ञान से कहीं ज़्यादा था।

चीनी जनता की यह प्रगति ज़िंदगी के हर क्षेत्र में हुई है। जो ज़मीन जोतता है उसे खाने-पहिनने की कमी नहीं है। जो मशीन चलाता है, कपड़ा बनाता है, उसके बच्चे जाड़ों-गरमियों में एक-एक गज के लिए तरसते हुए गंदी गंदी गलियों में नहीं घूमते फिरते। जो मकान बनाता है, महल उठाता है— आपके शहरों को ज़िंदगी-रवानी देता है, वह सड़कों के फ़ुटपाथों पर रातें गुज़ारने को मजबूर नहीं है। पचास करोड़ से ऊपर चीनियों के उस विशाल देश में न कहीं अकाल है और न कहीं महामारी; इतने बड़े देश में न बेकारों की भीड़ है और न भिखारियों की चिल्लाहट। और सबसे बड़ी बात—पूँजीवादी समाज और सभ्यता के पतन की प्रतीक वेश्यायें भी कहीं नहीं हैं।

हाँग काँग रास्ते में पड़ता है। और अभी तक अंग्रेज़ों के अधिकार में है।* यहाँ २४ घंटे से ज़्यादा नहीं रहा। लेकिन इतनी ही देर में यहाँ की सड़ाँध ने घर की याद दिला दी।

चीन की सरसब्ज़ ज़मीन पर ५ हफ्ते रहा— घर की याद आती थी तो इसी पृष्ठ भूमि में कि तीन साल पहले चीन की हालत अपनी

ही जैसी थी। खुशहाल, किलकारी भरते हुए बच्चे दीखते तो अपने यहाँ के बुझी हुई आँखें लिए, बढ़े हुए पेट वाले बच्चे याद आते। पार्कों, अवकाश-गृहों, क्रीड़ा-स्थलों में नवजवान युवक और युवतियाँ घूमते दिखाई पड़ते तो यहाँ के पिछड़े पन और बंधनों की याद आ जाती। हरे-भरे खेत, खुशहाल किसान-परिवार दीखते तो हड्डियों-पंजर वाले अपने किसानों की याद आ जाती। फैक्टरियों में मुस्कराती स्वागत भरी मज़दूरों की आंखें और हाथों की लगन अपने मिल-गेटों से निकलने वाले थके-बुझे मजदूरों की भीड़ सामने ला देती। बस घर की याद इसी शकल में आती थी।

लौटते वक्त हाँगकाँग में रुकने की तबियत न हुई— लेकिन आज भी पेकिंग के आपेरा-गृहों में सुनी हुई मीठी तानें परेशान कर देती हैं। आज भी कैंटन के बच्चों के महल में मिले पचासों बच्चों के चेहरों की मुस्कराहट बार-बार जी उठती है। आज भी हैंगचाऊ की झील के सुहाने दृश्य उलझन पैदा करते रहते हैं। आज भी मेरी आंखें स्वागत करने वाली हजारों की चमकती-मुस्कराती आंखों को देखने को तरसती हैं और आज भी मेरे कान इस छोटे अरसे में बन गए दोस्तों ली, वाँग, जाई, चँग, शेन, टाँग, वू, लिन, साई— की बातों को सुनने को उतावले रहते हैं।

जैसा प्यार, जैसा स्वागत और जैसा अपनापन चीन में मिला वह सिर्फ चीनी ही दे सकते हैं।

× × ×

५ हफ्तों में हम चीन के शहरों और गाँवों में गए। हमने फैक्टरियों में मजदूरों को काम करते देखा। मजदूरों के लिए बने हुए नए मकानों में माताओं और बहुओं से मिले। शिशु-गृहों में बच्चों से बातें कीं। हमने खेतों-खलिहानों में किसानों को देखा। बाजारों में घूमे।

व्यापारियों से बातें की। विद्यार्थियों और नवजवानों से मिले। प्रदर्शिनियाँ, अजायब घर, शहीदों के स्मारक देखे।

सभी जगहों पर हमें नई जिन्दगी, अथाह जोश, अचरज में डालने वाला अनुशासन, अटूट एकता और भाईचारा देखने को मिला।

देखने में चीन के शहर, वहाँ के गाँव, प्राकृतिक सौंदर्य बहुत कुछ अपने ही यहाँ जैसा लगा। इन्सानों की श्रम करने की रचनात्मक शक्ति बहुत कुछ अपने ही मजदूरों, किसानों और ग़रीबों की सी है।

फैले हुए मैदानों में छोटे-छोटे गाँव, बहुत बड़े क्षेत्र में वैसे ही पिछड़े हुए खेती के औजार और मवेशी। चीन में ग़रीबी, पिछड़ापन या बम्बई कानपुर की तरह मजदूरों के घने-बसे क्वार्टर भी देखने को मिले।

लेकिन औरत-मर्द, बच्चे-बूढ़े सभी में अपने देश को ऊँचा उठाने की कोशिश, कभी न हार मानने वाली लगन, लालों की मुस्कराहट, जिन्दगी की सादगी, नम्रता, विदेशी दोस्तों और विशेषकर सोवियत यूनियन और हिन्दुस्तान के प्रति प्यार और इज़्ज़त, शाँति-स्थायी शाँति के लिए जबर्दस्त ख़्वाहिश - हमें सभी जगह मिली।

चीन के भूमि-सुधार-बुनियादी और पूरी तौर पर चीन की मौजूदा प्रगति की पहली कड़ी हैं। इतिहास में इतने बड़े पैमाने पर भूमि-सुधार कभी नहीं हुआ। करोड़ों-करोड़ों इन्सानों को सामंती जुए से मुक्त कर दिया गया है। अभी तक ३१ करोड़ किसान लगान और कर्जों की कमरतोड़ जंजीरों से आजाद हो चुके हैं।

मुक्ति से पहले १०० किसानों में ५ जमींदार थे, और पूरे देश की जमीन का ६० फ़ीसदी यानी ५ में तीन हिस्सा इन मुफ्तखोरों के हाथ में था। और शहरों के अलावा गाँवों में रहने वालों के पास १०० में ९५ के पास ४० फ़ीसदी जमीन थी।

यह हालत चीन की प्रगति रोकने के लिए बहुत बड़ा भीतरी कारण था ऐसे समाज में जो देखने में ही अन्याय मालूम पड़ता है—जनवाद चीन की शोषित करोड़ों जनता के लिए न था।

गांवों में जमींदार थे, वह काम न करते थे। दूसरे उनके लिए कमाते थे। लगान, सूद और टैक्सों के बल पर वह राज करते थे। गरीब किसान के मुक़ाबले जमींदार के पास ३० गुना, ४० गुना और कभी कभी ५० गुना जमीन होती थी। फिर बड़े किसान थे। संख्या में यह ज्यादा न थे, सिर्फ ५ फ़ीसदी। इनके पास अच्छी जमीन का दसवाँ हिस्सा था, यह खुद भी काम करते थे और लगान पर भी उठाते थे; मध्यम किसान खुद कमाता था और अपने भर को काफ़ी पैदा करता था, उसे मजदूरी पर जाना नहीं पड़ता था। गरीब किसानों की तादाद सबसे ज्यादा थी और उनकी तादाद बढ़ती भी जाती थी। लगान, सूद और कर्जों का त्रिसूल उन्हें तबाह और बरबाद करता था। खेतिहार मजदूरों के पास अपनी जमीन न थी, वह दिन रात मशक्कत करते थे—दूसरों के लिए इनकी जिंदगी गुलामों की सी थी।

चीन के किसानों ने चीन की कम्युनिस्ट पार्टी और मजदूर वर्ग के नेतृत्व में लम्बा, कठिन और क्रांतिकारी संघर्ष चलाया। ३० सालों की इस लड़ाई में सामंतवाद को मिटाने के लिए करोड़ों किसानों ने हिस्सा लिया। कम्युनिस्ट पार्टी ने उन्हें संगठित किया और चीन के प्रतिक्रियावाद की आधार-शिला सामंतवाद को राष्ट्रव्यापी संघर्ष में हराया।

नई जनवादी सरकार के आने के ८ महीने के भीतर भूमि-सुधार क़ानून और देहातों में वर्ग-भेद सम्बन्धी ऐतिहासिक फैसले लागू किए गए। जमींदारों की जमीन ले ली गई। वह हर परिवार की जरूरत के मुताबिक, जमीन की अच्छाई-बुराई के आधार पर, आम किसानों

की राय से बिना क़ीमत किसानों में बाँट दी गई। जमीदारों के घर, औजार, मवेशी खत्तियों में भरा अनाज जब्त कर लिया गया और जरूरतमन्दों में बांट दिया गया। किसानों की कचहरियां बैठीं। जुल्मी जमीदारों के मुक़दमे हुए उन्हें सजायें दी गईं। लेकिन छोटे जमीदार या ऐसे मध्यम जमीदार जिन्होंने प्रतिक्रियावादियों का साथ नहीं दिया, जिनके माथे जुल्मों का कलंक नहीं, उनके पास उनके या उनके परिवार की जिंदगी बसर करने के लिए जमीन छोड़ दी गई। उन्हें भी सबकी तरह मेहनत की रोटी खाने का मौक़ा दिया गया है। बड़े किसानों की जमीन के उस हिस्से को जिसे वह लगान पर उठाते थे, जिसे खुद नहीं कमाते थे, ले लिया गया।

आज चीन के ८० फ़ीसदी किसानों के पास जमीन अपनी है। लगान, कर्जों और सूद का बोझा हटा दिया गया है।

नतीजा यह हुआ कि किसान जनता कृषि-उत्पादन में जोश से लगी है। हम रेल, मोटर, जहाज से हजारों मील घूमे हैं लेकिन हमें चीन में एक भी जमीन का टुकड़ा परती नहीं मिला। रेल की पटरियों के पास तक हल चल गया है। ऊँची पहाड़ियों तक पर किसान पहुँच गए हैं। खेती की पैदावार ड्योढ़ी-दुगनी तक हो गयी है। पहले दूसरे देशों से अनाज और रुई मँगानी पड़ती थी फिर भी अकाल पड़ते रहते थे, आज चीन न सिर्फ़ अपने खाने भर को काफी पैदा करने लगा है बल्कि हमारी भी मदद करता है।

ज्यादा काम करने से पैदावार बढ़ने से गांवों में खुशहाली आई है। उत्तर-पूर्वी चीन में कपड़े की खपत पहले से ११ गुनी बढ़ गई है।

सरकार किसानों को कर्जे देकर उनकी पैदावार खरीदकर, सस्ते दामों पर हल, मवेशी, बीज आदि देकर हर तरह की मदद करती है

किसानों में राजनैतिक जागृति के लिये जाड़ों के स्कूल खोले गए हैं जिनमें लाखों किसान पढ़ते हैं।

भूमि सुधारने फ़ौरी तौर पर किसानों की खरीद की ताक़त कई गुना बढ़ा दी है। चीन के उद्योग धंधों की प्रगति पर पड़ा हुआ ताला हट गया है। चीन की जनता ने कम्युनिस्ट पार्टी की अगुवाई में सामंत-वादियों की राजनैतिक शक्ति को खतम कर दिया है और इनकी मदद करने वाले साम्राज्यवादियों को चीन से निकाल दिया है। यह बहुत बड़ी राजनैतिक, आर्थिक और साँस्कृतिक जीत है।

चीन के देशी उद्योगों को बहुत बड़ी बाजार मिल गई है। सरकार ने विदेशी साम्राज्यवादियों और इनके एजेंट गद्दार पूँजीपतियों की जायदाद जब्त करके उनका राष्ट्रीयकरण कर दिया है।

चीन में सरकारी फ़ैक्टरियों के साथ-साथ व्यक्तिगत पूँजीवाली मिलें भी बड़ी तादाद में हैं लेकिन राष्ट्रीय आर्थिक ढाँचे की बागडोर राष्ट्रीयकरण की गई पूँजी के हाथों में है। पिछड़ेपन के कारण चीन को अभी लंबे अरसे तक पूँजी की जरूरत होगी जिससे देश का औद्योगीकरण बड़े पैमाने पर किया जा सके इसलिये ऐसे पूँजीपति जो चीन का समान कार्यक्रम मानते हैं जो राष्ट्रीय हितों के लिए काम करते हैं चीन के आर्थिक ढाँचे में उनकी जगह है।

ट्रेड यूनियन कानून, बीमा कानून के जरिये सरकार ने मजदूरों की जिंदगी में फ़ौरी सुधार किया। राष्ट्रीयकरण की हुई फैक्टरियाँ मजदूरों के चुने हुए प्रतिनिधियों द्वारा ट्रेड यूनियनों के सहयोग से चलती हैं। व्यक्तिगत फैक्टरियाँ मालिकों और ट्रेड यूनियनों के प्रतिनिधियों की संयुक्त कमेटियों की सलाह से चलती हैं।

छोटे-मोटे उद्योग धन्धों के विकास के साथ बड़े उद्योग धंधों में बहुत तेज प्रगति हुई है। मंचूरिया के औद्योगिक केन्द्रों में यह प्रगति बिल्कुल साफ नजर आती है। बड़े बड़े मशीन बनाने के कारखाने बन गए हैं

जो चीन की जरूरत की मशीनें बनाएँगे। सुई से लेकर मोटर, रेलवे इंजन, ट्रैक्टर सभी चीन में बनाए जाते हैं।

मुद्रा स्फीत को खतम करने, कीमतों को स्थाई बनाने और चोर बाजारी और सट्टेबाजी को मिटाने के बाद अभी कुछ महीने हुए सरकार कम्युनिस्ट पार्टी और जन-संगठनों ने दो महान आंदोलनों को चलाया। चीन में उन्हें ३-विरोधी और ५-विरोधी कहते हैं। ३-विरोधी सरकारी कारखानों, दफ्तरों और जन संगठनों में चला। (१) बरबादी के खिलाफ, (२) बेईमानी के खिलाफ और (३) नौकर-शाहियत के खिलाफ इस आंदोलन के दौरान में खुले आम हर जगह पर आलोचना और प्रत्यालोचना के आधार पर नौकरशाहों, बेईमानों और बरबादी करने वालों को खोज निकाला गया और उन्हें कड़ी सजायें दी गईं। कम्युनिस्ट पार्टी के भीतर भी ऐसे लोगों को नहीं छोड़ा गया, उन्हें और ज़्यादा सख़्त सजा दी गई।

जनता की सेवा, नम्रता और सबको मदद करने की भावना सरकारी अफसरों, जन-संगठनों के अधिकारियों, सभी जगह पाई जाती है।

५—विरोधी व्यक्तिगत पूँजी वाले उद्योगों और व्यापार में चलाया गया। १—घूस देने के खिलाफ, २—सरकारी सम्पति की बरबादी के खिलाफ, ३—सट्टेबाजी के लिये सरकारी सूचनाएं चुराने के खिलाफ ४—टैक्स नादेहंदी के खिलाफ और ५—सरकारी ठेकों में धोखेबाजी के खिलाफ।

यह आँदोलन राष्ट्र हित में पूँजीपतियों के उन तत्वों के खिलाफ था जो समान कार्यक्रम के सिद्धान्तों के खिलाफ राष्ट्र विरोधी जन विरोधी और राज्य-विरोधी काम कर रहे थे। यह आँदोलन बहुत ही सख़्ती से चलाया गया। राष्ट्रीय पूँजीपतियों के इन षड्यंत्रकारी तत्वों का, जिनमें से बहुतों का अभी भी साम्राज्यवादियों से ताल्लुक है, समान कार्यक्रम के खिलाफ काम चलने देना खतरनाक होता और चीन के

अनुभवी नेताओं ने संयुक्त मोर्चे के भीतर लगातार संघर्ष की नीति पर चलकर इस खतरे को खतम किया हालाँकि अपराधी तत्वों के साथ, अपराध मान लेने पर काफी मुरौवत बरती गई।

इस तरह राष्ट्रीय आर्थिक जीवन में राष्ट्रीयकरण की गई फैक्टरियों का मजबूत नेतृत्व स्थापित करके, व्यक्तिगत कारखानों को राष्ट्र हित में विकसित करने के लिए सरकारी आर्डर और कर्जे दिये गए, वाजिब मुनाफे लेने दिये गये।

कृषि-उत्पादन में जबरदस्त प्रगति, औद्योगिक उत्पादन में जबरदस्त प्रगति, राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार क्षेत्र में प्रगति के द्वारा खुशहाली बढ़ी है। हुआई, चिनजियान जैसी महान विकास योजनाएँ पूरे देश में कागजी नहीं, बल्कि कामयाबी से आगे बढ़ रही है।

तमाम जनता जन-संगठनों में संगठित है। मजदूर, मजदूर सभाओं में, किसान, किसान सभाओं में, नवजवान, नवजवान लीग में औरतें जनवादी महिला लीग में, किशोर पायनियर संगठनों में संगठित हैं।

चीन की मौजूदा प्रगति के पीछे इस संगठित और जागृत जनता की ताकत है। ट्रेड यूनियनों की मेंबरशिप ७२ लाख ६००० है, जनवादी महिला लीग में ७ करोड़ ६० लाख मेंबर हैं। भूमि सुधार के इलाकों में किसान जनता का बहुत बड़ा बहुमत किसान सभाओं में है। इसके अलावा लेखकों, कलाकारों आदि के संगठन हैं जो राष्ट्रीय जीवन में सक्रिय हिस्सा लेते हैं।

संस्कृति और शिक्षा के क्षेत्र में बहुत तेज प्रगति हुई है। किसानों और मजदूरों में निरक्षरता दूर करने के लिए रात के स्कूल बड़े पैमाने पर चलाए जा रहे हैं जिनमें लाखों किसान और मजदूर न सिर्फ शिक्षा पाते हैं बल्कि राजनैतिक शिक्षा और ट्रेनिंग भी पाते हैं।

सिर्फ शँघाई में पिछले दो सालों में वहाँ काम करने वाले आधे से ज्यादा मजदूरों को लिखना-पढ़ना सिखाया गया और सबको, करीब

५ लाख, राजनैतिक शिक्षा दी जा चुकी है। मजदूरों में से ७८ हजार से ज्यादा को शासन-संबंधी कामों में ट्रेनिंग देकर उन्हें ऊँची जगहों पर भेजा गया है। नानकिंग, पेकिंग, कैंटन सभी जगह इसी तरह की कमोबेश प्रगति दिखाई देती है।

आज चीन की ५० करोड़ जनता अपनी इसी कामयाबी की सुरक्षा के लिए सबसे ज़्यादा जागृत है। इसीलिए हम जहां जहां गए, 'शांति जिन्दाबाद' के नारे सुनाई दिये, यहां तक कि चीन की प्रसिद्ध बड़ी दीवाल पर भी एक ऊँची पहाड़ी की चोटी पर बड़े-बड़े काले अक्षरों में लिखा देखा, 'एशियावासियो एक हो। अमरीका का मुक़ाबला करो। कोरिया की मदद करो।'

समूचे चीन में अपने देश के नव-निर्माण, कोरिया की मदद और तमाम दुनिया के देशों से शांतिपूर्ण संबंध रखने और विशेषकर हिन्दुस्तान, सोवियत यूनियन और चीन की जनता की एकता के लिए जोरदार भावना है।

चीन की मौजूदा प्रगति, विकास की इस रफ्तार के पीछे चीन की महान कम्युनिस्ट पार्टी का नेतृत्व और कामरेड माओ का निर्देशन है। शहर, गांव, झील, पार्क, फैक्टरी या नर्सरी-सभी जगह कम्युनिस्ट पार्टी का आदर और अपने नेताओं विशेषकर कामरेड माओ के लिए प्यार है।

चीन की कम्युनिस्ट पार्टी ने अपनी जनता का विश्वास ३० साल के बलिदान, साहसी और सच्चे अमल के दौरान में प्राप्त किया है।

९ मई

हाँगकाँग में।

सवेरे १० बजे के क़रीब हमारा हवाई जहाज हाँगकाँग पर मँडराने लगा। जैसे जैसे वह नीचे आ रहा था, नीचे हरी भरी पहाड़ियों पर बसे, समुद्र की लहरों के बीच हाँगकाँग के छोटे छोटे घर दिखाई पड़ने लगे।

१० मिनट के भीतर ही जहाज ज़मीन पर आ गया। इंजन बन्द हो गये। दूसरे यात्रियों के साथ उतर कर कस्टम्स में आए। पहुँचते ही एक साहब ने एक चिट दी और कहा कि आपके दोस्त आए हुए हैं। अंग्रेजी अफ़सर ने पासपोर्ट देखा। मुहर लगाई। वहाँ से निकल कर दूसरे बड़े हाल में आया। सूटकेश की तलाशी ली गई और फिर बाहर जाने की इजाज़त मिली।

बाहर एक दुबला पतला पीला सा नौजवान सिल्क के कपड़ों में खड़ा था, मेरे निकलते ही वह आगे बढ़ा और हाथ मिलाया, पूछा—सफ़र कैसा रहा, कोई तकलीफ तो नहीं हुई? "नहीं कुछ, नहीं" कहकर मैं चुप हो गया। शायद इस नएपन की वजह से मैं कुछ सिटपिटाया सा था। हर चीज़ नई थी।

मोटर पर बैठकर हम एक बड़े होटल में आए। नाम दर्ज हुए दस्तखत किए और लिफ्ट से ५वीं मंजिल पर जा पहुँचे। नया-चीन समाचार एजेन्सी के इस दोस्त का नाम टाँग था। उसने बताया कि कैंटन जाना आज मुमकिन न हो सकेगा। उसने आगे कहा कि हाँगकाँग अंग्रेजों के कब्जे में है और आजकल यहाँ प्रगतिशील लोगों के खिलाफ सख्तियाँ बहुत हैं। ज़्यादा घूमना घामना ठीक नहीं।

टाँग ने बताया कि पिछले ६ महीने से चीनी लोगों के खिलाफ एक न एक घटना होती ही रहती है। इसकी शुरुआत नवम्बर के तीसरे हफ्ते में हुई जब कोलून के एक गांव तुँगताऊ में बड़े रहस्यमय ढंग से आग लग गई और १६००० से ज्यादा चीनी बेघरबार हो गये। तुर्रा यह कि अधिकारियों की तरफ से आग बुझाने की कोई कोशिश नहीं हुई। उल्टे गाँव वालों को आग बुझाने से रोक दिया गया। गुण्डों को इस मौके पर लूटने की आज़ादी दे दी गई। न उन्हें कोई सहायता दी गई और न किसी को इजाजत दी गई कि वह सहायता दे सके।

नए चीन की जनता इस घटना से बहुत परेशान हुई। लेकिन अधिकारियों ने कैंटन से आने वाले एक प्रतिनिधि मण्डल पर रोक लगा दी। साथ ही उन्होंने प्रगतिशील चीनियों को हाँगकाँग से निकालना शुरू किया।

पहली मार्च को एक और खूनी घटना हुई। कैंटन के प्रतिनिधि-मंडल को रोक दिया गया और तुँगताऊ में खबर कर दी गई कि वह १० बजे आयेगा। साथ ही पुलिस के दस्ते और ट्रकें भेज दी गईं। जब प्रतिनिधि-मंडल के स्वागत के लिए लोग इकट्ठा हुए तो उनपर आंसू गैस और गोलियाँ बरसाई गईं। चेनताई नामक एक सूती मजदूर शहीद हुआ। अनेक घायल हुए। और फिर चीनियों की गिरफ्तारियाँ होती रहीं।

ताकुंग पाव नाम के प्रगतिशील अखबार ने जब इसके विरोध में लेख लिखे तो उसके अधिकारियों को गिरफ्तार कर लिया गया और ताकुंगपाव का प्रकाशन बंद कर दिया गया।

इसके साथ ही ट्रेड यूनियन नेताओं पर भी जुल्म बढ़ते गए। पिछले ४-५ दिनों से १८ ट्रेड यूनियन लीडर गिरफ्तार किए जा चुके हैं। उन्हें चीन भेज दिया गया है।

करीब १ घंटे तक यही बातचीत चलती रही। टाँग फिर चला गया।

मौसम बहुत अच्छा नहीं है। बम्बई की तरह सख़्त उमस और आसमान पर बादल।

शाम को कोलून की मेन सड़क पर टहलने निकल गए। समूचा वातावरण अंग्रेजों के जमाने के बम्बई का सा है कहीं कहीं हिन्दुस्तानी भाइयों की दुकानें भी हैं—वैसी ही जैसी कलकत्ता और बम्बई में चीनियों की।

एक बड़ी सी किताबों की दूकान पर गए। लेकिन वहाँ आजकल के अमरीकी ट्रैश के अलावा कुछ न दिखाई पड़ा। और आगे बढ़े। ज़्यादातर चीनियों की ज़िन्दगी उतनी ही उलझी और परेशानी की दिखाई पड़ी जितनी अपने यहाँ गरीबों की है। थोड़ी थोड़ी दूर पर छोटे छोटे बच्चे और बच्चियाँ हाथों में फ़ूल लिए चलने वालों के लगाने दौड़ती हैं। भीख माँगने का यह एक तरीका है।

लौटकर आए तो अंधेरा हो चुका था। होटल का वातावरण इस वक़्त बहुत ही घिनौना हो चुका था। अँग्रेज टामी खूबसूरत लौंडियों को बगल में दबाए आ जा रहे थे। एक तरफ़ धड़ल्ले से शराब चल रही थी और दूसरी तरफ़ नाच और असभ्य, भोंडी किलकारियाँ और शोर-गुल।

कमरे में पहुँचा ही था कि चीनी ब्यिरर आया। पूछा—आप कहीं बाहर नहीं जायँगे। उसका मतलब न समझकर मैंने पूछा—कहाँ? चीनी अंग्रेजी में जब उसने तीन बार दोहराया तो समझ में आया कि वह कह रहा था—"टु ए गर्ल" (किसी लड़की के पास) इस बेहूदा बात से मैं काँप तो गया लेकिन मैंने धीरे से कह दिया—नहीं।

कमरे में अकेले मन न लगा, किताबें पढ़ने की कोशिश की—लेकिन बेकार, निकल कर बाहर आया तो एक हिन्दुस्तानी भाई दिखाई पड़े,

पास से गुज़रा तो उन्होंने ही खुद रोक दिया। हिन्दुस्तान छोड़े अभी २४ घंटे ही हुए थे, लेकिन तब भी इस हिन्दुस्तानी के मिलने से खुशी हुई। बात चीत से मालूम हुआ कि वह हिन्दुस्तान के पेकिंग राजदूतावास में हैं और यहाँ डाक लेने आए हैं।

वक्त काटने के लिए उन्हीं के कमरे में चला गया। उन्होंने देश के हाल पूछे। मैंने गोरखपुर और कोट्टयम के मजदूरों पर हुए गोली कांडों से लेकर, राजेन्द्रबाबू के चुनाव और कलकत्ता की आम-हड़ताल की खबरें बता डालीं। वह ट्रावनकोर कोचीन के थे। बातचीत के दौरान में गार्ज और पुन्नोस की महानता और बड़ाई में भी उन्होंने बहुत कुछ कहा। चीन के बारे में भी उन्होंने कहा—कि तीन बरसों में ही चीन नव-निर्माण के क्रम में बहुत आगे बढ़ गया है। और मेंहमाँनबाजी में तो चीनियों का किसी से मुक़ाबला नहीं किया जा सकता। उसने हाँगकाँग की सड़ाँध के बारे में भी बहुत कुछ कहा। चीन से भागे हुए पापियों ने यहीं आकर शरण ली है। इस होटल के आसपास रात में ९ बजे के बाद खुला चकला लग जाता है और टामियों की वजह से कोई भली मानस औरत इधर से नहीं निकल सकती। उसकी आंखों में घृणा और नाराज़गी थी।

हाँगकाँग के ९० फ़ी सदी निवासी चीनी हैं और यह अंग्रेजों के अधिकार में हैं। हाँगकाँग साम्राज्यवादी सड़ाँध और उसके पतन प्रतीक है।

———

१० मई

"अपनी ज़मीन" पर।

सबेरे ११ बजे होटल से विदा ली। टॉंग साथ में था। वह मुझे "अपनी ज़मीन" तक पहुँचाकर लौट आयेगा। साथ जाना इसलिए ज़रूरी है कि कोई मुसीबत न आ जाय। अब तक सादी पोशाक वाले कुत्ते पीछे लग चुके हैं।

स्टेशन बहुत नज़दीक था। हम लोग पहले दर्जे में बैठ गये। लोऊ स्टेशन एक घंटे का रास्ता है। गाड़ी के दोनों तरफ हरी-भरी ऊँची-नीची पहाड़ियों का लम्बा और खूबसूरत सिलसिला है। बहुत देर तक बाहर देखता और सोचता रहा। अपना देश जो पीछे छूट चुका है—"अपनी ज़मीन" जो आने को है। महान देश चीन और चीनियों को देखने की तमन्ना तेज़ होती जा रही है— चीन जिसके इन्क़लाब और प्रगति ने दुनियाँ को चकरा दिया है। चीन के कम्युनिस्ट और देशभक्त जिन्होंने अपनी जनता को जगा दिया है और लूट और बर्बरता को मिटा दिया है— वे सब कैसे होंगे।

सोचते, सोचते, हॉंगकॉंग—स्टैंडर्ड देखने लगा। पहले ही पन्ने पर टोकियो में विद्यार्थियों पर लाठी वर्षा और गिरफ्तारियों की खबर थी और बगल में ही यूरोप की सुरक्षा के लिए संधि का मसौदा था। दूसरे पन्ने पर पैसिफिक-सुरक्षा के लिए मैंजीज साहब की अमरीका में होने वाली कोशिशों का बयान था। और तीसरे पन्ने पर किसी अमरीकी चीनी का लम्बा बयान था कि "कि चीन में कम्युनिस्ट हर आजादी खतम कर रहे हैं। बयान वाशिंगटन से था। आखिरी पन्ने पर आँखें रुक गईं। "आयरन कर्टेन" का नाम तो बहुत सुना था। हॉंगकॉंग स्टैंडर्ड ने बड़े बड़े अक्षरों में, "बैंबूकर्टेन के पीछे" की कहानियाँ छापी थीं। भूखों पर कम्युनिस्टों की गोलियाँ—३०० मरे"। वगैरह

सम्पादकीय लेख में जापान के बारे में आँसू बहाए गए थे। माँग की गई थी—"जापान को चीन होने से बचाओ।"

साम्राज्यवादी प्रचार मशीन कितनी एकरस है! टाँग ने कहा कि यह सब झूठ है—जैसे हम इसे न समझते हों। मैंने बताया कि चुनावों में प्रगतिशील ताक़तों की जीत से हिन्दुस्तान में भी इसी तरह चिल्लपों मची हुई है।

हम लोग पहुँच गए। कस्टम्स ने यहाँ भी सूटकेस खुलवाया। पासपोर्ट देखा गया। साहब बहादुर न जाने क्या देख रहे थे और मुझे झुलझुलाहट लग रही थी। दस गज का एक छोटा सा पुल, इस पार अंग्रेज सिपाही, और उस पार खाकी वर्दी में मुक्ति सेना के सिपाही बीच में कांटेदार लकड़ी की रोक थी।

आखिर पासपोर्ट मिल गया। हम आगे बढ़े। न जाने कैसा लग रहा था। ऐसी खुशी जो खुद मेरी समझ में न आ रही थी।

पुल के पार होते ही नीली वर्दी में एक ठिगने लेकिन मजबूत नौजवान के गठे हुए हाथ आगे बढ़े- चमकती हुई हँसती आँखें और होठ बोल उठे—"निहा"—टाँग की तरफ देखते हुए इस नौजवान के गले लग गया। टांग ने बताया कि यह पूछ रहे हैं कि "आप कैसे हैं" मैं अभी सुलझ न पाया था कि एक दूसरे नौजवान भाई ने जिसकी वर्दी भी नीली थी—अंग्रेजी में कहा कि यह कैंटन ट्रेड यूनियन के प्रतिनिधि चानहिंग हैं और मेरा नाम जाई वेन है।"

स्टेशन नीचे की तरफ है। ऊँचे-नीचे पतले रास्ते हम लोग सामने की तरफ पहुँचे। स्टेशन क्या है—बांसों और बल्लियों के सहारे बनाया गया बहुत बड़ी पांडाल-नुमा जगह है। फाटक पर माओ की बहुत बड़ी तस्वीर है। भीतर टीका लगाने, पैसा बदलवाने आदि के दफ्तर हैं। जिनमें काम तेजी से हो रहा था। जिस किसी से आंख मिल जाती थी जान पड़ता था वह मुस्करा रही हैं और फौरन ही घूमकर

अपने काम में लग जाती हैं। स्टेशन की बिल्डिंग छोटी है। हम रिसेप्शन रूम में गए। मार्क्स, एँजिल्स, लेनिन, स्तालिन की बड़ी बड़ी तस्वीरें लगी हुई थीं।

यहाँ घड़ियाँ एक घंटे पीछे चलती हैं। अभी टाइम था। हम लोग स्टेशन देखने लगे। स्टालनुमा एक सजी सजाई किताबों की दूकान पास में ही थी। एक चीनी लड़की दूकान पर अपने ग्राहकों को निपटा रही थी। हम भी खड़े हो गए। मैगजीनों के रंग-बिरंगे पन्ने पलटते रहे। जाई ने उसे बताया कि मैं हिन्दुस्तान से आया हूँ। उसका गोल आकर्षक चेहरा खिल उठा। वह "चीनी पिक्टोरियल", "सोवियत यूनियन" का चीनी संस्करण, अंग्रेजी में "चाइना रिकान्स्ट्रक्स" एक एक करके देती जा रही थी। कभी वह खोलकर चीनी भाषा में कुछ कहती—समझाने के से अन्दाज में और हमारे साथी उसका अनुवाद करते जाते।

मैं कुछ हैरान सा था। कल्पना का नया चीन आँखों के सामने था। मैं माओ के देश और उनकी जनता के बीच में था। "चीनी पिक्टोरियल" में छपी माओ की एक रङ्गीन तस्वीर मैं देखता रहा। पृष्ठभूमि में लहराता हुआ सितारों वाला लाल झंडा था।

दुकान वाली लड़की ने मेरी परेशानगी ताड़ते हुए कहा—इसमें से जो अच्छी लगे वह मैं एक मेगजीन ले लूँ। मैं हिचकिचा रहा था। मेरे पास चीनी करेंसी न थी। समझ कर उसने कहा—हिचकिचाइए नहीं, यह मेरी भेंट होगी। मैंने शुक्रिया कहकर वही मेगजीन ले ली।

मेरा नाम नहीं मालूम, वह मुझे नहीं जानती, सिर्फ इतना जानती है कि मैं हिन्दुस्तानी हूँ और चीन का दोस्त हूँ। इतना ही एक दूसरे को अजीज बना देने के लिए काफी है—यही सोचता हुआ मैं चल दिया।

खाना स्टेशन पर ही खाया १३-१४ बरस का एक बच्चा हम लोगों को खाना दे रहा था। अच्छा गठा हुआ बदन, गोल गोरा चेहरा, सतर्क चाल ढाल। खाने के बाद उसे बुलाकर मैंने उसके बारे में पूछा। मालूम हुआ कि वह यहाँ से बहुत दूर का रहने वाला है। उसके माँ या बाप नहीं हैं लेकिन वह यह मानने को तैयार नहीं। उसके कोई नहीं। कहने लगा—अब तो मेरा सब कोई है, काम करता हूँ, पढ़ता हूँ, खेलता हूँ, जहाँ सरकार कहेगी वहाँ काम करूँगा। तीन बरस पहले वह मारा मारा फिरता था। दिन भर में खाने भर को भी न मिलता था। मुझे बहुत प्यारा लगा। उसकी बातें अच्छी लगीं। आँखों के सामने अपने देश के शहरों में होटलों में काम करने वाले बच्चों की तस्वीर घूम गई.........हाँ कभी उनके भी दिन आयेंगे।

गाड़ी पर बिठाल कर टाँग वहाँ से लौट गया। कैंटन यहाँ से ५ घण्टे का सफर है।

× × ×

गाड़ी तेजी से चली जा रही है। लाउड स्पीकर बोल रहा है। फिर मीठी आवाज से गानों की तान होने लगी। बाहर आसमान पर घने काले बादल और पानी में डूबे हुए लहलहाते धान के खेत। मैंने साथी जाई से लाउडस्पीकर के बारे में पूछा। उसने बताया कि यह इसी ट्रेन के रेलवे मजदूर बजाते हैं। इसके जरिये वे यात्रियों को तरह तरह की जरूरी हिदायतें देते हैं— "अब हम आजाद हैं, यह रेलें हमारी हैं, इसलिए इन सबकी सफाई की जिम्मेदारी हमारी है।" "उतरते वक्त अनुशासन से उतरना चाहिए" वगैरह। और सचमुच रेलें बहुत साफ है स्टेशनों पर भीड़ तो होती है लेकिन धक्का-मुक्की नहीं।

ट्रेड यूनियन साथी चान ने बातचीत में हिन्दुस्तान के मजदूरों की हालत पूछी। मैंने अपने यहाँ के और विशेषकर कपड़ा-मजदूरों

की हालत बताई। साथ ही मालिकों और सरकार के रवैये को बताया। और ट्रेड यूनियनें किस तरह काम करती हैं—इस पर भी रोशनी डाली।

चान ने इससे बिल्कुल उल्टा अपने यहाँ का हाल बताया। कैंटन साम्राज्यवाद विरोधी परंपरा का पुराना शहर है। १९२४ में समुद्री मजदूरों की हड़ताल के समर्थन में पूरे कैंटन में विद्रोह-सा हो गया था। ७०० से ज्यादा कैंटनी देशभक्त साम्राज्यवादी गोलियों के शिकार हुए थे। मुक्ति के बाद से पुनर्निर्माण का काम तेजी से हो रहा है। मजदूरों के लिए बड़े बड़े सांस्कृतिक केन्द्र खोले गये हैं। उनके रहने के लिए नए घरों की व्यवस्था हो रही है। चान खुद मजदूर था। उसने गर्व के साथ कहा—अबतो सरकार चलाने में भी मजदूरों और उनकी पार्टी का मुख्य हाथ है।

मैंने हाँगकाँग स्टैंडर्ड की चीन विरोधी कहानियों की बात बताई तो उसका चेहरा लाल हो गया उसके होठ फड़फड़ाये और तेजी से उसने कहा—यह सब झूठ है, सब झूठा है। लेकिन जैसे यह सब मुझे समझाने को काफी न था तो पास में बैठे एक दूसरे अजनबी यात्री ने, जो शायद हमारी बातें सुन रहा था— कहा, "इसका सम्पादक भी वही टाइगर-ब्रांड है।" और दूसरे ने कहा कि यह सफेद चीनी है। "टाइगर-ब्रांड" और "सफेद चीनी', में एक घृणा और बदले की सी भावना थी।

हम चुप थे, बगल के सामने की सीट में एक सुडौल लम्बे गठन का नौजवान बैठा था। वह बार-बार मेरी तरफ देखता— कभी मुसकराता और कभी योंही आँखें फेर लेता। जवाब में कभी-कभी मैं भी मुसकरा देता। थोड़ी देर बाद उसने जाई से कुछ चीनी भाषा में कहा। मेरी उत्सुकता बढ़ी, मैंने पूछा—क्या बात है। जाई ने कहा कि—ये पी० एल० ए० (मुक्ति सेना) के कैप्टन हैं और आपसे

बात करना चाहते हैं। पी० एल० ए०! एक साथ ही दिमाग में उसके बारे में पढ़ी हुई तमाम कहानियाँ याद आ गईं। हिन्दुस्तान से चलते वक्त मूनिस ने लिबरेशन आर्मी की यूनिफार्म भी लाने को कहा था। लिबरेशन आर्मी! और उसका कैप्टन! मैं तो जैसे भूखा ही था। अपनी जगह उठ कर खड़ा ही हुआ था कि वह भी आगे बढ़कर आ गया। उसने हाथ बढ़ाया—हाथ मिले और आगे बढ़कर उसके गले लग गया।

बैठकर मैं अपनी भावुकता को संभाल ही रहा था कि उसने सवाल किया—"तुम्हारे यहाँ पी० एल० ए० है? "मैंने थोड़े में जवाब दिया—"नहीं अभी नहीं" उसकी बातचीत का कुछ ऐसा अन्दाज था, उसकी अच्छी बादल सी काली आंखों में कुछ ऐसी चमक थी कि मै जितना ही उसकी तरफ देखता वह प्यारा लगता और उसके ओंठ मुस्कराते हुए। उसकी उम्र कोई ४० साल की होगी। हिन्दुस्तान के मजदूरों और किसानों की हालत के बारे में कैप्टम ने कई सवाल किए। मैंने काफी तफसील में उसे यहाँ के हालात बताए। आंध्र, मलाबार, बंगाल के किसान आंदोलन, तैलंगाना के किसान संघर्षों की बहादुराना कहानियाँ, पुलिस और फ़ौजी जुल्मों की तस्वीरें बताई। कैप्टन ध्यान से सुनता रहा। उसने कहा कि "हम अपने मजदूरों किसानों के सहयोग और उनकी वर्ग-चेतना को गहरा करने पर बहुत जोर देते हैं। हमारी मुक्ति सेना मुक्ति सेना, तो है ही लेकिन वह एक महान राजनैतिक स्कूल है। मुक्ति सेना, चेयरमैन माओ की राजनैतिक और सामाजिक विचारधारा की प्रतीक है।"

कैप्टन का नाम ली ची च्यान था। मुक्ति-सेना में वह १६३७ में आया। इससे पहले वह एक ग़रीब किसान का बेटा था। मुक्ति-सेना में वह क्यों शामिल हुआ? उसका जवाब बहुत छोटा था—"ग़रीब किसान का बेटा...गांव के जमींदार के जुल्म असहनीय हो गए...

एक दिन मेरे पिता की इसी तरह मृत्यु हो गई। मैं बदला लेना चाहता था। उसी वक्त देश पर जापानियों ने भी धावा कर रखा था। जुल्मी जमीदारों से बदला लेने के लिए और देश की रक्षा के लिए।" यही उसका जबाब था।

कैंटन नजदीक आ रहा था। बाहर आसमान पर बादल थे! हल्की फुहार पड़ रही थी। नए धान की फसल उग आई थी। हवा के ठंडे झोंके उन्हें खिलाते, बहलाते और मनाते से लग रहे थे। काफी दूर तक ऊँची नीची पहाड़ियों की कतारें दूर तक चली गई थीं। पानी, हरियाली, ठंडी हवा—समा बहुत अच्छा था, चेहरे चीनी थे और यहाँ की आजादी भी अपनी माउंटबैटन आजादी से भिन्न थी—बाकी सब देखने में हिन्दुस्तान सा लगता था।

वह सामने कैंटन से कुछ दूर सनयातसेन यूनीवर्सिटी है। यह उन्हीं की याद में है। कैंटन डा० सनयात सेन की राजनैतिक कार्यवाहियों का पहला केन्द्र था।

कैंटन भी आ गया। अभी पूरी तरह संभल भी न पाया था, कि कई भाई उसी परिचित नीली वर्दी में डिब्बे में आ गए। जाई ने उनमें से एक से परिचय कराते हुए कहा—चाँग हुआ-कैंटन ट्रान्सपोर्ट यूनियन के सभापति।

जैसे ही बाहर आया तो तालियों की गड़गड़ाहट ने स्वागत किया। मुझे अकेले को इतने आदमी लेने आये इस पर मैं सोच ही रहा था कि एक लड़की हाथों में गुलदस्ता लिए आगे बढ़ी। गुलदस्ता लेते ही उसके हाथ आगे बढ़े। मैं अपना हाथ दे भी न पाया था कि जाई ने शुरू किया—"लिन चियांग येन—क्वांतुँग प्रान्तीय ट्रेडयूनियन के डाइरेक्टर, "वाँग बिंगवी कैंटन जनरल ट्रेड यूनियन के डाइरेक्टर, चाँग लिंग हिन क्वांतुँग प्रान्तीय ट्रेड यूनियन के प्रधान मन्त्री...।"

एक-एक से हाथ मिलाता, कुछ हकबकाया सा मैं जाई, चान और लिन चियाँग के साथ आगे बढ़ता गया। पीछे तालियाँ पिटती रहीं।

बाहर कारें खड़ी थीं। होटल में पहुँचाये गये। नं० ४० ५। शानदार कमरे थे। आगे वाले कमरे में कुर्सियाँ, मेजें, सोफे और पंखा, बगल वाले कमरे में दो गद्देदार पलँग जो खूबसूरत कढ़े हुए चद्दरों से ढके थे। बाथ-रूम—गरम पानी से टब भरा हुआ, ब्रश, पेस्ट, चार-चार तौलियाँ, कंघा, वैसलीन............।

लौटकर देखा तो लिन चियाँग और हुआ रास्ता देख रहे थे। नीचे उतरकर बड़े हाल में गये। वहीं खाना हुआ। यहाँ बातचीत में मालूम हुआ—पहले यह बहुत बड़ा होटल था लेकिन अब यह प्रान्तीय ट्रेड यूनियन कांग्रेस का अतिथि गृह है।

दुभाषिये की मदद से लिन चियाँग ने पूछा—हिन्दुस्तान के मजदूरों का लिविंग-स्टैण्डर्ड कैसा है? क्या जवाब देता? ऐसा-वैसा जवाब देता तो हमारे नेहरू जी कहते कि हिन्दुस्तानी बाहर जाते हैं और देश को बदनाम करते हैं। तो भी मैंने कहा—हमारे यहाँ तो अभी "लिविंग" (जिंदा रहना भी मुश्किल) भी नहीं "स्टैण्डर्ड" कैसा? कानपुर के कपड़ा मजदूरों की आमदनी और खर्च का औसत बताया किस तरह लड़ाई और लड़ाई के बाद के जमाने में मँहगाई बढ़कर ५ गुना और ६ गुना हो गई है। कैसे कानपुर के बड़े-बड़े मालिकों ने ब्लैक और लड़ाई के आर्डरों के जरिये करोड़ों रुपये लूटे हैं। बेकारी किस तेजी से बढ़ रही है। यह भी मैंने बताया। फिर ऊपर से सरकार का मालिकों की तरफदारी लेना, ट्रेड यूनियनों और उनके नेताओं को गैर कानूनी करना और जेलों में डालना वगैरह की कहानियाँ भी बताता रहा।

खाना कई तरह का और लजीज था। लिन चियाँग ने गम्भीरता से बातें सुनी। डील डौल और देखने में वह बिल्कुल कामरेड डांगे की तरह लगते थे। उन्होंने कहा—हिन्दुस्तान की मुश्किलें जल्दी से आसान होंगी। आप जरूर कामयाब होंगे। यह हमारा सौभाग्य है कि आपका ट्रेड यूनियन डैलीगेशन हमारे देश में आया है। हम आपका स्वागत करते हैं।

बात आगे बढ़ी, मैंने पूछा—मुक्ति से पहले, कोमितांग के जमाने में मजदूरों का संगठन कैसे करते थे? मजदूरों के बीच प्रचार के कौन-कौन ढंग थे? उनकी राजनैतिक चेतना को बढ़ाने के लिए क्या करते थे?

लिन चियाँग ने अपने अनुभवों को बताते हुए कहा—कोमितांग के जमाने में ट्रेड यूनियन आंदोलन चलाना बहुत ही मुश्किल था। हम लोगों को अपने को गुप्त रखकर काम चलाने पड़ते थे। हम मजदूरों की आर्थिक मांगों पर, आर्थिक लड़ाइयों पर बहुधा जोर देते थे, मुख्य बात यह थी कि मजदूरों की आर्थिक दशा को थोड़ा सा भी सुधारने के लिए लड़ना और इस तरह लड़ना कि उसमें जीत हो—यही आगे बढ़ने का रास्ता था। हारना—उन हालात में बहुत पस्ती लाता था। और छोटी सी भी जीत आन्दोलन को आगे बढ़ाती थी।

नेतृत्व के मुख्य अंग को खुलने न देना, उसकी कन्टीन्युटी (लगातार पन) को बनाए रखना बहुत ही जरूरी सिद्धान्त था। अनुभवी और विश्वास पात्र नेतृत्व को कोमितांग पुलिस से बचाना, बढ़े हुए कार्य-कर्त्ताओं को सुरक्षित रखना, फैक्टरियों की दुश्मनों से रक्षा करना, गांवों में चलने वाले किसान-संघर्षों को हर तरह से बल देना—हमारा काम था और यह हमने कामयाबी से किया।

कभी-कभी सुरक्षा के लिए हम अच्छे कार्यकर्ताओं को दूसरे शहरों में और कभी दूर गांवों में भेज देते थे।

हम लोग अपने इन तमाम कामों की सुरक्षा और कामयाबी के लिए कानूनी और खुले संगठनों में काम करते थे.......... ।

खाना खतम हो चुका था और हम बातें करते जा रहे थे। इतने में लिन चियाँग के लिए टेलीफोन आया और वह माफी माँग कर चले गये।

आज ही रात में ११॥ बजे हैंकाऊं के लिए चलना है। चलने से थोड़ा पहले जाई आए और अपने साथ एक और साथी को लाए। "ये हवांग हैं और आपकी मदद के लिए हैंकाऊं तक जायेंगे।"

कार से हम लोग स्टेशन गए फिर रात में इतनी देर बीते भी लोगों की कतारें बिदा करने के लिए तालियाँ पीट रहीं थीं। सब लोग गाड़ी तक आए। ४-५ घंटे में ही सबसे इतनी घनिष्टता हो गई थी कि "बिदा" अच्छी न लगती थी। अब तक मैं ने चाइजेन (अलविदा) कहना सीख लिया था।

चाइजेन कैंटन ! चाइजेन !

११ मई

कैंटन हैंकाऊ ट्रेन पर

सबेरे बहुत तीखी ठंडी हवा ने नींद खोल दी। आखें खुली तो बड़ा सुहावना दृश्य। ऊँचे-नीचे पहाड़ों की दूर तक, कहीं-कहीं आसमान को चूमने वाली लंबी कतार, आकर्षक हरियाली से ढका हुआ हर हिस्सा। हमारी गाड़ी तेजी से चली जा रही थी। यहाँ भी आसमान कहीं काले गहरे, कहीं हलके बादलों से ढका हुआ था। कभी फुहार पड़ती और कभी खुल जाती। गाड़ी से पास ही हवा में हिलकोरे भरती, पहाड़ों को चीरती-लाँघती वू नदी बह रही थी। हम क्वाँतुँग छोड़कर चेयरमैन माओ के सूबे होनान से गुजर रहे थे। मौसम बदल चुका था। पुलओवर पहनना पड़ा। शाम तक हम चाँगशा पहुँच जायेंगे और सबेरे हैंकाऊँ।

× × ×

आज का दिन और रात गाड़ी पर ही बीता। चान हमारे साथ ही था। उसने हिन्दुस्तान के किसान आंदोलन के बारे में कई सवाल किए। उनके जवाब में मैंने उसे काफ़ी तफसील में एक कागज पर हिन्दुस्तान का नकशा बनाकर हिन्दुस्तान के किसानों की आर्थिक सामाजिक और राजनैतिक हालत बताई। दक्षिण के सूबों में, बम्बई और गुजरात में, बंगाल में, बिहार उत्तर-प्रदेश और पंजाब में, राजपूताना और बिन्ध्य-प्रदेश में सामंती शोषण के अलग-अलग रूप और उनके खिलाफ विशेषकर लड़ाई के बाद उठने वाले किसान-आंदोलनों का विकास बताया। पिछले ३-४ सालों में कृषि सुधार के नाम पर, जमीदारी के खातमे के नाम पर की कॉंग्रेस सरकार की भूलभुलैया और साथ ही लड़ाकू किसान आंदोलनों को जेलों और

गोलियों से दबा देने की कोशिश। विशेषकर तैलंगाना के किसानों पर किए गए अत्याचारों की कहानी मैंने बताई।

मुक्ति-सेना का कैप्टन भी इसी गाड़ी से सफ़र कर रहा था। न जाने कब वह चुपके से आकर बैठ गया और मेरी बातें सुनता रहा। उसे एक बार फिर अपने पास पाकर मैं बहुत खुश हुआ। अपनी बात ख़त्म करके मैंने कैप्टन से कहा कि वह कुछ अपने अनुभव बताए।

भाषा की दिक्कत के कारण पहले तो वह कुछ असमंजस में पड़ा। लेकिन फिर उसने बताया।

मुख्य बात जनता की राजनैतिक चेतना है। और किस हद तक आम मेहनतकश लोग राज करने वालों को घृणा करने लग गए हैं— यही राजनैतिक चेतना आँकने की कसौटी है। सामाजिक हालत को बदल डालने की चेतना और राज करने वालों के प्रति गहरी घृणा— ये दोनों ही बातें हमारी मुक्ति-सेना की प्रगति में बहुत बड़ी सहायक रही हैं। इसके साथ ही योग्य नेतृत्व भी कामयाबी की बड़ी जरूरी शर्त है। मिसाल के तौर पर उसने मुक्ति-सेना के एक राष्ट्रीय वीर ली यू टिंग की कहानी बताई :—

ली ने मुक्ति सेना में पहले-पहल १६४८ में नाम लिखाया। इससे पहले ली एक बहुत ही गरीब किसान का बेटा था। अपने परिवार का पेट भरने के लिए उसे अपने गाँव के जमीदार की गुलामी करनी पड़ती थी। कमरतोड़ मसक्कत तो थी ही, साथ में जमीदार की गालियां और मारपीट थी। कभी-कभी तो जमीदार ली को इतना मारता इतना मारता कि वह बेहोश हो जाता और इसी हालत में घंटों पड़ा रहता। जमीदार मरा समझकर उसे छोड़ देता।

ली ने इस जमीदार से बदला लेने के लिए ही अपना नाम मुक्ति सेना में लिखाया। अपनी पुरानी जिन्दगी की याद आते ही ली काँप उठता था।

हमारे बीच में ली अपनी व्यक्तिगत वीरता के लिए मशहूर है।

मुक्ति-सेना में नाम लिखाने के बाद उसे १५ दिन की राजनैतिक शिक्षा दी गई और तब उसे युनिफार्म।

पहले ही मोर्चे में ली ने दुश्मन के खिलाफ अकेले ही बहुत बहादुरी दिखाई। दक्षिणी-पूर्वी-चीन में, हमारी तरफ ३०० सिपाही थे और दुश्मन के ८००० से ऊपर। ली एक एडवांस टुकड़ी में था। उसका काम था अपने पिछले मुख्य दस्तों के लिए रास्ता साफ करना। ली आगे बढ़कर बहुत तेजी और बहादुरी से दुश्मनों की लाइन में घुस गया। यह सब इतनी तेजी से हुआ कि दुश्मन की समझ में ही न आया कि क्या हो रहा है पहुँचते ही उसने अफसरों को अपनी गोलियों का निशाना बनाना शुरू किया। अफसरों के गिरते ही दुश्मन-फौजों के पैर उखड़ने लगे। उनका मनोबल टूटने लगा। इतने में बाकी दस्ते भी आ धमके। और हम आसानी से दुश्मनों को हथियार डालने में कामयाब हो गए—हमारा कैप्टन काफ़ी आवेश में ली की तारीफ़ करता जा रहा था। उसका चेहरा लाल था और उसकी आंखें चमक रहीं थीं। इस कम्बैट में जीतने का मुख्य श्रेय ली को है"—कैप्टन ने कहा।

इसके बाद ली की बुद्धि और बहादुरी की बड़ी तारीफ हुई। उसे एक टुकड़ी का लीडर बना दिया गया—यहाँ पर उसने जोर दिया—सिर्फ ली की व्यक्तिगत बहादुरी ने ही नहीं बल्कि हमारे कमाँड के नेतृत्व की काबिलियत ने भी ली को और अच्छा सिपाही बनाने में मदद दी। मुक्ति-सेना की दृढ़ता उसके मेम्बरों की ऊँचे दरजे की राजनैतिक और वर्ग-बेदारी का नतीजा है। मुक्ति-सेना की कामयाबी उसके नेतृत्व की कामयाबी है। बिना तीव्र राजनैतिक बेदारी के पी० एल० ए० की कल्पना मूर्खता है— कैप्टन ने अपनी बात खतम की।

मुक्ति सेना के सिपाहियों की राजनैतिक चेतना के बारे में मैंने पढ़ा जरूर था लेकिन अपने कैप्टन के विचारों की सुस्पष्टता और उनकी सरल विवेचना से मैं सचमुच दंग था। मन ही मन मैंने चेयरमैन माओ को कारीगरी को माथा नवाया। मैं सोचता रहा—चीन की मुक्ति-सेना, कोरिया की देश भक्त फौजें, वियतनाम की मुक्ति-फौज, मलाया के देशभक्त छापेमार—इनमें हथियारों की सुपीरियारिटी उतनी नहीं जितनी विचारों की है। साम्राज्यवादी हथियारों से लैस हैं। उनके पास डालरों के पहाड़ हैं—लेकिन उनके किराये के टट्टुओं के पास हमारे कैप्टन जैसे एशिया के करोड़ों इन्सानों के नये विचार नहीं। उनके पास कीटाणु-युद्ध की सड़ाँध-भरी विचारधारा है। उनके पास गुलामी, तबाही और बरबादी का संदेश है। साम्राज्यवाद से मुक्ति के, सामन्ती शोषण से किसान को जीवनदान देने के, इन्सान के नवनिर्माण और शांति के ये विचार अजेय हैं......। कैप्टन सच कहता है "मुक्ति-सेना महान राजनैतिक स्कूल है.........। बिना तीव्र राजनैतिक बेदारी के मुक्ति-सेना की कल्पना मूर्खता है.........।

---

१२ मई

हैंकाऊ में।

सबेरा हुआ ही था कि हम हैंकाऊ पहुँच गए। गाड़ी रुकते ही डिब्बे में वही नीली वर्दी वाले एक लम्बे अच्छे बदन के भाई आ पहुँचे। हवाँग ने उनका परिचय कराया। "कामरेड माई" वुहान ट्रेड यूनियन के प्रतिनिधि। जो हैंकाऊ से स्टीमर बोट के द्वारा मुझे लेने आये हैं।

प्लेटफार्म से निकल कर बाहर आए। मोटर ने हमें एक नदी के किनारे पहुँचा दिया जो स्टेशन से ५–७ मिनट का रास्ता है, सामने एक बहुत बड़ी नदी और उस पर तैरती हुई बड़ी बड़ी नावें और स्टीम शिप, हवाँग ने बताया—यह याँगत्सी है। हम लोग स्टीम बोट से उस पार जायेंगे। हवान नदी के बाएँ ओर हैंकाऊ और दाहिनी ओर हानयान नगर बसे हैं। हान यहीं पर याँगत्सी से मिलती है। जहाँ हम हैं उसे वुचाँग कहते हैं। वुचाँग हैंकाऊ और हानयान तीनों को मिलाकर वुहान कहा जाता है। यह हुपे प्राँत की राजधानी है।

हवाँग, चान, माई और मैं स्टीम बोट पर सवार हुए। कैंटन की गरमी यहाँ नहीं थी। बोट की छत पर सीधी आनेवाली ठंडी हवा तीर की तरह लग रही थी। याँगत्सी का पाट बहुत चौड़ा है। दूर किनारे पर हैंकाऊ और हानयान के घरों पर लगे हुए लाल झंडे हवा में फहरा रहे हैं।

१० मिनट के भीतर ही हम उस पार पहुँच गए। किनारे पर वुहान ट्रेड यूनियन के चेयरमन कामरेड चाऊ मिन, वुहान ट्रेड यूनियन के संगठन विभाग के डायरेक्टर ली याँग, उत्पादन-विभाग के डायरेक्टर जाऊ ची चेन मौजूद थे। इन्हीं के साथ हम एक बड़े होटल में गए। मालूम हुआ कि ये ट्रेड यूनियन का अतिथिगृह है।

इन साथियों ने चाय पर बातें करते हुए हिन्दुस्तान के मजदूरों और मजदूर-आँदोलन के बारे में कई सवाल किए।

मैंने अंग्रेजों के सीधे राज के जमाने के मजदूर-आँदोलन, और लड़ाई के फ़ौरन बाद होने वाले मजदूरों के देशव्यापी हड़ताल-संघर्षों का जिक्र किया और फिर १५ अगस्त और उसके बाद के आर्थिक, राजनैतिक हमलों की भी तस्वीर बताई।

आखिर में मैंने कहा—हम हिन्दुस्तान के ट्रेड यूनियन कार्यकर्ता अपने चीनी साथियों से उनके ट्रेड यूनियन आँदोलन के तजुर्बों को सुनने और सीखने के लिए बहुत उत्सुक हैं। अच्छा हो कि आप में से जो मुक्ति से पहले वुहान में ट्रेड यूनियन काम के संचालक रहे हों, वह मुझे कुछ अपने तजुर्बे बताएँ।

लेकिन मुझे निराश होना पड़ा। क्योंकि चाऊ मिन, ली याँग, और चाऊ ची चेन कुमिंताँग-शासन के वक्त वुहान में नहीं थे। वे इस मौक़े पर शाँसी आदि किसान इलाकों में किसानों के संघर्षों का नेतृत्व कर रहे थे। बहुत नम्रता से चाऊ मिन ने कहा—आपको शँघाई, पेकिंग आदि में इस विषय पर अधिक ज्ञान प्राप्त हो सकेगा।

फिर शाम को मिलने का वायदा करके ये साथी चले गए।

खाने के बाद माई, हवाँग और दो-तीन साथी "सीमेन्स क्लब"—जहाजी मजदूरों का क्लब—देखने गए। रास्ते में मैंने एक जगह मोटर रुकवा कर थोड़ा पैदल चलने की प्रार्थना की। टहलते हुए हवाँग की मदद से दो-एक नागरिकों से बातचीत हुई। मेरा मुख्य सवाल होता था—मुक्ति के बाद आपको क्या मिला? मुझे जवाब मिला—कुमिंताँग के राज में हम तबाह होते जा रहे थे, अब हम अपना भाग्य-निर्माण खुद कर रहे हैं। चीजें सस्ती हो गई हैं।

दिन भर की कमाई से खाने-पीने के बाद इतना बच जाता है कि कपड़े-लत्ते खरीद सकें, बच्चों को पढ़ा सकें और कुछ मजे कर सकें।

हैंकाऊ में रिक्शा देखने को मिले। कानपुर में भी ये रिक्शा हमेशा परेशानी पैदा कर देते हैं। इतनी ज़्यादा मशक्कत के बाद भी इतनी कम मजदूरी में बहुत कम इन्सान जीते हैं। फिर मालिकों और पुलिस की गालियाँ और धौंस! मुक्ति के बाद के चीन में रिक्शा मेरे लिए ताज्जुब की बात थी।

एक स्टैंड के पास मैंने खाली रिक्शा वालों से पूछा—मुक्ति के बाद तुम्हें क्या मिला? अब जिंदगी कैसी है?

मेरे सवाल पर वे मुस्करा दिए। उनमें से एक ने कहा "मुक्ति के बाद हमें कुमिंताँग-पुलिस से राहत मिल गई है। दिन भर की गालियाँ, धाँधागर्दी और अक्सर दिन भर की कमाई "पूजा" के लिए देना खतम हो गया। मुक्ति से पहले अकेला पेट भरना दूभर था। बीवी-बच्चे भूखों मरते थे। अब सरकार की तरफ से पैसेंजरों का ही नहीं। मालिकों के भाड़े का भी रेट तै हो गया है। ट्रेडयूनियनों की मदद से इन्हें लागू किया गया है। अब तो इतना मिल जाता है कि न सिर्फ पेट भर लेते हैं बल्कि कुछ बचा भी लेते हैं। कुछ दिन हुए मैंने यह रिक्शा खरीद लिया है। यह मेरा हो गया है।"

जिस लहजे और आत्म-विश्वास से यह रिक्शावाला भाई बोल रहा था उससे इस बात का विश्वास तो हो गया कि हालत पहले से बहुत अच्छी है।

लेकिन अभी मुझे इस बात को स्पष्ट कराना है कि आखिर रिक्शा बन्द क्यों नहीं कर दी जातीं! अब पेकिंग या शंघाई में ही इसका उत्तर मिल सकेगा।

× × ×

मजदूरों का साँस्कृतिक केन्द्र

शहर के बीच में एक बहुत बड़ा पार्क बाँस की बनी हुई खूबसूरत टट्टियों से घिरा हुआ। अच्छे सुहाने रंग-बिरंगे फूलों की क्यारियाँ बीच-बीच में घनी झाड़ियाँ जो फूलों से लदी हुई हैं। कहीं-कहीं युवक और युवतियाँ बैठे बातें कर रहीं हैं। कहीं कोई किताब लिए पढ़ रहा है। उत्तर-पूर्व की तरफ़ एक बड़ा कमरा बन रहा है। दक्षिण-पूर्व को ओर दो ऊँचे चबूतरों पर छतें ढकी हैं और नीचे कुर्सियाँ-मेजें लगी हैं। कोई ताश और कोई शतरंज खेल रहा है। बीच में खुला हुआ थियेटर का स्टेज है।

यहाँ पर इस वक्त किंडर गार्टेन के छोटे-छोटे बच्चे अपनी टीचरों के साथ आए हुए हैं। हमारे आते ही एक मास्टरनी ने सीटी बजाई। ४०-५० बच्चे रंग रंगीले कपड़े पहिने उछलते-कूदते इकट्ठा हो गए। मास्टरनी ने चीनी भाषा में कुछ कहा और बच्चे तालियाँ पीट-पीट कर मुझे घेरने लगे। कुछ शरमा रहे थे, कुछ जो निडर से थे, अपने छोटे-छोटे हाथ आगे बढ़ा रहे थे—हाथ मिलाने के लिए। फिर सबने मिलकर "माओ जे तुँग" का गाना गाया और "शाँति जिन्दाबाद" के नारे लगाए। बच्चे वैसे भी बहुत प्यारे लगते हैं—फिर ये तो अच्छी देख-रेख में पलने वाले स्वस्थ खूबसूरत........

दरवाजे पर बना हुआ दफ़्तर अच्छी तरह सजा हुआ है। यहाँ माडेल मजदूरों, चीनी स्वयंसेवकों आदि के फोटो लगे हुए हैं।

यहाँ मा-ई से काफी देर तक उनके अपने ट्रेड यूनियन आँदोलन सम्बन्धी तजुर्बों पर बात होती रही। मा-ई १६४८ में बुहान आए थे। एक साल अंडर-ग्राउंड रहकर उन्होंने पार्टी और ट्रेड यूनियन-काम का संचालन किया था।

जहाजी मजदूरों का क्लब

जहाँ सबेरे यॉग्त्सी के किनारे उतरे थे—उसी के सामने एक आलीशान भवन है। यह जहाजी मजदूरों का क्लब है।

क्लब के ऊपरी हिस्से में एक बहुत बड़ा हाल है जिसमें मार्क्स, एंजिल्स, लेनिन, स्तालिन, माओ जे तुँग, चूते, चाऊ इन लाई, लिऊ शाउची जैसे महान मजदूर नेताओं की बड़ी-बड़ी तस्वीरें हैं। सामने ही लंगर और लाल-सितारे लाल रोशनी में चमक रहे हैं। जहाजी मजदूरों की ट्रेड यूनियन का यही निशान है।

एक बड़े कमरे में मजदूरों की शिक्षा के लिए जहाजरानी से सम्बन्धित बड़ा पुस्तकालय है। यहाँ पर उनकी ट्रेनिंग के लिए अनेक प्रकार की गाँठें (Knots) प्रदर्शनी के लिए रक्खी हुई हैं।

दूसरे बड़े कमरे में तमाम तरह की देशी और विदेशी मैगजीनें रक्खी हुई हैं।

इसी से मिला हुआ सिनेमा भवन है जिसमें ६६५ सीटें हैं। मजदूरों और उनके परिवारों के लिए आधी कीमत पर सिनेमा दिखाया जाता है। मंच की एक ओर गोर्की और दूसरी ओर लूजिन (चीन के महान लेखक) के चित्र लगे हुए हैं।

हम बहुत देर तक घूम-घूम कर मजदूरों के लिए की गई इन सुविधाओं को देखते रहे। क्लब के डाइरेक्टर साथी हमें एक-एक चीज दिखाते और समझाते रहे।

× ×

शाम को स्वागत-कमेटी के मित्रों ने बताया है कि अब मुझे पेकिंग नहीं जाना है। कामरेड यूसुफ अंतर्राष्ट्रीय ट्रेड यूनियन डेलीगेशन के साथ पेकिंग से मुकडन के लिए चल चुके हैं। मुझे नानकिंग पहुँच कर उनसे मिलना है।

सबेरे नानकिंग के लिए स्टीमशिप से रवाना होना है। २ दिन दो रात स्टीमशिप पर ही बीतेंगे।

१४ मई

यॉंग्त्सी की गोद में

कल जब हम सबेरे चले तो ली यॉंग हमारे साथ थे। चाऊ मिन पहले से ही यॉंग्त्सी पर हमारी राह देख रहे थे।

स्टीमरशिप पर सफ़र का यह पहला तजुर्बा था। ह्वॉंग मेरे साथ रहेगा।

ठीक ८ बजे जहाज ने किनारा छोड़ा। चाऊ मिन, ली यॉंग, मा ई और दूसरे साथी अपनी टोपियाँ उड़ाते तब तक खड़े रहे जब तक हमारा जहाज उनकी आँखों से ओझल न हो गया।

एक अजीब अपनापन और आकर्षण है इन साथियों के तमाम व्यवहार में। हैंकाऊ छोड़ते हुए मेरा भावुक मन भर आया। थोड़ी देर तो हैंकाऊ छोड़ना बहुत बुरा लगा—लेकिन फिर नानकिंग, शँघाई, पेकिंग आदि देखने की आशा तेज होती गई।

हमारा जहाज छोटी-मोटी बस्ती है—जो चलती-फिरती है। चेहरे नए आते जाते हैं, बदलते जाते हैं, लेकिन इन सबकी जिन्दगी की जिन्दादिली, खुशहाली, नयापन नई बनी रहती है।

हम लोग ऊपर के एक कमरे में थे। कल रात में ६ बजे के क़रीब बड़े हाल में इस जहाज पर काम करने वाले तमाम इकट्ठा हुआ। पूरा हाल भरा हुआ था। पहले औरतों और मर्दों ने मिलकर जोशीले गाने गाए। फिर रात १ बजे तक उनकी मीटिंग चलती रही। ह्वॉंग ने बताया कि मुक्ति से पहले मजदूरों के लिए इस तरह मीटिंग

करना, अपनी सामूहिक जिंदगी बनाए रखना नामुमकिन था। ये जहाज प्राइवेट कम्पनी का है लेकिन मजदूरों की लगन और व्यवहार से ऐसा लगता है, जैसे यह अपना ही हो। मुक्ति के बाद मजदूरों की जिंदगी में जबर्दस्त तबदीली आ गई है।

× × ×

आज सवेरे जब क़रीब-क़रीब सभी लोग सो रहे थे। मैं कमरे से बाहर निकल कर छत पर आ गया। याँग्त्सी पहाड़ों के बीच से गुज़र रही थी। हवा बहुत ठंडी है। जहाज की चाल के कारण उसका तीखापन और भी गहरा है। किनारे पर, दूर, चारों तरफ़ हरियाली और पहाड़ों की ऊँची-नीची दोहरी-तेहरी कतारें—क्षितिज को छूने वाली कोई-कोई चोटियाँ नीले आकाश पर उड़ने वाले टेढ़े-मेढ़े काले बादल की तरह लग रही हैं।

याँग्त्सी की मस्त ऊँची उठने वाली लहरें जैसे किनारे की पहाड़ियों को ताना दे रही हों और वे खिसियायी, निष्प्रभ सी खड़ी देख रहीं थीं—कल्पना बहुत पीछे चली गई। हजारों साल पहले याँग्त्सी के जन्म के महान प्रयास के पहले क्षणों में इन पहाड़ों ने क्या न किया होगा। एक-एक करके सभी ने, इन सब में बलशाली ने भी तो याँग्त्सी को रोकने की कोशिश की है। लेकिन कहीं पत्थरों को काटती हुई, कहीं कतराती हुई, याँग्त्सी बहती रही, बहती रही और अपनी मंजिल तक पहुँच ही गई।

चीन की गति, जनता के महान प्रयास को रोकने के लिए अँग्रेज, जापानी, अमरीकी साम्राज्यवादियों ने, च्यॉंग जैसे प्रतिक्राँतिवादी और गद्दारों ने इस प्रगति को रोकने के लिए क्या नहीं किया। अपनी मंजिल तक पहुँचने के लिए चीनी जनता को शायद उससे ज़्यादा रक्त देना पड़ा होगा जितना याँग्त्सी अपनी जिन्दगी में समुद्र को दे पाई

होगी—लेकिन हथियारों और डालरों के पहाड़ चीनी जनता की गति को न बदल सके, न रोक सके, न मिटा सके। इस कोशिश में वे मिट गए और आज कुछ निष्प्रभ से खड़े हैं और कुछ ऐटमी और कीटाणु हथियारों से उसे रोकना चाहते हैं—

लेकिन जब ये पहाड़ याँग्त्सी को नहीं रोक सके तो डालरी दानव चीनी जनता को कैसे रोक सकते हैं……।

बहुत देर तक अकेले खड़े-खड़े यही और न जाने क्या-क्या सोचता रहा। सबेरे के सूरज की लाल, पीली और सफ़ेद होने वाली किरणें फूट गई हैं—एक बड़े पहाड़ की चोटी सामने है लेकिन कितनी देर तक। सूरज की रोशनी सच्ची है—पहाड़ की चोटी बहुत देर तक उसे छिपा नहीं सकती……।

१५ मई

नानकिंग में

हमारा जहाज सबेरे ६ बजे नानकिंग पहुँच गया। हवाँग के साथ किनारे पर आए। यहाँ नानकिंग ट्रेड यूनियन के साँस्कृतिक और शिक्षा विभाग के संचालक साथी वाँग, नानकिंग ट्रेड यूनियन के उप-प्रधान साथी पेंग चुआन, नानकिंग म्युनिस्पल सरकार की स्वागत कमेटी के साथी माओ यू ई पहले से ही मौजूद थे। साथी हवाँग की जगह लेने के लिए नानकिंग यूनीवर्सिटी के अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति के प्रोफेसर ली लियाँ भी मौजूद थे।

हम ट्रेड यूनियन के अतिथि-गृह पहुँचे। रास्ते में मालुम हुआ कि ट्रेड यूनियन डेलीगेशन कल जा चुका है और मैं २४ घंटे लेट पहुँचा। क़ाफ़ी निराशा हुई। स्वागत कमेटी के साथियों ने राय दी कि मैं दो दिन नानकिंग ठहर कर डेलीगेशन के दूसरे साथियों को याँग्चू में पकड़ूँ। तब तक वे लोग हुआई नदी से लौटेंगे।

× × ×

राष्ट्रीय आजायबघर

६ बजे हम लोग नानकिंग का राष्ट्रीय अजायबघर देखने गए। साथी वाँग हमारे साथ थे।

पूर्व की ओर ऊँची पहाड़ियों की पृष्ठभूमि है और नीचे सड़क की बाईं तरफ़ एक बहुत बड़ा भवन है। बाहर से देखने में अधबना मालुम होता है क्योंकि अभी काम लगा हुआ है। सीढ़ियों के पास अजायबघर की संचालिका चेंग चाऊ ची मौजूद थीं। परिचय के बाद वह हमें

अपना अजायबघर दिखाने ले गईं। वह खुद अँग्रेजी बोल और समझ सकती हैं—इसलिए चीजों के समझने में आसानी हुई।

बाहर से जैसा ऊबड़-खाबड़ मालुम होता था। भीतर उतना ही सजा हुआ और साफ़-सुथरा। बहुत बड़े दरवाजे के भीतर घुसते ही हाल में एक बहुत बड़ा हवनकुँड की तरह का बर्तन था जो ३००० साल पुराना था। फिर पेकिंग के ५ लाख साल पुराने बंदरनुमा आदमी की एक मूर्ति थी।

अजायब-घर में बड़े ही करीने और समझदारी से पूरे देश से इकट्ठा किया गया तरह तरह का सामान था जो चीन के सामाजिक साँस्कृतिक विकास का सच्चा क्रम बताता था। पाषाण-युग से पहले के औजार, ४५०० साल पहले के खूबसूरत मिट्टी के बर्तन, पाषाण-युग के बने हुए चाकू, तीर, भाले, बैल और शेर, हड्डियों में लिखे गये लेख, सीपियों के सिक्के, बाजे, लौह-युग के तीर और हथियार, घर, ईंटे, अँगीठी, दसवीं-ग्यारहवीं सदी के खूबसूरत मिट्टी के बर्तन, बुद्ध-सभ्यता के पुराने लेख, सँस्कृत के लेख, मंचु-वंश की कारीगरी की चीजें, पेकिंग के राजमहलों के माडेल, सभी बड़ी-बड़ी शीशे की आलमारियों में सुरक्षित थे।

आजायबघर चीनी सभ्यता के विकास के पूरे क्रम का इतिहास और जीवित प्रदर्शन है।

चेंग चाऊ ची एक एक हाल में हमारे साथ जातीं और हमें समझातीं। उन्हें यहाँ सुरक्षित हजारों चीजों के नाम, उनकी तारीखें और इतिहास अच्छी तरह याद हैं। क़रीब २॥ घंटे बाद हम लोग ची को धन्यवाद देकर विदा हुए।

× × ×

मज़दूरों का सांस्कृतिक महल

हम दो बजे मजदूरों का साँस्कृतिक-महल देखने गए। अपने लिए इस महल की कल्पना बिल्कुल नई थी। साथियों ने बातचीत के दौरान में मुक्ति के बाद इस तरह के महलों की स्थापना की बात बताई थी। कुछ पढ़ा भी था। लेकिन सजीव शकल में ऐसे स्थान की कल्पना भी न थी। आम मेहनतकशों की रोजमर्रा की जिन्दगी में ऐसे केन्द्र बहुत बड़ा काम कर रहे हैं— इसका ज्ञान नानकिंग में ही हुआ।

सांस्कृतिक-महल एक विशालकाय भवन है। बाहर बहुत बड़े फाटक पर माओ जे तुंग के हाथों से लिखा है—"मजदूरों का साँस्कृतिक-महल" बड़े बड़े रेशमी लाल झंडे मस्त हवा में लहरा रहे हैं।

फाटक पर ही महल के संचालक मा से परिचय हुआ। फिर हम लोग महल देखने चले।

महल की स्थापना २ जून १९५१ को हुई थी। नानकिंग की जन सरकार ने इस महल की कार्यवाहियों को संगठित करने के लिए २० अरब येन (चीनी सिक्का—जो करीब ४२ लाख ५५ हजार रुपये के क़रीब होगा) दिया था।

यहाँ-मेहनतकशों की सांस्कृति कार्यवाहियों का ही केन्द्र नहीं बल्कि उनकी राजनैतिक चेतना बढ़ाने और सांस्कृतिक सतह को ऊँचा उठाने की भी लगातार चेष्टा होती है। शिक्षा के लिए बहसों, नुमाइशों का संगठन किया जाता है।

इस सांस्कृतिक केन्द्र के ३ मुख्य काम हैं:—

१—अध्ययन-शिक्षा-एक बड़ा पुस्तकालय है जिसमें १०००० से ज्यादा किताबें हैं। मार्क्सवाद, लेनिनवाद पर भी अनेक किताबें हैं। इनके अलावा पचासों पत्रिकायें देशी और विदेशी, सचित्र और सादी।

एक बड़ा सिनेमा घर है जिसमें अब तक ६ लाख से ज्यादा लोग शिक्षा-प्रद और उपयोगी फिल्में देख चुके हैं।

आर्टस में खोज के लिए अलग कमरा है जिसमें अलग छोटा पुस्तकालय है। नाटक ड्रामा के लिए अलग कमरा है। इसमें तरह तरह के सामान रक्खे हुए हैं। मजदूरों का नाटक ग्रुप है जो यहाँ रिहर्सल वगैरह करता है और देश भक्ति पूर्ण नाटकों की तैयारी करता है। गाने-बजाने के तरह तरह के सामानों से लैस एक अलग कमरा है। जब हम इस कमरे में गए तो वहाँ नौजवानों और नवयुतियों को मास्टर की मदद से बाजों को सीखते हुए पाया। एक और बड़ा कमरा है जिसमें अक्सर व्याख्यान और रिपोर्टें होती हैं।

चीन-सोवियत दोस्ती का अलग कमरा है जिसकी दीवारों पर सोवियत यूनियन के नेताओं और जनता की कार्यवाहियों के चित्र और फोटू टंगे हुए हैं।

२—खेल-कूद और दिल-बहलाव के लिए बास्केट बाल और वाली बाल के लिए अच्छे मैदान हैं और एक बड़े कमरे में कसरत करने का सामान है। इसी से मिला हुआ टेबुल-टेनिस, शतरंज आदि से लैस दूसरा कमरा है।

३—महल के भीतर ही बहुत बड़ा रेस्टोरेन्ट, नाई की दूकान, अतिथि-गृह, किताबों की दूकान, बैंक, सिनेमा-हाल, कोआपरेटिव स्टोर-गरज कि मजदूरों की रोजमर्रा की जिन्दगी की जरूरत और फायदे का हर मुमकिन सामान यहाँ मौजूद है।

शनिवार और इतवार को खास तौर से यहाँ मजदूरों की भीड़ रहती है। १०,००० से ज्यादा लोग यहाँ अपनी हफ्ते की छुट्टी गुजारने आते हैं। जून १९५१ से अप्रैल १९५२ तक ८७ लाख से ज्यादा लोग यहाँ आए।

इस वक़्त यहाँ एक बहुत शानदार औद्योगिक नुमाइश लगी हुई है।

नानकिंग के मजदूरों ने मुक्ति के बाद से औद्योगिक उत्पादन और विकास के क्षेत्र में जो प्रगति की है—यह नुमायश इसी का प्रदर्शन है। बिजली, रेडियो, टेलीफोन का जो तमाम सामान पहले विदेशों से आता था, अब नानकिंग के मजदूर अपने यहाँ ही बनाने लगे हैं और बहुत बढ़िया क्वालिटी। सिनेमा के प्रोजेक्टर जो नानकिंग में बने थे वह भी प्रदर्शनी में रक्खे थे।

उत्पादन के क्षेत्र में प्रगति कितनी हुई है वह इसी से मालुम हो जायेगा कि १६४६ में उत्पादन १०० माना जाय, तो १६५० में वह ४०८ हुआ और १६५१ में ४६५।

जगह-जगह पर माडेल-मजदूरों की तस्वीरें और उनकी ईजाद की हुई चीजें रक्खी हैं।

दो बड़े बड़े कमरों में सिल्क और कढ़ाई की दिलचस्प और लुभावनी डिजाइनें हैं। मेजपोश, कुशन, परदे अजब अजब डिजाइन, जिन पर माओ जे तुँग के चित्र कढ़े हुए हैं। जिन पर शाँति का पक्षी बना हुआ है। हाथ की इस बारीक कारीगरी का मुक़ाबला दुनियाँ में शायद ही कोई देश कर सके।

× × ×

शाम को चाऊ-यी-मान नाम की फिल्म देखी।

"चाऊ-यी-मान"—चीनी जनता की महान पुत्री और राष्ट्रीय वीरांगना चाऊ यी मान की कहानी है। जापानी साम्राज्यवाद के विरोध में चीनी राष्ट्र के महान संघर्ष और बलिदान की प्रतीक यह कहानी सच्ची कहानी है।

चाऊ यी मान चीन की कम्युनिस्ट पार्टी की मेम्बर थीं। १९३१ के सितम्बर महीने में जापानियों ने अपने हथियारबन्द हमले को और तेज किया वह उत्तर-पूर्व पर कब्जा करके और आगे बढ़ रहे हैं। पार्टी के आदेश पर चाऊ हरबिन में बिजली मजदूरों के गुप्त संगठन के लिए गईं।

१९३३ की गरमियों में वह और साथियों के साथ चू नदी के पास के गाँवों में छापेमार संघर्ष चलाने के लिए भेजी गईं। जापानी पुलिस के कारण हरबिन में सुरक्षित काम करना नामुमकिन सा हो गया था। १९३४-३५ के साल चीनी जनता के लिए कठिन संकट का जमाना था। चाऊ और उनके साथी, जंगलों नदियों के किनारे और बरफ़ीली जगहों में रहते और लड़ते थे और किसानों को संगठित करते थे।

जापानी साम्राज्यवादियों का नारा था—"सबको मार दो, सब कुछ जला दो, सब कुछ तबाह कर दो।"

कठिन मेहनत। लगन और बलिदान से चाऊ और उनके साथियों ने किसानों को जाग्रत किया, बहुतों को अपनी फौजों में शामिल किया। छापेमारों की जिन्दगी, उनकी ट्रेनिंग और शिक्षा, जापानियों की क्रूरता और छापेमारों की बुद्धि और बहादुरी को इस फ़िल्म में बड़ी खूबी से दिखाया गया है।

१९३५ के जाड़ों में एक दिन दुश्मन ने चाऊ के दस्ते को घेर लिया। दुश्मन की ताक़त ज़्यादा थी। चाऊ ने तै किया कि लड़ाई लेना नुक़सानदेह होगा। उसने दुश्मन के घेरे को तोड़कर निकलने का फ़ैसला किया। चाऊ ने मुख्य हिस्से को पीछे हटने के लिए कहा और खुद कुछ साथियों के साथ लड़ने के लिए रुक गई। एक-एक करके सब साथी गिरते गए। चाऊ भी घायल होकर बेहोश हो गई।

दुश्मन चाऊ को गिरफ्तार करके ले गए ! उससे खबरें जानने के लिये रिहाई का लालच दिया और उसके इनकार करने पर..........." कोड़े, गरम चिमटे, कोड़े और बार-बार बेहोशी अधमरी हालत में वह अस्पताल भेजी गई।

इस क्रूरता को देखकर कोई भी कह देगा– इससे तो मरना अच्छा– लेकिन चाऊ फिर सोचती है—"जिन्दा रहना जीत है......" उसके संघर्ष, उसकी देशभक्ति, दुश्मन के प्रति नफ़रत ने आखिर नर्स और गार्ड को जीत लिया। एक दिन वह तीनों भाग निकले।

लेकिन जापानियों को पता लग गया। उन्होंने पीछा किया। वह गिरफ्तार हो गई और इस बार उसे फौरन गोली मार दी गई...।

फ़िल्म का यह आखिरी दृश्य—चाऊ यी मान के मज़बूत आगे बढ़ते हुए क़दम उस तरफ जहाँ गोलियाँ छूटने को हैं। चाऊ यी. मान का गम्भीर चेहरा जिसके एक-एक भाव दुश्मन के प्रति घृणा उगल रहे हैं और जो अपनी जनता और अपनी पार्टी के प्रति वफादारी और प्यार से बहुत ही भोला और प्यारा लगता है......! वह बढ़ती जाती है और मुँह से "चीन की कम्युनिस्ट पार्टी जिन्दाबाद", "साम्राज्यवादियों का नाश हो", "चीनी जनता अजेय है" के नारे निकल रहे हैं।

फिल्म यहीं खतम हो जाती है। हाल "चाऊ यी मान जिन्दाबाद" "माओ चुसी जिन्दाबाद" के नारों से गूँज उठता है।

"चाओ यी मान" बहुत ही जोरदार फ़िल्म है, "चाऊ यी मान" का पार्ट शीली जिन ने किया है। शीली जिन खुद कलाकार और एक्ट्रेस होते हुए छापेमारों के साथ रही हैं और इस जिन्दगी का

तजुर्बा उन्हें अच्छी तरह से है। शीली जिनका कलाकार-जीवन मुक्ति के पहले इलाकों में शुरू हुआ और वह छापेमारों, मुक्ति-सेना की सक्रिय जिन्दगी से घुल मिलकर महान कलाकार बनी हैं। सोवियत वीरांगना जोया, अमर शहीद जूलियस फूसिक और गुरिल्ला-शहीद लिऊ पो चीन इस महान कलाकार की कल्पना और आदर्श हैं।

मैं अपने यहाँ की फिल्मों और अपने कलाकारों के बारे में सोचता हुआ......लौट आया।

१६ मई

आज सबेरे नानकिंग से करीब १६ मील दूर स्थित एक बुद्ध मंदिर देखने गए। मन्दिर पहाड़ियों पर बना है और बहुत ही अच्छी हालत में है। लम्बे काले चोंगे पहने हुए बौद्ध भिक्षु भी काफी तादाद में यहीं रहते हैं।

अनेक स्थितियों और भावनाओं का प्रदर्शन करती हुई बुद्ध जी की तमाम मूर्तियाँ हैं। लकड़ी पर की गई कारीगरी भी बहुत अच्छी है।

लौटने में रास्ते के गावों में भी घूमे। कृषि सुधार कानून इन इलाकों में लागू हो गयी है। खेतों में गेहूँ की फसल करीब-करीब पकी खड़ी थी। सुनहरी भरी बालियाँ हवा से खेल रहीं थीं। चीन के गरीब किसानों और मजदूरों ने सदियों प्रार्थना की। गिड़गिड़ाए और विनती की कि पानी बरसे, अच्छी फसल हो, जमीन मिल जाय। लेकिन प्रार्थना जितनी कातर और दुःखपूर्ण होती गई उतनी ही उनकी जिन्दगी और कर्जे का बोझ भयावह होता गया। आखिर माओ की आवाज उठी, किसान जागे, उनकी अपनी सरकार बनी— और उसने न सिर्फ जमीन दी, न सिर्फ पुराने कर्ज़े माफ़ कर दिए, बल्कि गधे-घोड़े दिए, नए औज़ार दिए, अच्छे बीज दिए, क़र्ज़े दिए और दी मुक्ति-सेना के रूप में स्थायी सुरक्षा और इसीलिए आज इन गांवों में घर-घर माओ के चित्र टांगे जाते हैं। उसका आदर उतना ही होता है जैसे कभी प्रार्थना का। समय ज़्यादा न होने के कारण गांवों का, वहाँ की जिन्दगी का तफ़सीली अध्ययन न किया जा सका।

अब हम शहर के पास आ गए। यहाँ एक बड़ा बाग़ है। शिकार करने की मनाही है। बहुत सुन्दर और रमणीय जगह है। चारों

और ऊँचे-ऊँचे पेड़, हरियाली, रंग-बिरंगी चिड़ियाँ। सामने की तरफ़ ऊँचे पहाड़ की चोटी है और है पगोडा।

यहीं पर एक विशाल भवन है। क़रीब ३०० फुट ऊँची छत लेकिन एक भी थम्भी नहीं।

आज दोपहर का खाना यहीं हुआ। साथ में नानकिंग ट्रेड यूनियन के चेन शेन यान, वाँग, ली और यू ई भी थे। बहुत देर तक ये साथी हिन्दुस्तान के मजदूर-किसान आँदोलन के बारे में सवाल पूछते रहे और बीच-बीच में कोमिंताँग-युग के अपने अनुभव बताते रहे।

फिर ली और वाँग के साथ हम डा० सन यात सेन के स्मारक पर गए। चीं शा पहाड़ियों पर बना यह राष्ट्रीय स्मारक बहुत ही सुन्दर है। एक बहुत बड़े घेरे में, घने पेड़ों की छाया में बने. इस स्मारक को देखने तमाम लोग आते हैं। डा० सन यात सेन द्वारा कही गई जनवादी बातों को बड़ी-बड़ी प्लेटों पर लिखा गया है। सीढ़ियों द्वारा बहुत ऊँचाई पर चढ़कर एक हाल में गए। यहाँ बीच में डा० सन यात की मूर्ति है इसके पीछे ही एक कमरे में मक़बरा है। पहले डा० सन यात सेन की लाश केमिकल की मदद से शीशे के बक्स में सुरक्षित रक्खी थी। लेकिन कहते हैं कि १९२९ में च्यांग काई शेक ने डा० सन यात सेन के शरीर के कपड़ों को बदलने की कोशिश की और वह लाश ख़राब हो गई। यहाँ एक अजीब शाँति थी और डा० सन यात सेन की लेटी हुई मूर्ति जैसे मुसकरा रही थी।

× × ×

शहीद-चौरा

सन यात सेन स्मारक से हम लोग शहर के दक्षिण-पूर्व में स्थित यू हा स्टेज पर गए। यू हा स्टेज शहीद-स्मारक के नाम से मशहूर है।

चीनी भाषा में "यू हा" लाल फूलों को कहते हैं। खुले आकाश के नीचे जमीन से काफी ऊँचाई पर पहाड़ी- नुमा ढूह जो हरियाली से ढके हैं—यू हा स्टेज कहलाते हैं। बरसात में जब पानी बरसता है तो यहाँ के छोटे छोटे पत्थर के टुकड़े पानी पड़ने से रंग-बिरंगी चमक देते हैं। ये दृश्य बहुत ही लुभावना होता है। यह स्थान नानकिंग की जनता के दिल-बहलाव और दिलचस्पी की जगह थी।

१९२७ में जब चीन की महान क्रांति नाकामयाब हो गई और च्यॉंग काई शेक ने क्रांति के प्रति गद्दारी की और देशभक्तों का कत्लेआम शुरू किया, तबसे चीन की मुक्ति तक, कहते हैं, इस युहा स्टेज पर, प्राकृतिक सौन्दर्य के इस टुकड़े पर, १० लाख ज़्यादा चीनी देशभक्तों का क़त्ल किया जा चुका है।

मुक्ति के बाद नानकिंग की जनता और सरकार ने इस स्थान पर एक स्थायी स्मारक तैयार किया है और ५ साल के भीतर एक महान स्मारक बनाने की योजना है। स्मारक एक अच्छा शिक्षा और संस्कृति का केन्द्र होगा।

ली और वाँग मेरे साथ थे। उनकी मदद से मालुम हुआ कि च्यॉंगशाही के हत्यारों ने शहीदों की हत्या के लिए गन मशीनें, संगीनें, जमीन में ज़िन्दा गाड़ देना—सभी तरीके अपनाए। जहाँ स्मारक है उसके आसपास एक फ़र्लांग के घेरे में ऊँची-नीची ढूहें हैं—और वे सब शहीदों की कब्रें हैं—एक दूसरे पर गाड़े हुए शहीद युन टाइ इंग—युवक नेता, हौंग ट्न चाऊ मजदूर नेता और चीन की कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय कमेटी के सदस्य उस ओर स्मारक के पीछे तिकोनी जगह पर हैं। और वह सामने एक छोटी झोपड़ी सी जो दीखती है, उसके पास ही एक उठा हुआ ढूह है—वहाँ चीनी कम्युनिस्ट पार्टी के

पोलिट-ब्यूरो के मेम्बर लो तुँग शान की कब्र है। १६४६ की पहली अप्रैल को नानकिंग में हुए विद्यार्थी प्रदर्शन के दो शहीदों की लाशें भी यहीं कहीं हैं— वह उत्तर-पूर्व की ओर नीचे की तरफ २० गज़ की दूरी पर, और इसी दिशा में, कुछ और दूर वहाँ पर नानकिंग कम्युनिस्ट पार्टी के मन्त्री सनचिन शान की कब्र है।

ली जितना ही बोलता था और बताता था, मेरा मन उतना ही परेशान हो रहा था। और जानने की जबर्दस्त अभिलाषा पर मेरी भावुकता जीती जा रही थी। धीरे-धीरे मैं चुप हो गया— बिल्कुल चुप। शहीदों के स्मारक ने मुझे हिला दिया। इन नेताओं और नौजवानों के दिमागों में भी कभी अपनी जनता के भविष्य के लिए वही सुनहरे सपने होंगे जो आज मेरी तरह हजारों देशवासियों के हैं। चीन के सपूतों ने इन शहीदों के छोड़े हुए काम को पूरा कर लिया है— अब वह करीने से उन सपनों को जीवित रूप दे रहे हैं।

खुदीराम बोस, भगतसिंह, रामप्रसाद बिस्मिल, अशफ़ाक उल्ला, रामेश्वर, लतिका, सुभाष मुकर्जी, तेलंगाना के शहीद...... एक-एक करके मेरे सामने से गुजरते गए— ऐसा लगा ऐ कब्रें उन्हीं की हैं और यह स्मारक उन्हीं के सपनों का है और याद आया झांसी...... हत्यारा गोलीकांड, जहाँ चन्द्रशेखर आजाद का स्मारक जुर्म करार दिया गया— और नौजवान शहीद बनाए गए। चीन में भी जनता की सरकार है। अपने देश में भी कांग्रेस के नेता जनता की सरकार की बातें करते हैं— एक शहीदों के स्मारक का निर्माण खुद करती है। खुद माओ जे तुँग ने अपने हाथों स्मारक के अक्षरों को लिखा है और एक स्मारक खड़ा करने वालों पर गोलियाँ चलाती है और पंडित जवाहरलाल खुदीराम स्मारक समारोह में शामिल होने से इनकार कर देते हैं...।

"शहीदों की चिताओं पर,
लगेंगे हर बरस मेले ।
वतन पर मरने वालों का,
यही बाक़ी निशाँ होगा ॥"

हाँ, हसरत वालो, मेले ही नहीं, तमाम जनता और उसका खुशहाल भविष्य तुम्हारा "बाक़ी निशाँ" होगा !

× × ×

ट्रेड यूनियन दफ्तर में

३ बजे हम नानकिंग के केन्द्रीय ट्रेड यूनियन दफ्तर में पहुँचे। ट्रेड यूनियन दफ्तर देखने की प्रार्थना मैंने ही की थी। अचानक इस प्रार्थना के कारण, जो हुक्म की ही तरह था (क्योंकि अतिथि की बात को टालना यहाँ बहुत बुरा समझा जाता है) कुछ असुविधा भी हुई। लेकिन ट्रेड यूनियन के अधिकारियों ने अपना कीमती वक्त दिया और मेरे सवालों का तफ़सील में जवाब।

मैंने मुक्ति से पहले नानकिंग मज़दूर-आँदोलन के बारे में पूछा— क्योंकि चीन से बाहर चीन के ट्रेड यूनियन आंदोलन के बारे में बहुत कम जानकारी है।

ट्रेड यूनियन के संचालक साथी ने बहुत ही नम्रता से कहा कि— मैं जो कुछ आपको बताऊँगा वह अधिकार पूर्ण नहीं कहा जा सकता। क्योंकि हम लोग इसके लिए तैयार नहीं थे। जापान-विरोधी संघर्ष के जमाने की बातें भी ज़्यादा मैं नहीं बताऊँगा। जापान-विरोधी युद्ध के बाद आम मज़दूरों और जनता को आशा थी कि अब स्थिति में सुधार होगा— लेकिन हालत और भी गिरती गई। आर्थिक हालत

इतनी खराब हुई कि बेकार मजदूरों की कौन कहे, काम करने वाले मजदूरों को भी पेट पालना नामुमकिन हो गया। एक तरफ मजदूरों में बेचैनी फैल रही थी और दूसरी ओर मुक्ति-सेना और छापेमार नानकिंग के पास सक्रिय हो रहे थे। च्याँग-सरकार घबड़ा कर दमन करती लेकिन कामयाब न होती थी। ऐसी ही हालत में १६४८ में रेलवे मजदूरों की जबर्दस्त हड़ताल हुई। मजदूरों की एकता के सामने सरकार को झुकना पड़ा। माँगे मन्जूर हुईं। लेकिन कुछ दिन बाद दमन शुरू हुआ। नेताओं के तबादले कर दिए गए। कुछ को नानकिंग से निकाल दिया गया। तीन-चार महीने बाद फिर हड़ताल हुई। सरकार ने हड़ताल तोड़ने के लिए बाहर से मजदूर बुलाए लेकिन कामयाब नहीं हुई। च्यांग काई शेक ने फ़ौजों को बाहर से बुलाया। लेकिन जहाजी मजदूरों ने मजदूरों को दबाने के लिए फौजें लाने से इनकार कर दिया। नानकिंग में यॉंग्त्सी पर दौड़ने वाले तमाम स्टीम शिप और स्टीम-बोट अकस्मात सबके सब उसी दिन खराब हो गए जिस दिन च्याँग की फौजें नदी पार करने को थीं। ४८ नेता गिरफ्तार भी हुए लेकिन हड़ताल कामयाब रही।

उन्होंने आगे बताया कि मुक्ति से पहले हमारे संघर्ष का उद्देश्य था मिलों-फैक्टरियों को सुरक्षित रखना, जिससे दुश्मन मशीनों को न बरबाद कर सके, और न ले जा सके। हमें एक एक फैक्टरी की मशीनों और सामान का पता था और मजदूरों की संगठित निगाहें उन पर नजर रखती थीं। बाद में तो इन जत्थों के पास हथियार भी आ गए थे। हमारा काम मुक्ति-सेना को नानकिंग लेने में पूरी मदद करना था।

मुक्ति-सेना नानकिंग पार करने की तैयारी कर ही रही थी कि च्याँग सरकार भाग खड़ी हुई। जहाजियों ने मुक्ति-सेना के स्वागत

के लिए घंटों में अपने जहाज ठीक कर लिए। नानकिंग-चिगचाँग के बीच की रेल २८ घण्टे के भीतर तैयार हो गई।

नानकिंग की मुक्ति के बाद से मजदूरों के लिए नए युग की शुरुआत होती है। पहले वे गुलाम थे लेकिन अब वे मालिक।

नानकिंग २४ अप्रैल १९४९ को मुक्त हुआ। मजदूरों की तादाद १॥ लाख के क़रीब है। नए शासन की नीति शुरू से ही थी "मजदूरों पर निर्भरता"। कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय-कमेटी के मेंबर लिऊ पी शेर्न जो दक्षिण-पूर्वी सरकार के प्रधान थे, नानकिंग के मेयर चुने गए।

दूसरे-तीसरे दिन उन्होंने तमाम उद्योगों के प्रतिनिधियों को बुलाया। ३०० आए। उन्होंने नयी सरकार की नीतियाँ बताईं और शासन चलाने में, चीन के नव-निर्माण में आगे बढ़कर हिस्सा लेने की अपील की। मजदूरों की हिचकिचाहट टूटी। उत्साह बढ़ा। वे बड़ी देर तक लिऊ को घेरे खड़े हुए बातें करते रहे। ट्रेड यूनियन संगठनों ने भी सहयोग दिया।

इस नीति से आम लोगों का विश्वास बढ़ने लगा। टुको से लेकर मिंगवा तक १ महीने में रेल बिछाने का काम था। वह १५ दिन में ही पूरा हो गया।

हर मजदूर को उसकी उचित जगह पर मजदूरों की राय से काम दिया गया। बदमाश मास्टरों-मिस्त्रियों और सुपरवाइजरों को सजायें और चेतावनी दी गई।

मुक्ति से पहले मजदूरों को इतनी तनख्वाह मिलती थी और कीमतें इतनी डाँवाडोल थीं कि दो दियासलाइयाँ भी न खरीद सकते थे। अब न सिर्फ अपना बल्कि बाल-बच्चों का पेट भर सकते हैं, कपड़े बनवा सकते

हैं और जरूरत की चीजें ले सकते हैं। मुक्ति के बाद भूख मजदूर की समस्या नहीं रह गई है।

१९५० की फ़रवरी में क़ीमतें स्थायी हुईं। उससे पहले मजदूरों की जरूरत के मुताबिक सहयोगी संस्थाओं के जरिए कपड़ा और चावल बाँटा गया। क़ीमतों का स्थायी होना एक बहुत बड़ा काम था।

बेकार मजदूरों को राजनैतिक और टेकनिकल स्कूलों में रखकर सरकार के खर्चे से शिक्षा और ट्रेनिंग दी गई। और फिर उन्हें अलग अलग कामों के लिए भेज दिया गया।

जून १९५० में काम करने वाले मज़दूरों की छुट्टी का क़ानून बना। इस तरह २०००० मजदूरों को काम दिया गया। नानकिंग में बेकारी की समस्या हल हो गई है। ट्रेड यूनियनों में उन्हें अपनी मरज़ी के नेता चुनने का हक़ है। १९५० के मार्च तक ७० फ़ीसदी मज़दूर ट्रेड यूनियनों के मेंबर बन गए।

म्युनिस्पल शासन में उनके चुने हुए प्रतिनिधि भेजे गए। हर फैक्टरी को अपनी तनख्वाह के बिल का ५% ट्रेड यूनियनों को देना होता है और इसके साथ ट्रेड यूनियनों के लिए जरूरत की चीजें भी इन्हीं से मिलती हैं।

सरकारी कारखानों में मज़दूरों के चुने हुए प्रतिनिधि संगठन का काम करते हैं। वही उत्पादन का नक़शा बनाते हैं और वही उसे पूरा करते हैं।

व्यक्तिगत पूँजी के कारखानों मज़दूरों और मालिकों के प्रतिनिधियों की संयुक्त कमेटियाँ हैं। जो सामूहिक पैक्ट के सिद्धान्त पर काम करती हैं।

उत्साह बढ़ाने के लिए ईजाद करने वाले मजदूरों को, रैशनलाइजेशन के अच्छे सुझाव देने वालों को, उत्पादन बढ़ाने में इनाम दिये जाते हैं। फैक्टरी के अखबारों में तस्वीरें और नाम छापे जाते हैं।

समाजी सुरक्षा कानून

१६५१ के मई-दिवस पर यह कानून लागू हुआ। १०० या १०० से ऊपर मजदूर वाले कारखानों पर यह लागू है।

मुक्ति से पहले फैक्टरियों में काम करने वाली औरतों की स्थिति बहुत ही खराब थी। शहरों के सूती और तम्बाकू के कारखानों में उनसे बहुत कम पैसों में काम करवाया जाता है। आगे बढ़ने का कोई रास्ता न था। हमेशा वह मिस्त्रियों-मास्टरों की रखैली सी हो जाती थीं और अक्सर वे इन बदमाशों की "आमदनी" का साधन बनती थीं। ८-६ बरस की उम्र में ही नौकरी की तलाश में फैक्टरी जातीं। और कम से कम ५ बरस बिना पैसे के "काम सीखतीं"। अगर बहुत भाग्यवती हुईं तो कभी चावल या कभी और कुछ खाने को मिल जाता उन्हें १४ घंटे काम करना पड़ता था।

आमदनी अगर बढ़ती तो वह परिवार की सहायता में चली जातीं। परिवार वाले जल्दी शादी न होने देते थे— नहीं तो आमदनी शौहर के पास चली जाती थी। और फैक्टरी के भीतर भी शादी होने और जच्चा होने के बाद औरत को काम से अलग कर दिया जाता था। औरतें छिपाकर शादी करतीं और अपने पेट को कस कर बाँधे रहतीं। बच्चा पैदा होने के दिन तक वह काम करने को मजबूर थीं, क्योंकि एक दिन की भी गैरहाजिरी का मतलब एक महीने की तनख्वाह कटवाना होता था।

आर्थिक कारणों से बहुत बच्चों के "बाप" ही न होते थे। माँए उन्हें छिपाकर या तो फैक्टरियों में लातीं या दिन भर के लिए घरों में बिना दूध-पानी के बन्द कर देतीं।

लेकिन इस कानून के बन जाने से जच्चा औरत को ५६ दिन की तनख्वाह सहित छुट्टियाँ मिलने लगीं। अगर कोई छुट्टी बढ़वाना चाहें तो वह ६ महीने तक बढ़ा सकती हैं। इस बीच में उन्हें तनख्वाह से की ५० फी सदी से लेकर पूरी तनख्वाह तक उनकी नौकरी के हिसाब से मिलेगी। माडेल औरतों को पूरी तनख्वाह मिलती है। बच्चा पैदा होने पर हर माँ को फैक्टरी की तरफ से ५ गज लाल कपड़ा दिया जाता है। और अगर जुड़वाँ हुआ तो २० गज। औरतों को ५० साल की उम्र में और मर्दों को ५५ साल की उम्र में बुढ़ापे की पेंशन मिल जाती है। तनख्वाह का ७५% यानी तीन चौथाई पेंशन मिलेगी। अगर बूढ़ा मजदूर काम करना चाहता है और काम के लायक है तो उसकी तनख्वाह फौरन बढ़ा दी जायेगी।

अगर किसी मजदूर को काम के दौरान में चोट लग जाए तो अस्पताल का खर्चा फैक्टरी को देना होगा और जब तक वह अच्छा न हो जाय तब तक की तनख्वाह।

बीमार होने पर अस्पताल में भरती हो सकता है। जब तक कोई "स्पेशल" इलाज न कराना हो तब तक इलाज मुफ्त होगा। स्पेशल इलाज के लिए खर्चे का आधा मजदूर को देना होगा लेकिन मुक्ति के पहले के अस्पतालों और डाक्टरों में आज बहुत फ़र्क है। पहले वे अपने लिए जीते थे। अब वह मजदूरों और जनता की सेवा के विचार से काम करते हैं। इस तरह बीमार मजदूर ६ महीने तक अस्पताल में रह सकते हैं।

अगर काम के दौरान में लगी चोट के कारण कोई काम नहीं कर सकता तो पूरी जिन्दगी उसे तनख्वाह की एक तिहाई पेंशन मिलेगी। अगर मामूली बीमारी में कोई मर जाय तो १ महीने की तनख्वाह

फ़ौरन और १० महीने तक परिवार को मिलेगी। अगर कोई काम के दौरान में मर जाय तो उसके परिवार के किसी आदमी या औरत को, जिसको वह नामज़द कर जाये एक तिहाई से लेकर दो तिहाई तक हरजाना मिलेगा— जब तक वह खुद कमाने न लगे।

इस तमाम खर्चे को व्यक्तिगत फैक्टरियों में मालिक और सरकारी कारखानों में सरकार देती है। तनख्वाह के बिल का १० फी सदी हर कारखाने से इस फंड के लिए आ जाता है। और वह ट्रेड यूनियनों को दे दिया जाता है। इसके उचित बँटवारे का पूरा काम ट्रेड यूनियनें ही करती हैं।

बातें करते-करते काफ़ी टाइम हो गया था। उन्होंने हमारी सरकार द्वारा दी गई मजदूरों की सुविधा की बात पूछी। मैंने हँसते-हँसते अपने बीमा-कानून का जिक्र किया और उसके बारे में कानपुर के मजदूरों की राय भी रक्खी। फिर वहाँ से लौटकर मैं लगातार सोचता रहा कि "उत्पादन बढ़ाने", "सरकार से सहयोग करने" की कांग्रेसी नेताओं की तक़रीरें अखबारों के पन्नों में ही क्यों रह जाती हैं। एक देश की जनता की सरकार "मजदूरों पर निर्भरता" और उनकी सुविधा के लिए करोड़ों रुपये खर्च करती है और हमारे देश की सरकार मजदूर-दुश्मनी की नीति पर चलती है। करोड़ों रुपये खर्च जरूर होते हैं— लेकिन मजदूरों पर नहीं, मजदूरों को जेलों में भरने, पुलिस की लाठियों गोलियों को बढ़ाने में।

× × ×

रात में बहुत देर तक वाँग से मजदूरों के लिए शिक्षा और सांस्कृतिक विकास के काम के बारे में बातें होती रहीं।

उन्होंने बताया—मजदूरों को शिक्षित करना काफ़ी मुश्किल काम है। मुक्ति से पहले मजदूरों को पढ़ने और ज्ञान प्राप्त करने का अवसर ही न था। ६० % से ज़्यादा मजदूर अपढ़ थे। राजनीति सिखाने की बुनियादी शर्त है मजदूरों का सांस्कृतिक विकास। मुक्ति के बाद हम आम जनता का राजनैतिक और टेक्निकल स्तर उठाने का काम कर रहे हैं।

हर फैक्टरी को—चाहे सरकारी हो या व्यक्तिगत—अपनी तनख्वाह के बिल का १.५ % शिक्षा के मद में ट्रेड यूनियनों को देना होता है। सरकार की तरफ से सांस्कृतिक ब्यूरो बनाए गए हैं। उनका काम है कि मजदूरों की शिक्षा और ट्रेनिंग के लिए अच्छे मास्टर दें। ट्रेड यूनियनों की तरफ़ से मजदूरों के स्कूल चलाए जाते हैं। फैक्टरी का ट्रेड यूनियन सेक्रेटरी इस स्कूल का संचालक होता है। ६८ स्कूल ट्रेड यूनियनों द्वारा चलाए जाते हैं। इनके अलावा फैक्टरियों में १०० और स्कूल हैं। जून १९५० से दिसम्बर १९५१ तक ३८७०० मजदूरों ने इनमें शिक्षा प्राप्त की। हमारी योजना है कि ४ साल के भीतर हर औद्योगिक मजदूर १००० चीनी अक्षर सीख ले—यानी इसके माने होंगे कि १९५५ के आख़िर तक कोई अपढ़ मजदूर नहीं रह जायेगा।

हफ्ते में तीन दिन स्कूल चलते हैं। कोई उन्हें हाजिरी से रोक नहीं सकता। स्कूल में आना मजदूर की अपनी मरजी पर है। शुरू-शुरू में कुछ लोग नहीं आए लेकिन कुछ महीनों बाद शिक्षा पाए मजदूरों की प्रगति देखकर वह भी शामिल हो गए। हम मजदूरों और उनकी औरतों दोनों को ही साथ पढ़ने को उत्साहित करते हैं। यॉंगत्सी के उत्तरी किनारे पर जो फर्टलाइजर फैक्टरी है, उसमें इस तरह के २६० जोड़े पढ़ने आते हैं। हर फैक्टरी की अपनी योजना है और हर मजदूर की अपने भविष्य के लिए योजना है।

किताबें ट्रेड यूनियन के केन्द्रीय संगठन द्वारा संपादित होती हैं और उनका प्रकाशन मजदूरों के किताब-डिपो से होता है। शिक्षा के बाद उन्हें सार्टीफिकेट मिलते हैं और वे उसी क़ीमत के होते हैं जो साधारण स्कूल के। अगर ट्रेड यूनियनों के पास पैसा कम हुआ तो सरकार का साँस्कृतिक ब्यूरो उनकी सहायता करता है।

१७ मई

आज सवेरे एक बड़ी झील पर गए। बहुत ही अच्छी जगह है। पार्क में दूर से बहुत से बच्चे कतारें बाँधे और गाते हुए आते दीख पड़े। हम लोग घूमते रहे।

पार्क के भीतर "नवजवान रेस्ट्राँ" है। शनिवार और इतवार को सैकड़ों नवजवान लड़के-लड़कियाँ यहाँ अपनी छुट्टी मनाने आते हैं। रेस्ट्राँ के सामने झील के किनारे ऊँचा चौड़ा सा चबूतरा है। यहाँ कई मेजें और उनके चारों तरफ़ कुर्सियाँ पड़ी हैं। खाक़ी वर्दियाँ पहने कोई शतरंज खेल रहा है, कोई ताश खेल रहा है, कोई गा रहा है……

हम लोग एक ग्रुप के पास रुक गए। लोग कनखियों से देखने और मुसकराने लगे। वाँग ने चीनी भाषा में बताया—"हिन्दुस्तान के ट्रेड यूनियन प्रतिनिधि"—सबके सब उठ कर खड़े हो गए। बैठने के लिए कहा और जो खेल खेल रहे थे मुझसे भी खेलने को कहा। शतरंज की तरह का एक खेल था। थोड़ी देर में समझ में आ गया। मैं, वाँग और एक दूसरी नवजवान लड़की खेलने लगे। बाक़ी सब घेरे खड़े रहे और तीनों में से एक-एक की मदद करने लगे। दो बाजियाँ हुईं। मैं एक में हार गया तो मेरे सहायक बढ़ गए—बाजी क़रीब क़रीब हाथ से निकल गई हालाँकि इस बार मैं जीत गया।

फिर जाने से पहले सबके सब ४०-५० इकट्ठा हो गए। उनमें से कई ने नए चीन के बारे में मेरी राय पूछी। मैं क्या कहता? मैंने कहा—"मुझे तो चीन के लोग बड़े अच्छे लगे। अपने देश और चीन में मुझे ज्यादा फ़र्क नहीं लगता—हाँ यह जरूर है कि आप लोगों के चेहरे चीनी हैं और आप आजाद, और यही अहम फ़र्क है।" न जाने क्यों सबके सब हँस दिए। वे सब मुक्ति-सेना में थे और शिक्षा पा रहे

थे। वे सब चीन की जनवादी नवजवान सभा के मेंबर थे। मुझे चीन के कुछ गीत बड़े अच्छे लगे। मैंने उनसे "माओ का गीत" और "कोरिया में चीनी स्वयं-सेवकों का गीत" गाने को कहा।

बहुत खुशी और जोश से उन्होंने ये गाने सुनाए।

नवजवान साथियों से विदा लेकर हम लोग आगे बढ़े। पार्क में अब तक बच्चे आ चुके थे। अपनी मास्टरनियों के साथ घेरा बनाए अलग-अलग वे खेल रहे थे। हम लोग तीन चार घेरों में गए। छोटे छोटे बच्चे परिचय पाते ही तालियाँ पीटते, घेर लेते और उछल-उछल कर लटक जाते। फिर गीत सुनाते और नाचने की माँग करते। खेलते और खेलने को कहते।

घंटे डेढ़ घंटे तक इन बच्चों की दुनियाँ में हम लोग खेलते, गाते और नाचते रहे।

× × ×

१७ मई

अन्तर्राष्ट्रीय ट्रेड यूनियन नेताओं के साथ-स्पेशल ट्रेन में

३ बजे नानकिंग से विदा मिली। ली हमारे साथ थे। ली से अब तक काफी घनिष्ठता हो गई थी। ली ने इस दोस्ती के लिए मुझे चीनी भाषा में कामरेड माओ की किताबें भेंट कीं और मेरे पास कवि नाज़िम हिकमत की कवितायें थीं— मैंने वह दे दी।

५ बजे हम जेन चियान नाम की जगह पर पहुँच गये। यहाँ पर मई दिवस समारोह में शामिल होने वाले २३ देशों के १३५ प्रतिनिधियों को पूरे चीन की सैर कराने वाली ट्रेन खड़ी है। ट्रेन छोड़कर सब साथी मोटरों और ट्रकों से हुआई नदी का बाँध देखने गए हैं। वे आज ही लौटने को हैं।

ली और मैं गाड़ी के खाने वाले डिब्बे में बैठे थे। कि पीछे से अंग्रेजी में "हलो" की आवाज़ आई। घूमते-घूमते एक अच्छे बदन का लम्बा-चौड़ा नौजवान दिखाई पड़ा और बड़े ही दोस्ताने अन्दाज में "सलाम" कहते हुए हाथ बढ़ा दिया। मैं कुछ समझ न पाया था। मैंने हाथ तो बढ़ा दिया— लेकिन समझने की कोशिश करता रहा। अच्छा आकर्षक चेहरा, नीली-नीली प्यारी आंखें, चौड़ा माथा...... वह पास ही कुर्सी पर बैठ गया और पूछा— आप ही कामरेड रंगआसरे हैं? मैंने हाँ तो कह दिया लेकिन इस अजनबी अच्छे लगने वाले व्यक्ति से अपना नाम सुनकर मैं और चकरा गया। उसने आगे बताया— मेरा नाम विक्टर है। मैं पेकिंग में एशिया और आस्ट्रेलिया के ट्रेड यूनियन ब्यूरो में सोवियत प्रतिनिधि कामरेड

कालिबुनाव के सहायक का काम करता हूँ। आप कामरेड यूसुफ के सेक्रेटरी हैं न? मैंने फिर "हाँ" कह दिया। वह आगे बताता रहा कि कामरेड कालीबुनाव की तबियत खराब है। वह और लोगों के साथ नहीं गए हैं। फिर······चीन की भाषा, हिन्दुस्तान की भाषा-समस्या पर वह बातें करता रहा। हिन्दुस्तान के बारे में, भाषा जैसी समस्या पर उसके ज्ञान को देखकर मैं हैरान था।

विक्टर के साथ हम कालीबुनाव को देखने गए। वह आधे लेटे से थे। विक्टर ने परिचय दिया। वह सफर के बारे में पूछते रहे। मैं एक या दो शब्दों में जवाब देकर चुप हो जाता। नयी जगह में, नए व्यक्तियों से मिलकर जिन्हें अपना दोस्त समझा जाता हो, उनसे मिलने पर जो हालत होती है— मेरी हालत भी कुछ ऐसी ही थी।

७ बजे के क़रीब प्लेटफ़ार्म से थोड़ी दूर पर दो बड़ी नावों द्वारा ट्रेड यूनियन डेलीगेशन के बाक़ी सभी साथी आ गये। एक किनारे पर खड़ा ली एक-एक करके जिनको वह पहचान सकता, इशारे से बताता जाता। वह शिवशेंको हैं— तगड़े बदन और नाटे कद के— सोवियत डेलीगेशन के नेता। और वह नीली वर्दी में लम्बे-पतले, मुसकराते और किसी को मदद देते हुए लिऊ निंगी— चीन के ट्रेड यूनियन और पार्टी-नेता। वह धोती-कुरता पहने, बड़ी मूछों वाले आपके प्रोफेसर सक्सेना हैं। और वह टोपी वाले प्रोफेसर शाह,······और वह यूसुफ······।

सब लोग अपने-अपने डिब्बों की तरफ़ बढ़ते गए। यूसुफ़ ने मुझे नहीं देखा। मैं और ली पीछे पीछे आए।

डिब्बे के भीतर पहुँच कर कामरेड यूसुफ़ से मुलाक़ात हुई। उनके साथ किसान नेता, इन्दुलाल याज्ञिक थे। वे मास्को आर्थिक सम्मेलन

से शाँति की तैयारी-कमेटी में हिस्सा लेने के लिए चीन आ गए थे। काफी देर तक कामरेड यूसुफ से मई-दिवस, कोट्टयम और गोरखपुर के गोली कांड, कलकत्ता की ७ मई की आम हड़ताल के बारे में बातें होती रहीं।

ली वहाँ से विदा हो गया। मैंने वायदा किया कि जब कभी चीन आऊँगा तो उससे जरूर मिलूँगा।

चीन की सरसब्ज जमीन पर दौड़ती हुई स्पेशल ट्रेन, अंतर्राष्ट्रीय मजदूर आन्दोलन के नेताओं के साथ— मेरा भावुक मन बहुत खुश था……कब सो गया— यह नहीं मालूम।

१८ मई

हैंगचाऊ में।

आज सबेरे ६ बजे हैंगचाऊ पहुँचे। स्टेशन पर स्वागत करने वालों की भीड़ थी। तालियों की गड़गड़ाहट में कुछ सुनायी न पड़ता था। तमाम डेलीगेशन के लोग एक-एक करके अनुशासित कतारों में खड़े लोगों से हाथ मिलाते और आगे बढ़ते जाते। बाहर अच्छे २ कपड़ों में लड़कियाँ गुलदस्ते लिए खड़ीं थीं और एक-एक को देती जातीं और हाथ मिलाती जातीं। प्लेटफार्म के बाहर बैंड बजाकर ढोलक बजाकर लोग रंग-विरंगे कपड़े पहने नाच और गा रहे थे। और हजारों हाथ तालियाँ बजाकर अन्तर्राष्ट्रीय दोस्तों का स्वागत कर रहे थे। सबकी आंखें चमक रहीं थीं, खूबसूरत चेहरे मुस्करा रहे थे। माँओं की गोद में हँसते हुए लाल थे। जिन्हें वे तालियाँ बजाना सिखा रहीं थीं। उनके नन्हें हाथ कभी तालियाँ बजाते, कभी उलझन में रुक जाते, और कभी खुश होकर वह किलकारियाँ भरते। हम अपनी मोटरों की तरफ बढ़ते जाते थे और कभी कभी जोशीले बच्चे आगे आकर नन्हें प्यारे हाथ मिलाने के लिए आगे बढ़ा देते। वे स्वागत में "निहा" कहते और हम कभी घबड़ाहट में "इन्दू" (चीनी भाषा में हिन्दुस्तानी को कहते हैं) और कभी "निहा"।

स्टेशन से करीब तीन मील दूर तक इसी तरह की कतारें लगी हुई थीं और होठों की मुसकराहट, आंखों की चमक, तालियों की गड़गड़ाहट परिचित हो तो गई थी लेकिन नई लगती थी। मोटरें अतिथि गृह से थोड़ी दूर पर रुक गई और हम पैदल चले। जोश में भरे लोग जोर-जोर से तालियाँ बजाते, उनमें से और ज्यादा जोशीले हाथ मिलाने को आगे बढ़ आते, गले लग जाते और न छोड़ते।

इतनी आत्मीयता, इतना अपनापन, इतना प्यार और आदर चीन की जनता ही दे सकती है— उनके नए विचारों में ही विदेशी दोस्तों के प्रति सम्मान के भाव भरे हुए हैं।

× × ×

जूट मिल

दो बजे हमारा पूरा काफ़िला हैंगचाऊ की एक जूट फैक्टरी देखने चला। जिन रास्तों से हम गुजरते थे, सड़कों के किनारे वही परिचित तालियों की गड़गड़ाहट और होठों की मुस्कराहट स्वागत करती। फैक्टरी के फाटक से हम लोग पैदल चले। फैक्टरी के भीतर खबर हो गई थी। कम्पाउन्ड में रहने वाले सैकड़ों नवजवान मजदूर और औरतें स्वागत के लिए आ गए थे। फैक्टरी की मशीनों की गड़गड़ाहट के बीच से बहुत से लोग बाहर आ गए थे। उनके बालों पर जूट के रेशे थे और वे बड़ी खुशी से हाथ मिलाते, गले लगते और हाथ में हाथ डालकर साथ चलने लगते।

हम लोग पहली मंजिल पर स्थित एक बहुत बड़े हाल में गए। यहाँ मेजों पर चाय, फल और सिगरेटें रक्खी थीं। फैक्टरी के ट्रेड यूनियन अधिकारियों ने तफसील में फैक्टरी का इतिहास बताया और माडेल मजदूरों के उत्पादन बढ़ाने की कहानी से लेकर मजदूरों की सुविधा के लिए की गई तमाम चीजों का ब्यौरा बताया। जर्मनी के ट्रेड यूनियन साथियों ने इस फैक्टरी के मजदूरों के लिए एक लाल निशान दिया।

इसके बाद हम लोग बच्चों की नर्सरी (शिशु-गृह) देखने गए। फैक्टरी के दक्षिण की तरफ बहुत बड़ी बिल्डिंग है। यहीं पर इस

फैक्टरी में काम करने वाली मजदूरिनें के बच्चे रहते हैं। जब माँ काम पर होती हैं तो पहले की तरह उसे अपने बच्चे को छिपाकर मशीन तक ले जाने, मिस्त्री की आंख बचाकर दूध पिलाने, कभी-कभी दुध मुँहे बच्चे को टट्टीघर या पेशाबघर में छोड़ आने की जरूरत नहीं। अब इन बच्चों की देखरेख के लिए सुरक्षित हवादार जगहें हैं। जहाँ "माँएँ" उनकी देखभाल करती हैं। एक कमरे में एक महीने के बच्चे हैं—पालने पड़े हुए हैं और उनमें प्यारे-प्यारे लाल, कोई खेल रहा है, कोई सो रहा है, कोई शिकायत के लिए रो रहा है। शिशु गृह की माँएँ व्यस्त हैं। किसी को दूध पिला रही हैं और फिर कभी दूसरे को उठाकर चुप कर रही हैं। दूसरे कमरे में दो महीने के बच्चे हैं, आगे तीन महीने के, फिर चार-पाँच और ६ महीने के। बड़े बच्चों के पास तरह-तरह के खिलौने हैं। हमारे काफ़िले की भीड़ से ये परेशान नहीं हैं। हमारी गोद में खेलते हैं—मुसकराते हैं—और इनकी मुस्कराहट भी दुनियाँ के दूसरे करोड़ों बच्चों की तरह है। चीन की तमाम जनता इन्हीं बच्चों की मुस्कराहट को चिरस्थायी करने के लिए लगी हुई है।

इसके बाद हम मजदूरों के रहने के क्वार्टरों में गए। अनब्याहे औरतों-मर्दों के रहने के लिए यह अस्थायी नए क्वार्टर बनाये गए हैं। इनके खाने खेलने आदि का सामूहिक प्रबन्ध है। एक बड़े कमरे में अभी ८-८ रहते हैं। हमने उनसे पूछा—इसमें असुविधा नहीं होती तो एक नौजवान मजदूर ने जवाब दिया—"राष्ट्र के नव-निर्माण में हम मजदूरों को ज़्यादा कुरबानी देनी है। यह स्थान अस्थायी है। हम जल्दी ही नए मकान बना लेंगे।" इसी कम्पाउण्ड के भीतर एक आराम गृह है जिसमें काम से थके हुए मजदूर आराम करते हैं। एक बड़ा पुस्तकालय और क्लब भी है। कम्पाउण्ड के भीतर ही बैस्केट बाल और वालीं बाल के लिए अच्छे मैदान हैं।

घूमते-घूमते हम लोग फैक्टरी के भीतर घुसे। जूट मिल के भीतर जाकर मशीनों को देखने, काम करते मजदूरों से बातें करने का पहला तजुर्बा था।

यह बहुत ही प्रभावशाली तजुर्बा था। मशीनों की गड़गड़ाहट, मशीनों पर व्यस्त आदमी और औरतें, स्वागत में मुस्कराती हुई उनकी आंखें, तेजी से चलते हुए हाथ, एक आंख मशीन पर और दूसरी अतिथियों पर, पूछे जाने वाले सवालों का नम्र उत्तर, जगताप और एक पोलिश मजदूर-साथिन का एक मशीन पर काम करने की क्रिया-सभी कुछ।

इस फैक्टरी में काम पर दो हजार से ज़्यादा मजदूर हैं और ६० फीसदी के क़रीब औरतें। नीले-कोटों और पायजामों पर सफेद कपड़े की ऐप्रन, मुँह पर डाक्टरों की तरह की साफी, कन्धों तक बाल, खूबसूरत भरे हुए चेहरे, हाथों में घड़ी और फुर्ती-देखने की चीज है।

मशीने कुछ पुरानी हैं, विदेशी। और ज्यादातर नई और चीन की बनी हुई। कमरे बड़े-रोशनी और हवादार। मिस्त्री-मास्टरों की धमकियाँ और चिल्लाहट नहीं। खुद काम करने वालों में इतना जोश और लगन है कि मिस्त्री-मास्टर दूसरे जरूरी काम करते हैं।

जब हम चले तो सैकड़ों हाथ उठकर विदा दे रहे थे और तालियाँ पिट रहीं थीं।

× × ×

१६ मई

पश्चिमी झील में।

हैंगचाऊ अपने प्राकृतिक सौंदर्य के लिए मशहूर है। मुक्ति से पहले के चीन में हैंगचाऊ बड़े बड़े सरकारी अफ़सरों, बड़े व्यापारियों के विहार का केन्द्र था। और हैंगचाऊ की मेहनतकश जनता का मुख्य पेशा इनकी चाकरी करना था। लेकिन मुक्ति के बाद हैंगचाऊ बदल गया है। हमारा अतिथिगृह पश्चिमी झील के किनारे है। सामने हरियाली से ढके ऊँचे-नीचे पहाड़ जो आसमान को छूते हुए लगते हैं। ऊपर काले-भूरे दौड़ते हुए बादलों का दृश्य और बहुत ही विस्तृत नीली झील...... । झील के बीच में सुन्दर द्वीपों में पुराने जमाने के महल बने हुए हैं। ये चीनी जनता की मेहनत करने की शक्ति, उनकी रचनात्मक कल्पना और कारीगरी के प्रतीक हैं। आज ये महल और करीने से सजे, रंग-बिरंगे फूलों से लदे उद्यान उनके हैं, जिन्होंने इन्हें बनाया। शंघाई और नानकिंग के मजदूरों के लिए, रेलवे और सूती मजदूरों के लिए, अब यही आराम गृह और छुट्टियाँ बिताने के केन्द्र हैं।

चीन के ट्रेड यूनियन संगठन की मेहरबानी से आज दुनियाँ के मजदूरों के नेता इस प्राकृतिक सौंदर्य की गोद में अपना दिन बिताने को आए हैं। ७० से ज़्यादा नावों पर हमारा यह क़ाफिला झील पर छा गया। डाँड़े चलते थे....... वह इंडोनेशिया के साथी हैं जो खुशी और जिन्दगी के गीत गा रहे हैं...... वह आस्ट्रेलिया और ब्रिटेन के साथी हैं जो मस्ती से पानी उछाल रहे हैं और गा रहे हैं, मेरी नाव पर यूसुफ़, जगताप, शेन और एक दुभाषिया लड़की है।

नाव और सुन्दर झील—यह मेरी पुरानी कमजोरी है और फिर चीन में जहाँ हर चीज खुश और अच्छी लगती है। बरसों बाद नाव

चलाने का मौक़ा मिला और मैंने खूब नाव चलाई। एक द्वीप नुमा स्थान पर नावें रुकीं। हम लोग उतर कर आए। झील का यह हिस्सा खिले हुए कमल के फूलों से ढका था। यहाँ हम लोग बहुत देर तक घूमते रहे। फिर नावें खेकर एक दूसरे द्वीप पर ले गए। यहाँ रेलवे मजदूरों का आरामगृह है। साथियों ने बताया कि यह महल पहले बहुत बड़े जमीदार का था। अब यह मजदूरों का है। अच्छे-सजे हुए कमरे, आराम करने के लिए बिस्तरे, खेलने के लिए मैदान, पढ़ने के लिए पुस्तकालय और वाचनालय, शतरंज, टेबुल टेनिस का सामान घने छायादार पेड़ और आज़ादी—यहाँ सब कुछ था।

मुक्ति से पहले मेहनतकश सपने में भी यहाँ आने की न सोच सकते थे। उनकी बीमारी और छुट्टियों में वही गंदी झोपड़ियाँ थीं जहाँ बीमारी और मौत के कीड़े पैदा होते और पलते हैं।

यहाँ हमें शंघाई के रेलवे मजदूर मिले गर्व के साथ वह हमें एक-एक कमरा दिखाते और बताते—यह उस ज़मीदार का बैठका था······ यह उसके सोने का कमरा था और यह वह जगह जहाँ उसके पुरखों की क़ब्रें हैं······ और अब हमने उनको इतना गहरा गाड़ दिया है कि कभी चीन के मेहनतकशों और ग़रीबों का शोषण न हो सकेगा······ उनकी आँखें चमक उठतीं और वह बताने लगते—यहाँ खड़े होकर वह अपनी रखेलियों के साथ झील के नज़ारे देखता था······ आदि।

चार-पाँच घंटे के बाद हम लौट कर आए। आज नाव इतनी चलाई कि हाथ थक गए और हथेलियों में छाले पड़ गए हैं।

दोपहर के बाद हम लोग बाजार घूमने गए। हैंगचाऊ सिल्क के लिए मशहूर है। अच्छी से अच्छी सिल्क······ संदल के चीनी पंखे और सिल्क पर कढ़ी हुई मार्क्स, एँजिल्स, लेनिन, स्तालिन, माओ, लिऊ शाऊ ची, चाऊ इन लाई, जूदे की तस्वीरें बिल्कुल पेंटिंग की तरह······।

आज हिन्द मजदूर-सभा के प्रतिनिधि-मंडल के नेता श्री मित्रा से काफ़ी देर तक बातें होती रहीं। वे अपनी यात्रा से बहुत प्रभावित थे। सक्सेना जी से भी कुछ देर बातें हुईं—वह तो बिल्कुल चीन वाले से हो गए हैं।

एक और नौ जवान साथी से परिचय हुआ। वह एशिया आस्ट्रेलिया के ट्रेड यूनियन ब्यूरो में काम करते हैं। दुबले, पतले, चश्मे के नीचे मामूली आँखें—लेकिन बातचीत में बहुत ही नम्र और मृदुल, नाम है उनका हूकाँग।

शाम को हम लोग एक बुद्ध मंदिर देखने गए। आसमान पर बादल थे। पहुँचते पहुँचते पानी बरसने लगा। काफ़ी देर तक वहीं रहे। लौटते में बहुत देर तक झील के चारों ओर ठंडी हवा में हम लोग घूमते रहे। हमारे साथ हमारी दुभाषिया साथिन टाँग थीं—यूसुफ़ उसे तान्या कहते और वह बार-बार उन्हें मना करती—"तान्या महान थीं, मुझे तान्या न कहिए।" टाँग अभी हमारे साथ दो ही दिन से थी लेकिन उसकी काम के प्रति, उद्देश्य के प्रति ममता और ईमानदारी इतनी तेज थी कि वह अपना प्रभाव डालती थी।

रात में हम लोगों ने एक चीनी आपरेटा देखा।

× × ×

हम लोगों के संरक्षक कामरेड चेन, जो हमेशा व्यस्त दिखाई पड़ते और लगातार सिगरेट पीते रहते, रात में ही सामान ठीक करने के लिए कह चुके थे—और उनका हुक्म न मानना नामुमकिन था, क्योंकि सबेरे ५ बजे वह जगायेंगे और ६ बजे हम शंघाई के लिए रवाना होंगे। शंघाई यहाँ से दूर नहीं। शंघाई चीन के मजदूर आँदोलन का क्राँतिकारी केन्द्र, चीनी कम्युनिस्ट पार्टी का जन्म स्थान······सोचता हुआ मैं सो गया।

---

२० मई

शंघाई में चार दिन

चीन के किसी अखबार में मैंने एक तस्वीर देखी थी—हिन्दुस्तान में, बहुत पहले। यह शंघाई के राष्ट्रीय वीर वाँग की थी। वाँग के चेहरे पर अडिग दृढ़ता की छाप थी, उसका मुँह खुला हुआ था, जैसे वह कुछ कह रहा हो, वैसे ही जैसे जूलियस फ़ूशिक ने कुछ कहा था, जेबराइल पेरी ने कुछ कहा था, जर्मन पार्टी के नेता थालमन ने कुछ कहा था, क्योंकि वाँग को घसीटने वाले दो हत्यारे से लगते थे जो निश्चय ही उसे मौत की तरफ़ ढकेल रहे थे। मेरी कल्पना में वाँग उसी तरह जीवित था जैसे फ़ूशिक, पेरी और थालमन और जैसे चाऊ यी मान……।

वाँग ने क्या कहा—यह मुझे नहीं मालुम। लेकिन फ़ूशिक ने जो कहा था वह मुझे याद है—"दोस्तो, मुझे तुम सबसे प्यार है—खबरदार!" जेबराइल पेरी ने जो कहा था वह मुझे याद है—"आज मैं सुनहरे भविष्य के लिए मर रहा हूँ" और मुझे याद है, शहीद रामप्रसाद बिस्मिल की कही गई आखिरी लाइनें—

"दरो दीवार पै हसरत से नजर करते हैं,
खुश रहो अहले वतन हम तो सफ़र करते हैं।"

वाँग की याद शंघाई की क्राँतिकारी परंपराओं से मिल सी गई है—मेरे अपने सोचने के ढंग में। शंघाई के क्राँतिकारियों से मिलने की तमन्ना तेज होती गई।

ठीक ११ बजे हम शंघाई पहुँच गए। स्टेशन पर जोरदार स्वागत हुआ शंघाई के ट्रेड यूनियन नेता लिऊ चाँग, चाँग जाई मिंग, चाँग ची,

शेन हान, आदि के अलावा युवकों, महिलाओं और सांस्कृतिक कार्य कर्ताओं के भी प्रतिनिधि कतारों में खड़े थे। महिलाएँ हाथों में गुलदस्ते देते हुए स्वागत कर रही थीं। स्टेशन पर, बाहर मैदान में हज़ारों आदमियों का मजमा था। लोगों के जोश का ठिकाना न था। हवा में टोपियाँ और रूमाल उछाले जा रहे थे। तालियों की गड़गड़ाहट से, कभी-कभी तो ज़ोरदार फौजी बैंड भी धीमा पड़ जाता था। शंघाई ट्रेड यूनियन के चेयरमैन कामरेड लिऊ चाँग ने हम लोगों के स्वागत में कुछ कहा—"इतने देशों के ट्रेड यूनियन प्रतिनिधियों का यहाँ जमा होना ही यह बताता है कि दुनियाँ के मेहनतकशों की दोस्ती अटूट है और यही हमारी ताक़त है……" लिऊ चाँग ने तालियों और नारों के बीच कहा।

प्रतिनिधियों की तरफ़ से कामरेड कालिबुनाव बोले। अपने छोटे से भाषण में उन्होंने चीन के नव-निर्माण के काम में होने वाली सफलताओं का ज़िक्र किया और उन्हें बधाई दी।

स्वागत के बाद हम लोग अतिथि-गृह में पहुँचाए गए। १५ मंजिल की बहुत बड़ी बिल्डिंग, बड़े-बड़े कमरे, तमाम ज़रूरतों के सामान से लैस।

× × ×

शाम को शहर में घूमने निकले। बाज़ारों से गुज़रते हुए हम औद्योगिक इलाक़ों में घुसे। जहाजी मजदूरों की बस्ती, फिर सूती मजदूरों की बस्ती…… शंघाई में मकानों की तंगी मालुम हुई। बस्तियाँ वैसी ही घनी और घर वैसे ही भरे हुए जैसे अपने कानपुर और बंबई में। हम इन बस्तियों से गुज़रते हुए एक बहुत बड़े कंपाऊंड में घुसे जहाँ नए क्वार्टर बनाए गये थे। शंघाई के पश्चिमी हिस्से में

जाऊ यौंग न्यू विला नाम से ये नए मकान मजदूरों के लिए बनाए गए हैं। १००२ घरों का यह ब्लाक उन चार में से है जो अगले तीन-चार महीने में पूरा हो जायेगा। इनमें २१००० लोग रह सकेंगे। पूरी स्कीम के मुताबिक १ लाख मजदूरों के रहने के लिए नए मकान थोड़े ही सालों में बन जायेंगे। हम लोगों ने भीतर जाकर मकानों को देखा। ५-५ के परिवारों के लिए दो बड़े कमरे, बाबरचीखाना, टट्टी (फ्लश लगा हुआ), बाथ रूम (नहाने का कमरा) और पीछे कपड़े धोने की अलग जगह। हर ब्लाक के सामने बच्चों के खेलने के लिए छोटे छोटे मैदान। मकानों का किराया मजदूरों की तनख्वाह का ६ फ़ीसदी होगा जो आज की तनख्वाहों के हिसाब से १०) महीना के क़रीब पड़ेगा। कोआपरेटिव सोसाइटी के लिए अलग बिल्डिंग है, अस्पताल के लिए अलग, क्लब और बाजार के लिए अलग बिल्डिंगें बनने को हैं। नहाने के लिए गरम और ठंडे पानी का इन्तज़ाम है। रास्तों पर बिजली की रोशनी का इंतज़ाम है।

यहाँ से लौटते हुए हम फिर शहर के बीच से गुजरे। टाँग हमारे साथ थी। वह बता रही थी—यह पीपुल्स पार्क है। शंघाई की बड़ी रैलियाँ और प्रदर्शन अब यहीं होते हैं...। यह नानकिंग रोड है...। यहीं पर ३० मई १६२५ को मजदूरों और विद्यार्थियों ने ब्रिटिश पुलिस के मुक़ाबले बैरीकेड खड़े किए थे...। १०० भाई शहीद हुये थे...। फिर शहर में आम हड़ताल हुई थी...। मजदूरों और विद्यार्थियों का खून से बना हुआ एका चीन के राजनैतिक आँदोलन के भविष्य के लिए बहुत महत्वपूर्ण था...। इतिहास के पिछले पृष्ठों को पलटती

हुई उसकी पैनी बुद्धि राजनैतिक टिप्पणी भी करती थी और मैं "हूँ-हूँ" करता हुआ चलती हुई मोटर में टेढ़े-मेढ़े अक्षरों में अपने नोट्स लिखता, सड़क की तरफ़ देखता, टाँग को भी देखता जाता— लेकिन दिमाग़ में बम्बई के जहाजियों की हड़ताल का नज़्ज़ारा चक्कर लगा जाता।

हम लोग बहुत देर तक घूमते रहे। रात में शंघाई के ट्रेड यूनियन संगठनों के सांस्कृतिक विभागों ने गाने-बजाने का बहुत अच्छा प्रदर्शन किया।

× × ×

२१ मई

सरकारी सूती मिल नं० १

आज एक सरकारी सूती मिल देखने गए। पूरे डेलीगेशन को कई हिस्सों में बाँट दिया गया था।

कारखाने के फाटक पर ही जोरदार स्वागत हुआ। हम लोग सीधे फैक्टरी में गए। जगताप और यूसुफ और टाँग साथ में थे। हम लोगों ने ब्लोरूम से शुरू किया। और एक-एक डिपार्ट होते हुए, मजदूरों से बातें करते आगे बढ़ते गए। बिनते में एक मशीन पर जगताप रुक गए। इस पर एक औरत मजदूर काम कर रही थी। मशीन को देखने के लिए जगताप आगे बढ़े। आटोमेटिक मशीन का धागा हाथ से तोड़ दिया। मशीन रुक गई। जगताप ने तागा जोड़कर मशीन फिर चला दी। मशीन पर काम करने वाली औरत मुसकरा तो रही थी लेकिन परेशान भी थी। जगताप के इस "प्रयोग" के कारण उसके उत्पादन में शायद देरी हो रही थी। जगताप और कुछ करने जा ही रहे थे कि मैंने इशारा किया और हम माफी माँगकर आगे बढ़े। यहाँ भी पुरानी मशीनें विदेशी और नई मशीनें चीन की बनी हुई थीं।

पूरे मिल में २००० मजदूर थे, जिनमें १४०० औरतें थीं। मजदूरों की लगन, उनकी तेजी देखने लायक चीज थी। कमरों में ठंढा रखने के लिए "एअर-कन्डीशन" किया गया था। रोशनी और हवा खूब थी।

फैक्टरी से लगा हुआ बहुत बड़ा खाने का हाल है। यहाँ मजदूर खाना खाते हैं। एक खाने का दाम करीब ५॥ आने पड़ता है। बिनते के मजदूर की आमदनी १७० रुपया महीना से लेकर १६० रुपया महीना तक है।

छोटे छोटे बच्चों के लिए यहाँ भी शिशु गृह है— जिसमें २४० बच्चे हैं। अनव्याहे मजदूरों के लिए रहने के क्वार्टर हैं जिनमें २०० से ज़्यादा मजदूर रहते हैं। मजदूरों के लिए आरामघर और आपरा के लिए इन्तजाम है। एक स्कूल है जिसमें ८५० से ज़्यादा लड़के पढ़ते हैं; मजदूरों के लिए शाम के स्कूल हैं जिनमें ११४६ शिक्षा पाते हैं। खेल कूद के सामान से लैस एक अलग बड़ा कमरा है।

फैक्टरी की मैनेजर एक औरत है जो सूती मजदूर थी और मुक्ति से पहले छापेमार लड़ाइयों में हिस्सा ले चुकी हैं। वह फैक्टरी की कम्युनिस्ट पार्टी की वह सेक्रेटरी भी हैं—उनका नाम चान हान जी था।

चान हान ने अपनी रिपोर्ट में इस फैक्टरी के मजदूरों द्वारा उत्पादन बढ़ाने की प्रगति बताई। उन्होंने कहा यह प्रगति मजदूरों की राजनैतिक आजादी का हिस्सा है। मुक्ति से पहले हमें जेलें और भूख मिलती थी। चुइंग की मिसाल देते हुए उन्होंने बताया कि मुक्ति से पहले उसे अपना पेट पालना मुश्किल था। लेकिन अब वह इतना कमाती है कि २ बड़ों और दो बच्चों का गुजारा मजे से हो जाता है।

काम के तरीकों में मजदूरों ने अपनी पहले से तरक्की कर ली है। १६५१ में ६४ फ़ी सदी मजदूर चार से लेकर ६ मशीनें देखते थे अब ६७ फी सदी ८ से लेकर १० मशीनें तक संभालते हैं। पहले जो १८ आटोमेटिक लूम संभालते थे अब वह २४ लूम संभालते हैं।

हम चीन के मजदूरों की इस प्रगति पर विस्मित होते हुए लौट आए।

× × ×

शाम को हम लोगों ने रंगने और छापने की मिल देखी। यहाँ पर सूती कपड़ों पर बनी छींट की डिजाइनें देखकर हम हैरान हो गए।

सभी जगह काम करने और सुधार करने का जोश है—जैसा अपने यहाँ नहीं दिखाई पड़ता।

---

२२ मई

आज सबेरे मजदूरों के सांस्कृतिक केन्द्र को देखने गए। शंघाई का यह मजदूर महल चीन के राष्ट्रीय दिवस, पहली अक्टूबर १९५० को खुला था। पिछले अक्टूबर तक रोजाना आने वालों की तादाद २००० से १८००० तक थी। २ लाख ८६ हजार ६ सौ मेहनतकश इसकी लाइब्रेरी में आए और इस बीच में १॥ लाख के क़रीब किताबें दी गईं।

मजदूरों के सुझाव पर इसे फिरसे बनाया गया और ६ महीने बाद १० मई को यह फिर से खुला। नीचे एक थियेटर है जिसमें ४०० आदमी बैठ सकते हैं। हर दिन २॥ बजे से फिल्में दिखाई जाती हैं और शाम को मजदूरों के सांस्कृतिक ग्रुपों के प्रदर्शन होते हैं। समय-समय पर उत्पादन बढ़ाने की टेकनीक पर लेक्चर आदि भी होते हैं। पहली मंजिल पर घुसते ही बड़ा सा हाल है जहाँ बैठने के लिए आराम कुर्सियाँ रक्खी हुई हैं। बायीं ओर एक बड़े हाल में शंघाई के मजदूरों के संघर्ष की कहानी की प्रदर्शनी है। इतिहास और अपने संघर्षों और शहीदों के लिए गर्व पैदा करने और शिक्षित करने का यह बहुत अच्छा तरीका है। मजदूर शहीदों के खून से सने हुए कपड़े भी यहाँ पर रक्खे हुए हैं।

दक्खिन की तरफ बहुत बड़ा वाचनालय है। तमाम तरह के सचित्र अखबार और मैगजीनें यहाँ हैं। एक दूसरे कमरे में खेल-कूद का सामान रक्खा हुआ है। एक दूसरे कमरे में सोवियत यूनियन और पूर्वी यूरोप के जनवादी देशों के मजदूरों के रहन-सहन के स्टैन्डर्ड की कहानी है और साथ में विभिन्न देशों के मजदूरों द्वारा शंघाई के मजदूरों को दी गई भेंटे शीशे की अलमारी में हैं, बीच में एक म्यूजिक हाल है जिसमें ५०० आदमी बैठ सकते हैं।

दूसरी मंजिल पर प्रदर्शनी-हाल है। शंघाई के रेलवे, सूती और इस्पात के मजदूरों ने अपनी पिछले साल की कामयाबियों का प्रदर्शन किया है। शंघाई के रेलवे मजदूरों ने पिछले साल २ अरब ३० करोड़ चीनी येन (४७०० येन बराबर एक रुपये के) की बचत की। स्थानीय इस्पात के मजदूरों ने पिछले साल हुआई नदी के बाँध के लिए फाटक बनाए। बिजली के मजदूरों की कामयाबियाँ प्रदर्शित हैं। हो चिन शिऊ का कपड़ा बुनने का तरीका भी दिखाया गया। यह तरीका अगर पूरे देश के सूती मिलों में काकयाबी से अपना लिया जाय तो राष्ट्र के ३,०४,६०,००,००,००० येन की बचत हो सकती है।

× × ×

हिन्दुस्तान से चलते वक्त साथी नारायनन ने शंघाई के एक दोस्त का पता दिया था। मैंने स्वागत कमेटी के साथियों को वह पता इसलिए दिया कि वे मुझे वहाँ तक पहुँचने में मदद कर दें। लेकिन उन्होंने शायद उनको यह खबर कर दी कि हिन्दुस्तान के कोई दोस्त उनसे मिलना चाहते हैं। आज शाम को वह हमारे यहाँ आईं। अन्ना वाँग—लम्बी, गोरी, नीली आँखें, कन्धों पर लटकते हुए कुछ घुंघराले भूरे बाल, उम्र ४० के करीब होगीं। थोड़ी ही देर में उनसे बिल्कुल अपनों की तरह बातचीत होने लगी। कामरेड यूसुफ और जगताप भी थे। अन्ना जर्मन हैं और चीन में १६-१७ साल हुए आई थीं। चीन के राष्ट्रीय आजादी के संघर्ष में अन्ना ने अनेक तरीके से प्रमुख हिस्सा लिया है। वह चीनी हो गई हैं। आजकल मैडम सनयात सेन की सेक्रेटरी हैं। येनान के मुक्त इलाकों से लेकर चुंगकिंग की शांति वार्ता तक में वह रही हैं।

हिन्दुस्तान के राष्ट्रीय आंदोलन से उन्हें काफी दिलचस्पी है और उन्हें यहाँ की हालत का परिचय भी है। बहुत देर तक अमर-शहीद डाक्टर कोटनीस के साथ काम की बातें बतातीं रहीं। फिर उन्होंने

कोमितांग जमाने में शहरों में जनता के बीच काम करने के तजुर्बे बताए। उनका विश्वास है कि उनकी परिस्थितियों में गरीबों और मेहनतकशों के बीच शिक्षा फैलाना, उन्हें लिखने पढ़ने के साथ साथ अखबारी दुनिया के बीच लाकर उनके राजनैतिक ज्ञान और चेतना को तीव्र करना बहुत ही अहम और महत्वपूर्ण था। उन्होंने कहा—ऐसे काम भी पुलिस की निगाहों से नहीं चूकते— शिक्षा के लिए कभी हम अपनी किताबें इस्तेमाल करते थे, कभी कोमितांग की ही। लेकिन उनके द्वारा प्रगतिशील विचार जरूर फैलाते थे। उन्होंने बताया कि "चीनी वेलफेयर इन्स्टीच्यूट" (जिसकी वह सेक्रटरी और मैडम सनयात सेन प्रधान हैं) की एक "नर्सरी" (शिशु गृह) है यह एक प्रयोगात्मक प्रयास है। उद्योगों और सरकारी संगठनों में काम करने वाली माँओं के २०० बच्चे यहाँ रहते हैं। उन्होंने आगे बताया कि कैसे बच्चों की शिक्षा और स्वास्थ्य की देखरेख होती है। वह डाक्टर अटल का किस्सा बताने लगीं। जब वह शंघाई के इस शिशु-गृह को देखने गए। छोटे-छोटे बच्चों ने अपने "हिन्दुस्तानी चाचा" का स्वागत कैसे किया। हर देश के "चाचा" और "चाचियाँ" इन बच्चों से मिलने आते हैं।

हिन्दुस्तान के दोस्तों के लिए उन्होंने एक और खबर दी। बेटी ग्राहम नामकी ब्रिटिश महिला जो हिन्दुस्तान से चीन आई थी— उनका एक साल पहले देहाँत हो गया। वह कलकत्ता में स्नेहांशु आचार्य के साथ रहती थीं। और प्रगतिशील आंदोलनों में उनकी दिलचस्पी थी।

बहुत देर तक बातों के बाद वह विदा हो गईं। शायद कल फिर उनसे मुलाकात हो।

२३ मई

शंघाई का मजदूर-आँदोलन

आज सबेरे ट्रेड यूनियन के दफ्तर में तमाम प्रतिनिधियों की मीटिंग में शँघाई के ट्रेड यूनियन नेताओं ने शंघाई के मजदूर-आँदोलन और उसके तजुर्बों पर अपनी रिपोर्टें दीं। उन्होंने हम लोगों के सवालों के जवाब भी दिए। शँघाई की ट्रेड यूनियन कौंसिल के प्रधान कामरेड लिऊ चाँग ने शँघाई के अंतर्राष्ट्रीय महत्व और मजदूर-आँदोलन की परंपराओं को बताते हुए कहा :

शँघाई हमारे देश का सबसे बड़ा शहर है। १९वीं सदी में ही साम्राज्यवादियों और चीन के पूँजीपतियों ने यहाँ कारखाने खोलने शुरू कर दिए थे। शँघाई के मजदूर-वर्ग के संघर्षों का इतिहास भी इतना ही पुराना है। कम्युनिस्ट पार्टी के जन्म से पहले मजदूरों की अपने आप उठने वाली आर्थिक लड़ाइयाँ होती थीं। कम्युनिस्ट पार्टी के जन्म के समय से ही शंघाई का मजदूर-वर्ग कम्युनिस्ट पार्टी की रहनुमाई में रहा है। ३० साल के लंबे क्राँतिकारी इतिहास में हमारा आँदोलन और हमारा रास्ता आसान और सीधा नहीं रहा। हमें दमन का मुक़ाबला करते हुए बड़ी बड़ी क़ुरबानियाँ देनी पड़ी हैं।

अपने हितों की रक्षा के लिए और मुक्ति के लिए अपने बीच में एकता लाने के लिए शँघाई के मजदूरों ने दृढ़ता के साथ अपनी लड़ाइयाँ चलाई हैं। कू चेन हुँग, वाँग शाऊ हुआ, लिऊ हुआ, माओ ली हुंग लियोंग जेनदा, वाँग जियाओ हो, और अनेक शहीदों ने इस संघर्ष में अपने खून की आखिरी बूँद तक दे दी। साम्राज्यवादी दुमन के

बावजूद उन्होंने चीनी क्रांति के मुख्य मोर्चे, चीनी जनता के क्रांतिकारी हथियारबन्द संघर्ष से, इन लड़ाइयों को जोड़ा और साम्राज्यवाद, सामंतवाद और प्रतिक्रांतिवादी पूँजीपतियों को गहरी चोटें दी हैं। मुक्ति के समय शँघाई के मजदूर-वर्ग ने बाअसर तौर पर अपनी कार्यवाहियाँ मुक्ति-सेना के साथ जोड़ीं और च्यांगशाही की शहर को बरबाद करने की तमाम कोशिशों को बेकार कर दिया। मुक्ति के बाद अमरीकी साम्राज्यवादियों और च्यांगशाही की बमबारी और आर्थिक घेरेबंदी का भी मजदूरों ने डटकर मुक़ाबला किया…।

शँघाई में ११४०८७८ मजदूर हैं। ६०८४४३ मर्द और २३२४३५ औरतें। इनमें ५२३१३४ (४८.८%) औद्योगिक मजदूर हैं। १६४१८३ (१७%) बाजार कर्मचारी, १६६१३० (१४.५%) मानसिक श्रम करने वाले, १२६५२६ (११.०%) यातायात मजदूर, ५४१६५ (४.८%) राज मजदूर, और ७३७०७ (६.८%) दस्तकारी के मजदूर हैं।

इनमें सूती मजदूरों की संख्या २१२२२६ है। इनका बहुमत है। रेलवे मजदूर ११३८२ और शिक्षक ३२२३६ हैं।

शँघाई में २३ औद्योगिक ट्रेड यूनियन संगठन हैं। इनके नीचे ४५३३२ संगठन हैं। मजदूरों का संगठन उद्योगों के आधार पर है। मेंमबर-शिप फीस तनख्वाह की १ फीसदी है। केन्द्रीय ट्रेड यूनियन कौंसिल के १६ एरिया आफ़िस हैं।

पिछले २॥ बरसों में ट्रेड यूनियनों द्वारा चलाए गए स्कूलों में ७२३६६ कार्यकर्ताओं को ट्रेनिंग दी गई। इनमें से १३५६३ विभिन्न सरकारी और शासन के महकमों में जिम्मेदारी की जगहों पर काम करने के लिए भेजे गए। शँघाई के सरकारी कारखानों में अभी इसी तरह १०३६ डाइरेक्टर, मैनेजर वगैरह बनाए गए।

मुक्ति के पहले शंघाई के मजदूरों को, तमाम देश के मजदूरों की तरह शिक्षा पाने का अवसर न था। सूती मजदूरों में ८० फ़ीसदी अपढ़ मजदूर थे। मुक्ति के बाद जन-सरकार और कम्युनिस्ट पार्टी की सहायता से बहुत तबदीली हो गई है। क़रीब-क़रीब सभी संगठित मजदूरों को राजनैतिक शिक्षा मिल चुकी है। राजनैतिक शिक्षा में सोवियत यूनियन की कम्युनिस्ट पार्टीका इतिहास, चीन की कम्युनिस्ट पार्टी का इतिहास, माओ से तुँग के प्रमुख लेख भी शामिल हैं। शुरुआती शिक्षा के क्लासों में २२२६५४ मजदूर हिस्सा ले रहे हैं। चीनी भाषा सिखाने के "ची चिन हुवा के तरीके" को लागू करने की तैयारी हो रही है।

अपने काम के बाद जो लोग टैकनिकल शिक्षा पाते हैं—उनकी तादाद ७५६६२ है। एक टैकनिकल स्कूल स्थापित करने की भी योजना है जिसमें ५००० मजदूर शिक्षा पायेंगे।

पिछले तीन बरसों में ८० लाख किताबें और मैगजीनें प्रकाशित की गईं। दैनिक मजदूर की १ लाख प्रतियाँ छपती हैं।

पूरे शहर में आमोद-प्रमोद के ४ केन्द्र हैं। औद्योगिक ट्रेड यूनियनों ने इस तरह के ६ और केन्द्र बनाए हैं। मजदूरों के सांस्कृतिक और आर्ट संगठनों की संख्या ३४५५ है और इनमें रोजाना ५६५२७ मजदूर हिस्सा लेते हैं।

राजनैतिक और साँस्कृतिक चेतना के बढ़ने के साथ-साथ उत्पादन के क्षेत्र में जबर्दस्त प्रगति हुई है। लिऊ चौंग ने इसके भी आँकड़े दिए और बताया कि मुक्ति के पहले दिन में कई बार चीजों के दाम घटते बढ़ते थे। मुक्ति से पहले पेट भरने तक को आमदनी न होती थी।

लेकिन अब आम तौर से अपने बाल बच्चों सहित काफी खाते हैं, नए कपड़े खरीदते हैं और-आमोद प्रमोद पर खर्च करने के लिए बचा लेते हैं। बीमा-कानून के बन जाने के बाद से तो मजदूरों के बुढ़ापे, बीमारी, मौत, चोट और बच्चा पैदा करने आदि की तमाम मुश्किलें हल हो गई हैं। ६४० कारखानों के ३१०४८८ मजदूर, जिनमें १४५७१३ औरतें हैं, बीमा-कानून की सुविधाओं से फ़ायदा उठा रहे हैं।

शंघाई ट्रेड यूनियन ने हैंगचाऊ में माडेल और बूढ़े मजदूरों के लिए दो आराम-गृह बनवाये हैं। १६५१ में २२६६ मज़दूरों ने वहाँ अपनी छुट्टियाँ गुजारीं। स्थानीय ट्रेडयूनियनों ने इसके अलावा ७६ आराम गृहें बनवाईं। मजदूरों के लिए १२ अस्पताल स्थापित किए गये जिनमें १३१८ चारपाइयाँ हैं। ५५६ फैक्टरियों में क्लिनिक हैं। २८७८ मजदूरों को स्वास्थ्य-रक्षा के विशेष काम की ट्रेनिंग दी गई।

मजदूरों की २६१ सहयोगी संस्थायें हैं। ५२८४८० मजदूर इसके मेम्बर हैं। ११०००००००००० येन इनकी पूँजी है। इनमें ३७६४००००००००० येन की आमदनी हुई और ३२८२०००००००० येन बचा लिए गए जो बिचवानी के लोग पाते थे।

मजदूरों के बच्चों के लिए ६७ स्कूल खोले गए। इनमें ३४६०४ बच्चे पढ़ते हैं। २०११८२ मजदूरों के बच्चे सरकारी और दूसरे स्कूलों में शिक्षा पा रहे हैं। छोटे बच्चों के लिए १४७ शिशु-गृहों का निर्माण किया गया। इनमें ११००० से ज़्यादा बच्चे पाले पोसे जाते हैं, जब इनकी माँएँ राष्ट्र निर्माण के दूसरे धन्धों में लगीं रहती हैं।

अमरीकी हमले के खिलाफ कोरिया की मदद के लिए उत्पादन बढ़ाने के अलावा शंघाई के मज़दूरों ने १७६५००००००००० येन हवाई जहाज खरीदने के लिए दिए। इस रकम से १२० हवाई जहाज खरीदे जा सकते हैं।

का० लिऊ ने खतम करते हुए कहा— यह अभी शुरुआत है अगर आप लोग अगले साल आयेंगे तो हम कामयाबियों की और अच्छी रिपोर्ट दे सकेंगे।

कामरेड लिऊ! शंघाई के क्रांतिकारी मजदूरों! पिछले २॥ बर्षों का तुम्हारा रेकार्ड सचमुच महान है और जरूर शंघाई के मजदूर-वर्ग के नेतृत्व में, चीन की कम्युनिस्ट पार्टी और महान माओ के नेतृत्व में चीनी जनता जल्दी ही इससे कहीं ज्यादा कामयाबियाँ हासिल करेगी! शंघाई के मजदूर-वर्ग को हमारा लाल सलाम!

कामरेड लिऊ से पहले शंघाई के मेयर और शंघाई कम्युनिस्ट पार्टी के मन्त्री का० चेन यी ने शंघाई मजदूर-आंदोलन के तजुर्बों पर रिपोर्ट दी। चेन यी पार्टी की केन्द्रीय कमेटी के मेम्बर और मुक्ति सेना के प्रमुख कमाँडरों में से हैं। उनका व्यक्तित्व प्रभावशाली और आकर्षक है। उनकी रिपोर्ट आसान और शिक्षात्मक थी— उन्होंने बताया— शंघाई का मजदूर-वर्ग देश के मजदूरों में पहला था जिसने अपनी राजनैतिक पार्टी— कम्युनिस्ट पार्टी— को अपनाया। सामन्ती शोषण और और साम्राज्यवादी लूट के खिलाफ शंघाई के मजदूर-वर्ग का जवाब चीन की कम्युनिस्ट पार्टी का संगठन था। मार्क्सवाद और लेनिनवाद इस पार्टी का हथियार था और शंघाई का मजदूर वर्ग इसके पहले रेक्रूट! बिना कम्युनिस्ट पार्टी के और बिना मजदूर-वर्ग के जो कम्युनिस्ट-पार्टी का संगठन कर्ता है, चीन अपनी जंजीरें नहीं तोड़ सकता था।

कम्युनिस्ट पार्ट के निर्माण के साथ ही यह और भी अहम था कि पूँजीवादी, निम्न पूँजीवादी, सामन्ती विचारधाराओं के खिलाफ मजदूर-वर्ग की विचार धारा और रूस के तजुर्बों, बोल्शेविज्म के

आधार पर राष्ट्रीय आज़ादी का आंदोलन आगे बढ़ाया जाय। पार्टी के निर्माण और मजदूर वर्ग की चेतना बढ़ाने के बाद पार्टी का विकास संयुक्त मोर्चे के ज़रिये हुआ। मजदूर वर्ग के संयुक्त मोर्चे में शामिल होने के मानी थे कि "मजदूर वर्ग न सिर्फ अपने हितों की हिफाजत के लिए लड़े, बल्कि तमाम जनता के लिए लड़े शंघाई के मजदूर वर्ग ने हर आंदोलन में सहयोग किया। फौजियों के साथ सहयोग किया। प्रतिक्रियावादियों द्वारा संचालित संगठनों में गए और धीरे २ हर आन्दोलन का नेतृत्व प्राप्त कर लिया।

१६२७ के बाद—महान क्राँति के साथ गद्दारी होने के बाद—चीन के बड़े बड़े शहरों में साम्राज्यवादी और प्रतिक्रियावादी ताकतें ज़्यादा ताकतवर थीं। बड़े पैमाने पर आँदोलन के विकास के लिए किसान इलाकों में जाना पड़ा। जहाँ प्रतिक्रियावादियों की ताक़त शहरों के मुक़ाबले कमजोर थी। शहर के मजदूर समझते थे कि क्रांति की जीत के लिए अपनी फौज को मदद करनी है और उसे मजबूत करना है। उन्होंने अपने बीच से अच्छे लोगों को उनके परिवारों को अपनी फ़ौज में भेजा। उनमें से बहुत से मुक्ति-सेना के प्रमुख सदस्य हो गए। मजदूरों ने डाक्टरी सामान और दवायें भेजीं। डाक्टरों और नर्सों को भेजा। उस वक्त मुक्ति-सेना के शुरुआती जमाने में इन तमाम चीजों की सख़्त जरूरत थी। किसान इलाकों के ये संघर्ष सिर्फ किसानों के संघर्ष नहीं बल्कि पूरे देश की मुक्ति के संघर्ष थे। किसान संघर्षों के इलाकों की खबरें, राजनैतिक जीतों की खबरें, पहुँचाने के लिए, उनका विद्यार्थियों और मेहनतकश जनता के बीच प्रचार करने का काम मजदूर-वर्ग ने किया।

मुक्ति सेना के एक कमाँडर होने के नाते मुझे अच्छी तरह मालुम है कि शंघाई के मजदूर-वर्ग ने अपने हथियारबन्द संघर्ष के विकास के लिए क्या किया है।

मुक्ति के बाद उत्पादन बढ़ाने, कोरिया के देशभक्तों की मदद करने में भी हमारे मजदूर-वर्ग ने बड़ा हिस्सा लिया। राजनैतिक चेतना के कारण मजदूर अच्छी तरह जानते हैं कि आज चीन में मजदूर-वर्ग अगुवा वर्ग है और इसलिए राष्ट्र के निर्माण में उसे ही फिर सबसे ज़्यादा कुरबानी देनी है।

आखिर में कामरेड चेन यी ने कहा कि शँघाई और चीन का मजदूर-वर्ग आर्थिक पुर्ननिर्माण और विश्व-शाँति के संघर्ष में सोवियत यूनियन के नेतृत्व और अन्तर्राष्ट्रीय मजदूर-आँदोल के समर्थन के मूल्य को समझता है। कामरेड माओ हमें लगातार सिखाते रहते हैं—"बिना सोवियत यूनियन की मदद और हमदर्दी के, बिना दूसरे देशों के मजदूर-वर्ग की मदद और हमदर्दी के चीनी क्राँति की जीत नामुमकिन थी। और भविष्य में आर्थिक निर्माण और शाँति की रक्षा का काम भी बिना सोवियत यूनियन और दूसरे देशों के मजदूरों की मदद और हमदर्दी के असंभव रहेगा।"

माओ की यह शिक्षा दुनिया भर के मजदूरों के लिए उतनी ही सच्ची है जितनी शँघाई और चीन के मजदूरों के लिए।

तीन-चार घंटे बाद हम लोग लौटकर आए। सभी लोग शंघाई के मजदूरों की कामयाबियों की रिपोर्ट की वाहवाही कर रहे थे। चीनी मजदूर-वर्ग की यह प्रगति चीन में सच्चे जनवादी राज्य की स्थापना से जुड़ी हुई है। बिना राज्य की ताक़त के मजदूर-वर्ग और दूसरे शोषित वर्गों की प्रगति असंभव है।

× × ×

आज शाम को अन्ना वाँग फिर आ गईं। उन्होंनें नरायनन के लिए "चाइना रिकान्स ट्रक्स" की एक प्रति भेंट की। बेटी ग्राहम ने हिन्दुस्तान में कुछ फोटो खींचे थे—वह दिए। आज हम उनके साथ

बाज़ार में घूमे। शँघाई में सरकारी डिपार्टमेंट स्टोर बहुत बड़ा है। मूल्यों पर नियंत्रण करने का तरीका यह है कि इन स्टोरों पर वह तमाम चीजें बिकती हैं जो बाजारों में। इन स्टोरों पर क़ीमतें तै होती हैं। बाजार के दूसरे लोग अपनी कीमतें इन्हीं स्टोरों के मुताबिक घटाते बढ़ाते हैं।

जिन्दगी की ज़रूरत की चीजें सस्ती हैं। लेकिन ऐश की चीजें मँहगी। बाज़ार में ज्यादातर माल चीनी है। विदेशी चीजें भी हैं लेकिन वह ज़्यादा नहीं और मँहगी भी हैं। फाउन्टेनपेन और घड़ियाँ चीनी तो हैं लेकिन विदेशी भी काफ़ी मात्रा में हैं।

सड़कों पर भिखारी या जूतों में पालिश के लिए दौड़ने वाले बच्चे नहीं दिखाई पड़ते। दुकानों में कफी भीड़भाड़ है। लेकिन कीमतें सबकी "एक दाम" चाहे बच्चा जाये या बड़ा। चाहे दियासलाई लीजिए या सिगरेट या कोई ज़्यादा मूल्य की चीज—सबकी रसीद मिलेगी।

दो तीन घंटे शंघाई की सड़कों पर चक्कर लगाने के बाद हम लौट आए। अन्ना बहुत मेहरबान थीं—और बहुत अच्छी। हम लोगों को छोड़कर वह बस पर चढ़ कर चली गई।

हम कल पेकिंग के लिए रवाना होंगे।

शंघाई-पेकिंग ट्रेन पर।

आज सबेरे हमारा काफ़िला पेकिंग के लिए रवाना हुआ। प्रोफ़ेसर शाह, उनकी सेक्रेटरी और सरदार सिंह और आस्ट्रेलिया के ३ साथी शँघाई में ही रुक गए। वे यहाँ से कैंटन जायेंगे और फिर हाँगकाँग।

ट्रेन पर मिलने वाले समय को इस्तेमाल करने के लिए मैं आज कई साथियों से बातें करता रहा। पेकिंग में सरकार और ट्रेड यूनियन के नेताओं ने चीन की मौजूदा अर्थ प्रणाली, राज्य प्रणाली और मजदूर आँदोलन पर बातें की थीं।

सक्सेना जी की डायरी, आल चाइना फेडरेशन आफ लेबर के संगठन मंत्री चेंग, मिश्रा वगैरह से मालुम हुआ।

—आर्थिक रूप से चीन पिछड़ा हुआ मुल्क था। च्याँग के प्रतिक्रियावादी शासन में चीन की प्रगति तो हुई नहीं, उल्टे तबाही और बरबादी बढ़ती गई। लड़ाई के जमाने में कृषि-उत्पादन २५ फ़ीसदी गिर गया। मामूली उद्योगों का उत्पादन ३० फ़ीसदी गिरा और लोहा-इंजीनियरिंग वगैरह का उत्पादन ७० फ़ीसदी। च्याँग के जमाने में मुद्रा-स्फीति की समस्या इतनी गंभीर हो गई कि चीजों के दाम सैकड़ों गुना बढ़ गए। इन हालतों में उत्पादन और व्यापार चलना नामुमकिन था। सट्टेबाजी बाजार में आमदनी का मुख्य जरिया था। सट्टेबाजों की तादाद बहुत बढ़ गई थी।

—मुक्ति के बाद आर्थिक मोर्चे पर उद्योग और व्यापार को फिर से अपनी सामान्य हालत में लाना मुख्य काम था। मुद्रा-स्फीति को खतम करना, कीमतों को स्थायी बनाना, सट्टेबाजी मिटाना और साथ

में किसानों के रहन-सहन की हालत में सुधार करना, कृषि-सुधार के जरिए उनकी खरीद की ताक़त बढ़ाना, कृषि-उत्पादन बढ़ाना, उद्योगों में सामान्य हालत लाकर मजदूरों के रहन-सहन की हालत सुधारना—यही वह बुनियादें थीं, जिनको खड़ा कर चीन बड़े पैमाने के आर्थिक निर्माण और औद्योगीकरण की तरफ़ बढ़ सकता था।

—मुद्रा-स्फीति को रोकने और कीमतें स्थायी करने के लिए ३ क़दम उठाए गए—बजट में घाटा पूरा करने के लिए नोट छापने की जरूरत खतम करने के लिए सामान्य बजट बनाने की कोशिश और आर्थिक और पूँजी के क्षेत्रों में कंट्रोल और लीडरशिप का एकीकरण। यह १६५२ में पूरा हो जायेगा। चीन के इतिहास में यह अनहोनी कामयाबी है। दूसरा क़दम जिन्दगी की जरूरत की चीजों पर सरकार का कन्ट्रोल, जिससे बाजार में उचित सप्लाई बनी रहे। कपड़ा, सूत वग़ैरह सरकार के द्वारा सप्लाई होता है। पिछले दो सालों में इन चीजों के दाम स्थायी हो गए हैं। चोर बाजारी और खरीद की सीमा खतम हो गई है। तीसरा क़दम, सरकारी बैंकों के जरिए करेंसी पर कंट्रोल। सरकारी दफ़्तरों और कारखानों की नक़दी आमदनी और खर्चा सरकारी बैंक के जरिए ही होता है। इससे नोटों पर कंट्रोल रहता है और बाज़ार स्थायी रहता है।

—इन क़दमों से बहुत फ़ायदा हुआ। मार्च १६५० के बाद से कीमतें स्थायी रहीं। दिसंबर १६५० तक कीमतें १५% गिरीं। लेकिन १६५१ के आख़िर तक फिर १४% बढ़ गईं। १६५२ के ४ महीनों में ५% और बढ़ीं। कीमतें स्थायी हो जाने से सट्टेबाजी खतम हो गई। उद्योग और व्यापार सामान्य स्थिति पर आ गए। साथ ही कृषि-उत्पादन भी बढ़ाने के लिए क़दम उठाए गए।

—पिछले तीन महीनों में सरकारी दफ़्तरों और कारखानों में बरबादी, नौकरशाहियत और घूसखोरी के खिलाफ़ जोरदार आंदोलन

किया गया। व्यक्तिगत कारखानों में घूस, सरकारी सम्पत्ति की चोरी, टैक्स न देना, सरकारी ठेकों में धोखेबाज़ी और सरकार की आर्थिक सूचनाएँ चुराने के खिलाफ़ ज़ोरदार कामयाब आँदोलन चलाया गया। ३ और ५ के खिलाफ़ इन जन-आँदोलनों ने चीन की नयी जनवादी अर्थ-प्रणाली को मज़बूत बुनियादों पर खड़ा कर दिया है।

—पिछले दो तीन सालों में चीन का कृषि-उत्पादन लड़ाई के पहले की स्थिति में पहुँच गया है। पहले अनाज और रुई बाहर से आती थी। अब उसकी ज़रूरत नहीं। रुई का उत्पादन लड़ाई के पहले के उत्पादन से १/३ ज़्यादा हो गया है। कृषि-उत्पादन के बढ़ाने में सबसे ज़्यादा फैसलाकुन देन मुक्ति के बाद कृषि-सुधारों की है, जिसके द्वारा ज़मीन जोतने वालों में बाँट दी गई। अब किसान ज़मींदार के लिए काम नहीं करते। वह सामंती शोषण के शिकार भी नहीं हैं। अब वह अपने लिए पैदा करते हैं और उनमें ज़बर्दस्त जोश है। इसके अलावा सरकार क़र्ज़े, फर्टिलाइज़र, नए औज़ार, बीज और जानवर देकर, सिंचाई आसानियाँ पैदा करके, उनकी पैदावार खरीद कर पूरी मदद करती है। कृषि-उत्पादन बढ़ाने में इन तमाम ने बहुत मदद की है। इसके अलावा किसान परस्पर सहायता टीम और सहयोगी संस्थायें बनाकर उत्पादन बढ़ा रहे हैं।

इन सबसे किसानों की खरीदने की ताकत बढ़ी है और उनकी रहन-सहन की हालत में सुधार हुआ है।

पिछले ३ सालों में बुनियादी उद्योगों में उत्पादन दुगना हो गया है। लेकिन अभी सबसे ऊँची चोटी पर नहीं पहुँचा। ज़्यादातर उद्योगों में उत्पादन लड़ाई के पहले के उत्पादन से ज़्यादा है। उत्पादन बढ़ने की वजह सरकार सही आर्थिक नीति और मज़दूरों में देशभक्ति पूर्ण जोश है। टेकनीक में कमज़ोर होते हुए पूँजीवादियों के मुक़ाबले

ज़्यादा अच्छा समाजी सिस्टम होने के कारण ही इस तरह की प्रगति मुमकिन हुई है।

उद्योग धंधों में जान आ जाने के कारण बेकारी खतम हो गई है। आज स्किल्ड मजदूरों की कमी महसूस होती है। सरकार की तरफ़ से ट्रेड यूनियन और बीमा क़ानून लागू किए गए हैं—जिससे मजदूरों के रहन-सहन में बहुत इजाफा हुआ।

व्यापार के क्षेत्र में भी बुनियादी तब्दीली आई है। नये हालात में सरकारी व्यापारिक संगठनों, प्राइवेट व्यापारिक एजेंसियों और सहयोगी व्यापार के बीच काम का बँटवारा और एक दूसरे से सहयोग ही कामयाबी की कुँजी है।

विदेशों से व्यापार पिछले दो सालों में बढ़ा है। हालाँकि साम्राज्यवादियों ने आर्थिक रोकों की दीवालें खड़ी की हैं लेकिन तो भी सोवियत यूनियन और यूरोप के जनतंत्रों से व्यापार १९५० के मुक़ाबले १९५१ में दुगना हुआ।

चीन की अर्थ-प्रणाली में पाँच तरह की अर्थ-प्रणाली साथ-साथ काम करती हैं। चीन की नई जनवादी हालत में यह कठिन और उलझन भरा काम बड़ी कामयाबी से आगे बढ़ रहा है। राष्ट्रीयकरण की गई सरकारी कारखानों की अर्थ-प्रणाली जो समाजवादी है। व्यक्तिगत पूँजी की अर्थ-प्रणाली, सरकार और व्यक्तिगत पूँजी के सहयोग से चलने वाली अर्थ-प्रणाली, सहयोगी अर्थ-प्रणाली और व्यक्तिगत छोटे पैमाने पर चलने वाली।

इन पाँचों में सरकारी सबसे ज़्यादा मजबूत है। और रोजमर्रा की जिन्दगी सभी का नेतृत्व करती है। किसानों और दस्तकारों की

व्यक्तिगत छोटे पैमाने की अर्थ-प्रणाली सबसे ज़्यादा प्रचलित है। इनमें से एक करोड़ ६० लाख किसानों और दस्तकारों द्वारा चलाई जाने वाली सहयोगी अर्थ-प्रणाली राष्ट्र की जिन्दगी में एक नई ताक़त बन गई है। राष्ट्रीय जीवन में व्यक्तिगत पूँजी का अब भी महत्वपूर्ण स्थान है और संख्या में राष्ट्रीयकरण किए गए कारखानों से ज़्यादा है। लेकिन समाजवादी अर्थ-प्रणाली राष्ट्रीय आर्थिक जीवन की सबसे ज़्यादा महत्वपूर्ण क्षेत्रों में हावी है।

× × ×

आज खाने के बाद जब लौट रहा था तो पोलैंड के साथियों के कमरे में शतरंज हो रही थी। शतरंज देखकर मैं रुक गया, फिर बैठ गया और फिर सोचने लगा और कब खेलने लग गया—यह याद नहीं। खेलते-खेलते शाम हो गई तब उठकर अपने कमरे में आया।

२५ मई

पेकिंग में।

आज ३ बजे पेकिंग पहुँच गए।

पेकिंग प्लेटफार्म के बाहर आ रहे थे। प्लेटफार्म पर एक बड़ी सी किताबों की दूकान थी जिसमें किताबें और मैगजीनें वगैरह रक्खी थीं। मैं खड़ा होकर कुतुहलवश किताबें और मैगजीन देखने लगा। कामरेड यूसुफ़ भी खड़े थे। टाँग साथ में थी।

यूसुफ़ ने पूछा—क्या इसे कोई देखने वाला नहीं है?

टाँग ने अपनी उँगली से इशारा करते हुए गोलक की तरफ़ निगाह उठाई—और कहा—यही सब कुछ है। जिसे कुछ लेना होता है इसी में डाल देता है। हम लोग बहुत हैरान हुए। साई, जो एक दूसरे साथी थे, उन्होंने चलते हुए कहा—और कामरेड यूसुफ़, इसमें कोई गलती नहीं होती। कभी-कभी हिसाब से ज़्यादा ही रक़म मिलती है, क्योंकि तुड़ाने वगैरह का अगर झंझट हुआ तो लोग ज़्यादा भी डाल देते हैं।

यूसुफ़ ने साई से हंसते हुए कहा—हमारे देश में हो तो किताबें, मैगजीन और गोलक तो क्या, रात में कोई स्टाल ही उठा ले जाये।

साई ने कहा—पहले हमारे यहाँ भी ऐसा ही होता लेकिन अब चीजें बदल रही हैं।

बातें करते-करते हम अतिथिगृह पहुँच गए।

× × ×

रात में हम एक फिल्म देखने गए। फिल्म क्या—औरतों के अंतर्राष्ट्रीय दिवस, ८ मार्च १९५० को चीन के इतिहास में हुई एक अनहोनी घटना की डाकूमेंटरी थी। यह अनहोनी घटना थी औरतों द्वारा लोकोमोटिव (रेलवे इंजिन) का चलाया जाना।

तीन क्यू यीन की यह कहानी चीनी औरतों के उस महान संघर्ष की कहानी है जो वह अड़चनों के बावजूद राष्ट्रीय जीवन के हर क्षेत्र में नए कार्यकर्ता पैदा करने के लिए कर रही हैं।

चीन में प्रगति के हर क्षेत्र में औरतों का विशेष स्थान है—वह मर्दों के साथ हमें हर जगह मिलीं। फैक्टरियों में, गाँवों में, रेलों पर, बसों और ट्रामों में, सरकारी दफ़्तरों और जन-संगठनों में।

टीन कुई योन देश की उन पहली औरतों में है जो रेलवे-इंजिन ड्राइवर बनीं।

टीन कुई योन पहले दाइरेन के रेलवे-डिपो में खाने के कूपन बेचती थी और उसकी जिंदगी का उद्देश्य एक अच्छे पति की खोज थी। लेकिन एक दिन रेलवे-मजदूरों के एक स्कूल में, जब वह राजनैतिक भाषण सुन रही थी, उसके कानों में आवाज पड़ी—

हालाँकि पूरे घर का काम-काज संभालना किसी फैक्टरी में काम करने से ज़्यादा आसान नहीं है लेकिन बहू हमेशा यही समझी जाती है, जैसे वह दूसरों की कमाई पर जीती हो। पुराना समाज मजदूरों के साथ दुर्व्यवहार करते थे। औरतें समाज में सबसे ज़्यादा शोषित थीं।

"सचमुच आजाद होने के लिए औरतों को सामाजिक श्रम में हिस्सा लेना चाहिए। सच्ची राजनैतिक और सामाजिक आज़ादी उन्हें तभी हासिल हो सकती है जब वे आर्थिक तौर पर आजाद हों।"

कुई यिन इन वाक्यों पर सोचती रहीं। मजदूरों के तरफ़ उसके रवैये में तबदीली आने लगी। एक दिन सोवियत फोटो की प्रदर्शनी में वह बड़ी देर तक एक युवती इंजिन ड्राइवर को देखती रही।

दाइरेन रेलवे विभाग ने औरतों में से रेलवे इंजिन ड्राइवर ट्रेन करने का फ़ैसला लिया। कुई यिन को ज्यों ही यह मालुम हुआ उसने भी अरज़ी दे दी।

जब उसके पिता को मालुम हुआ तो उन्होंने कहा—तू इसे सीख कर क्या करेगी। कुछ दिन और वहीं काम कर और फिर तेरी शादी हो जायेगी।

लोको मोटिव सेक्शन में काम करने वाले मर्द तो और ज़्यादा चुटकियाँ लेते—

"अच्छा, अगर और औरतें इंजिन चलाने लगेंगी तो मर्दों की फिर जरूरत ही क्या रह जायेगी?"

लेकिन कुई और उसके साथ की लड़कियाँ अपने इरादों पर क़ायम रहीं। कुई ने कहा—हम लड़कियां वह सब कुछ कर सकती हैं जो नौजवान कर सकते हैं। हमारी मदद के लिए पार्टी, नवजवान लीग और सोवियत विशेषज्ञ हैं।"

कठिन मेहनत और सोवियत विशेषज्ञ लिसाव की मदद से साल भर में लड़कियों का यह पहला बैच तैयार हो गया। इम्तहान में ६ में से ३ को ड्राइवरी और ३ को फायरमैन के लाइसेंस मिल गए।

८ मार्च को दाइरेन के रेलवे डिपो में हजारों की भीड़ जमा हुई और तालियों की गड़गड़ाहट के बीच मुस्कराती गर्व से भरी कुई यिन, वाँग जाव, यी कुई ने इंजिन चलाया।

आज कुई और उसकी साथिनों का पूरे देश में महान सम्मान होता है।

२६ मई

आल चाइना फेडरेशन आफ लेबर के दफ्तर में

आज दो बजे तमाम देशों के प्रतिनिधि आल चाइना फेडरेशन आफ लेबर के दफ्तर में इकट्ठा हुए।

लिऊ-निंग ई ए० सी० एफ़० एल० के उप-प्रधान, लम्बे, गोरे और चेहरे पर दृढ़ता की छाप लिए हुए खड़े हुए। वे डेलीगेशन के साथ साथ घूमे थे और दिन रात जागकर इस कठिन टूर को कामयाब करने में मदद दी थी। मैंने लिऊ को कभी ज़्यादा बोलते हुए नहीं पाया और बोलते वक़्त उनके चेहरे पर अजीब आकर्षण लिए मुस्कराहट सी आ जाती है— लेकिन बहुत ही क्षणिक दो उँगलियों के सिरे पर पूरे मुँह को ढकते हुए हल्के-हल्के गहरी कश लेकर सिगरेट पीने का उनका अपना स्टाइल है, उन्होंने कहा—

"आप सबने हमारी कोशिशों और कमियों को देखा है। हम आपकी आलोचना और सुझाव चाहते हैं। हमारी यही प्रार्थना है......"।

और वह बैठ गए।

हिन्दुस्तान के श्री मित्रा खड़े हुए— हम आपकी कामयाबियों को देखकर दंग रह गए हैं। आने से पहले खुद मेरे दिमाग में शुबहात थे, लेकिन कृषि सुधार की कामयाबी, हुआई नदी का बाँध, चीन में औरतों की प्रगति सभी ने मुझे आपके जनवादी समाज बनाने के प्रयत्नों की ईमानदारी सामने रख दी है। मेरा विश्वास है कि चीन

को शांति के साथ पुनर्निर्माण करने दिया जाय तो जल्दी ही वह दूसरे प्रगतिशील देशों से आगे निकल जायेगा…"।

मित्रा हिन्द मजदूर सभा के प्रतिनिधि मण्डल के नेता हैं।

आस्ट्रेलिया के नेता राइट ने कहा—"हमने अपनी आँखों से देखा है कि चीन में चीनी जनता का राज्य है। ३ साल के भीतर ही कृषि और उद्योग सामान्य पैमाने पर आ गए हैं।

चीन में शांति की भावना ज़बर्दस्त है और शांति आन्दोलन में नया चीन एक महान देन है।"

ईरान और अलजीरिया के मूसा ब्राहम ने कहा— "हमने चीन की कामयाबियों के बारे में बहुत सुना था लेकिन जो हमने अपनी आँखों से देखा वह उससे कहीं ज़्यादा है। राष्ट्रीय एकता, देशभक्ति और अन्तर्राष्ट्रीयता का समन्वय, शांति और न्याय के लिए दृढ़ता और सोवियत यूनियन के लिए प्यार— यह कोई चीन से सीखे।"

डेनमार्क के एबेल ने कहा— "बाइबिल में एक कहानी है। उसका सार है कि दुनियाँ में लोग मेहनत स्वर्ग के लिए करते हैं। लेकिन चीन में मैंने अजीब बात देखी— मुस्कराते, पसीने से तर, कठिन मेहनत करते हुए भी वह स्वर्ग नहीं जाना चाहते। चीनी स्वर्ग को खुद नीचे उतार रहे हैं…।"

बर्मा के थाकिन खिनजा ने कहा— "चीन में श्रम मजदूर वर्ग का है। बड़े आदमियों के महल अब जनता के हैं। पहले अनाज जमींदारों के घर जाता था, अब किसानों के घर। मजदूरों का श्रम युद्ध के लिए नहीं— शांति के लिए है। हुआई का बाँध, कोमिन्तांग देशभक्तों को गोलियों से भूनती थी। जन सरकार उनके स्मारक बनाती है……।"

लंका के सरनौंगर ने कहा—"आज तमाम एशिया चीन की तरफ़ देख रहा है। मुझे विश्वास है कि आजादी के आंदोलन में माओ-नीति तमाम एशिया को मुक्त कर देगी।

स्वीडेन के सिनादर ने कहा— गांवों, फैक्टरियों, स्कूलों, यूनीवर्सिटियों— सभी जगहों पर चीन शाँति के लिए निर्माण कर रहा है। यह बात अगर कोई यहाँ नहीं समझ सकता तो कभी नहीं समझ पायेगा।

सोवियत यूनियन के का० शिःशेंकों जब खड़े हुए तब काफी देर तक तालियाँ बजती रहीं। तालियों की गड़गड़ाहट के बीच उन्होंने कहा— "हम लोग मई दिवस की परेड कभी नहीं भूलेंगे। मई दिवस का प्रदर्शन, चीनी जनता की गर्व भरी कामयाबियों का प्रदर्शन था। मई दिवस का प्रदर्शन चीनी जनता की शांति की इच्छा और उसे कायम रखने के विश्वास का प्रदर्शन था। मई दिवस चीनी जनता का कम्युनिस्ट पार्टी, माओ जे तुँग, और जन-सरकार के प्रति प्यार का प्रदर्शन था......।

"हमने देखा है कि चीनी जनता का निर्माण कार्य खुशहाली के लिए है। हमने देखा है कि चीनी जनता में सोवियत देश के लिए प्रेम और आदर है। चीनी नवजवानों के तराने, उनकी मुस्कराहट और खुश-खुश आंखें भविष्य में उनके विश्वास की प्रदर्शक हैं।

"फैक्टरियों और खानों में, गांवों और मैदानों में, नहरों और बांधों पर चीनी जनता शाँति के लिए निर्माण कर रही है। चीनी जनता शांति चाहती है और युद्ध से नफ़रत करती है...।

चीनी जनता और उसके महान नेता,

माओ जे तुँग जिन्दाबाद !

हिन्दुस्तान के जतीन चक्रवर्ती ने हिन्दुस्तान और चीन के मजदूर वर्ग की एकता के लिए आल-चाइना फेडरेशन आफ लेबर को एक लाल झंडा भेंट किया।

जर्मनी, रूमानिया और इंडोनेशिया के नेताओं ने भी अपने विचार प्रकट किए और चीनी जनता की जीत में विश्वास प्रकट किया।

आखिर में लिऊ निंग ई फिर खड़े हुए—

"आपने आलोचना और सुझाव दिए। वे हमारे लिए बहुत कीमती हैं। हम अलग अलग देशों से आए हैं। लेकिन हमारे दिलों की धड़कन एक सी है। दुनियाँ के मजदूरों की एकता की ताकत सीमाहीन है। इस शांति और समृद्धि के लिए विश्व-व्यापी संघर्ष में हम जरूर जीतेंगे……।

"जैसा डेनमार्क के साथी ने कहा है—

"आओ हम सब पृथ्वी पर स्वर्ग का निर्माण करें"

दुनियाँ के मजदूरो एक हो।

शान्ति के लिए हमारी एकता जिन्दाबाद!

× × ×

२७ मई

चीन में मजदूरी का सिस्टम

आज आल चाइना फेडरेशन आफ लेबर के दफ्तर में चीन के मजदूरी-सिस्टम पर बहुत ही प्रभावशाली भाषण हुआ। वाँग यू— ए सी एफ एल के मजदूरी-विभाग की संचालिका, दुबली, पतली, गोरी, बहुत लम्बी नहीं। गंभीर, लेकिन आकर्षक बनाव का चेहरा, नीला कोट उतार दिया था— सफेद कमीज और वही नीला पैंट पहने हुए थीं। सिगरेट न पीती होतीं तो अपनी अरुणा आसफअली की तरह लगती थीं— सादगी और प्रभाव में। वगाँ यू ने बोलना शुरू किया—

"विषय कठिन और उलझा हुआ है। मैं जितना जानती हूँ और समझती हूँ, आपके सामने स्पष्ट रख दूँगी। बाद में आलोचना सवालात और सुझावों से बहुत मदद मिलेगी।

"मुक्ति से पहले चीन का मजदूरी सिस्टम उलझा हुआ था। और तर्क हीन भी। मुक्ति के बाद हमारी पार्टी और सरकार ने कदम-बकदम व्यापार और उद्योग की तरक्की के साथ इस तर्क हीनता और उलझन को खतम करने की कोशिश की है। हम तनखा बढ़ाने पर लगातार जोर देते रहे हैं। १६४८ की ६वीं मजदूर-कांग्रेस ने मजदूरी पर जो प्रस्ताव मंजूर किया वह ऐतिहासिक महत्व का है। कामरेड माओ और हमारे सामान्य कार्यक्रम की २६वीं धारा में "ज्यादा काम, ज़्यादा तनखा, अच्छा काम, ज्यादा तनखा" का सिद्धान्त अपनाया गया है। तजुर्बे से हम लोग भी इसी नतीजे पर पहुँचे।

मुक्ति के फौरन बाद कोई विशेष तबदीली नहीं हुई। मार्च १६५० में क़ीमतें स्थायी हो जाने के बाद, मुद्रास्फीत और सट्टेबाजी के

खतम होने पर तबदीली हुई है। लेकिन अभी तक हम पूरे चीन में एक ही तरह का सिस्टम लागू कर नहीं सके हैं। उत्तरी-पूर्वी चीन में अलग से लूँगी और बाकी चीन अलग से।

उत्तरी पूर्वी चीन में दिसम्बर १९४९ के मुक़ाबले औसतन मजदूरी २७ फीसदी ज़्यादा हुई है। बाकी चीन में ३७ फ़ीसदी ज़्यादा हुई है। मई १९५० तक पूरे चीन में औसतन १२·५ फ़ी सदी की बढ़ौती हुई।

चीन में ग्रेड का सिस्टम है। उत्तरी पूर्वी चीन में मजदूरी कूतने का तरीका स्किल और टेकनीक के बराबर हैं। १९५० के आखिर तक २७% मजदूरी औसतन बढ़ी। लेकिन इसी इलाके में टेकनिकल मजदूरों की बढ़ौती ६६ फ़ी सदी तक हुई। १९५१ में १५ फीसदी बढ़ौती हुई। इसी साल पीस-रेट का सिस्टम और इनाम का सिस्टम लागू किया गया। १९५१ के आखिर तक पूरे चीन में औसतन २६ फीसदी की बढ़ौती हुई।

सरमाएदारी मुल्कों और चीन के पीस-रेट में फर्क है। सरमाएदारी मुल्कों में उत्पादन-कोटा घटने से मजदूरी कम हो जाती है। सरमाएदारी मुल्कों में फैक्टरियाँ जब माल न होने के कारण बन्द हो जाती हैं तो मजदूरों को बैठकी का मुआवज़ा नहीं मिलता लेकिन चीन में ऐसे मौक़ों पर मजदूरी का ७५% मुआवजा दिया जाता है। ओवर-टाइम चाहे पीस-रेट ही क्यों न हो, कानूनन मना है। कमजोरी की हालत में मजदूरों को अच्छा खाना दिया जाता है।

मजदूरों को काम के तरीके अच्छे बनाने के लिए उत्साहित किया जाता है। अगर कोई सुझाव आया तो उसे पहले फैक्टरी में लागू करते हैं और कामयाब होने पर आम बनता है। ऐसे सुझावों के लिए मजदूर की तनख्वाह का ५० फीसदी इनाम मिलता है।

बाकी चीन में हालत एक साँ नहीं है। शुरू शुरू में तो हमने पुराने तरीके को ही जारी रक्खा लेकिन फिर तबदीलियाँ हुईं। कोमिंतांग के जमाने में हल्के उद्योगों में भारी उद्योगों के मुकाबले मजदूरी ज़्यादा थी। मजदूरी काम से तय नहीं होती थी बल्कि इस बात से कि फलाँ उद्योग में मुनाफा हुआ है या नहीं और साम्राज्य-वाद कोमितांग को भारी उद्योग-धंधे बनाने नहीं देता था।

जैसे— १९५० में — औसत १००

दियासलाई के कारखाने	१११
तम्बाकू	१२८
आटा-मिल	१३१
कोयलाखानें	१३३.३
इस्पात	१३४
रेलवे	१४६
इंजीनियरिंग	१६५
केमिकल	१६९
टेक्सटाइल	१८१
बिजली	१८७
पोस्ट-आफिस	१०४
तार और टेलीफोन	२१९

भारी उद्योगों को कितना कम महत्व दिया जाता था यह इसी से साफ है। कोयले की खानों में हल्के उद्योगों के मुकाबले मजदूरी बहुत कम है।

१९५० की ही दूसरी मिसाल —

इस्पात	१००
कागज मिल	४१०

प्रिंटिंग प्रेस	३०४
टेक्सटाइल	३७४

इस्पात और टेक्सटाइल में काम करने वाले मजदूर में ७ गुने का फर्क है। कोमिताँग के जमाने में मजदूरी का बढ़ाना बुद्धि और काबिलियत से सम्बन्धित नहीं था। वह तो अच्छी "पूजा" और रिश्तेदारी पर निर्भर था। ग्रेडों में फर्क सिद्धान्त हीन था। प्रोमोशन तो होता ही न था। मुक्ति से पहले मजदूर और मैनेजमेन्ट की मजदूरी में जमीन आसमान का अंतर था। विदेशी मिलों में तो यह १०० और २४०० तक पहुँच गया था। एक ही तरह के काम के लिए विदेशी को चीनी के मुकाबले ज़्यादा मिलता है।

मुक्ति से पहले मुद्रास्फीति के कारण असली मजदूरी का बदला मिलने की गुँजायश ही नहीं थी। अगर बाजार में कपड़े या तम्बाकू की कीमतें गिरतीं तो मजदूरी गिरना लाजिमी था।

मुक्ति के बाद मजदूरों के रहन-सहन की हालत की तरफ विशेष ध्यान दिया गया। उत्पादन के साथ तनख्वाह बढ़ाते जाने के सिद्धान्त पर काम किया गया।

ज़्यादा तनख्वाह वालों को स्थायी रक्खो और कम तनख्वाह वालों को उठाओ—यह हमारी नीति थी। पुराने सिस्टम में क़दम बदक़दम सुधार करते हुए नए सिस्टम को अलग-अलग इलाकों को रहन-सहन के हालत के मुताबिक लागू करना हमारा काम था।

१९५१ में उत्तरी पूर्वी चीन में औसत बढ़ौती २० फीसदी और भारी उद्योगों में ३० से लेकर ४० फीसदी तक बढ़ौती हुई। केन्द्रीय दक्षिण चीन में १० से लेकर २० फीसदी तक बढ़ौती है। उत्तरी पश्चिमी चीन में १० फीसदी और पेट्रोलियम के मजदूरों की २१%

बढ़ौती हुई। दक्षिण में शाँतुँग प्रांत में २०% से ३०% तक। दक्षिण-पश्चिमी चीन में २०% बढ़ौती हुई।

मजदूरी की एक यूनिट अनाज, तेल, नमक, तरकारी कपड़े की कीमत के मुताबिक निर्धारित होती है। तनख्वाहों का स्टैंडर्ड राष्ट्रीय जिन्दगी में उद्योग की महत्ता के हिसाब से होता है। कोयले के मजदूरों को सबसे ज्यादा मजदूरी मिलती है। फिर रहन-सहन के स्टैंडर्ड का भी ख्याल रक्खा जाता है जैसे शहरों में स्टैंडर्ड ऊँचा है। जैसे पेकिंग में।

इस्पात में ३८० युनिट करीब १६४ रुपया (ज़्यादा से ज़्यादा) १४५ युनिट, करीब ७४ रुपया (कम से कम तनख्वाह)।

इंजीनियरिंग में ३६५ युनिट, करीब १८७ रुपया। (ज़्यादा से ज़्यादा तनख्वाह) १३५ युनिट, करीब ७० रुपया (कम से कम तनख्वाह)

टेक्सटाइल में ३५४ युनिट करीब १८३ रुपया (ज़्यादा से ज़्यादा) १२८ यूनिट करीब ६७ रुपया। (कम से कम तनख्वाह)।

शंघाई में औसतन २०० के ऊपर है। और उत्तरी पूर्व चीन में औसतन ४२० यूनिट है जो करीब १६० रुपये के करीब पड़ेगा।

शंघाई, पेकिंग, टींसीन में युनिट के मूल्य में फर्क है जैसे
शंघाई में १ युनिट=२५०० ऐन (चीनी करेंसी)
पेकिंग में १ युनिट=२४०० ऐन (,,)
टींसीन में १ युनिट=२१०० ऐन (,,)

ग्रेडों का विभाजन सोवियत यूनियन के तजुर्बे के आधार पर और अपने यहाँ के मुक्ति के इलाकों के तजुर्बे पर है। पहले लोहा, फिर

कोयला, फिर इंजीनियरिंग, फिर केमिकल, फिर खाने के उद्योग। रेलवे के मजदूर इंजीनियरिंग के मजदूरों की ही तरह तनख्वाह पाते हैं। इंजिन ड्राइवर काम के मुताबिक तनख्वाह पाते हैं। ज़्यादातर ८ ग्रेडों के आधार पर मजदूरी मिलती है। ग्रेडों में काफी फर्क होने के कारण प्रोमोशन और उत्पादन जल्दी और ज़्यादा होता है।

विशेष मज़दूरी

१ क्षेत्रिक एलाउंस—दूर इलाकों, सीमा क्षेत्रों और खराब मौसम वाले इलाकों में मजदूरी का ३० % तक एलाउंस मिलता है।

२ जाब एलाउंस—टीम के नेताओं को मजदूरी के साथ मजदूरी का १० % से २० % तक।

३ टेकनिकल एलाउंस—ज़्यादा अध्ययन और खोज को उत्साहित करने के लिए टेकनिकल मजदूरों को।

४ स्वास्थ्य एलाउंस—खानों के भीतर या जहरीली गैसों के बीच काम करने वालों को १५ % तक। दूध या किसी और स्वास्थ्य-वर्द्धक भोजन की शकल में।

५ अगर किसी अच्छी टेकनीक के मजदूर को नीचे दर्जे का काम करना पड़ता है तो उसे तनख्वाह उसी ग्रेड की मिलेगी जिसकी क़ाबिलियत उसमें है।

६ बंदी एलाउंस—बिजली फेल हो जाने या माल कम होने के कारण बंदी पर ७५ % तक मुआवजा।

७ नए काम में जाने वालों को, सीखने वालों को—क्योंकि इस दौरान में वह अपनी जरूरत भर को नहीं पैदा कर पाते। काम सीख जाने पर यह बंद कर दिया जाता है।

मुक्ति के पहले	मुक्ति के बाद		
	१९४९	१९५०	१९५१
१००	११५	१६१	२८१

सबसे कम तनख्वाह में दो आदमी, बीच के ग्रेड में ४ आदमी और सबसे ज़्यादा वाले में ६ आदमी मजे में रह सकते हैं। १९३६ के मुक़ाबले आज तनख्वाहें तिगुनी हैं। कम तनख्वाह वालों की बढ़ाते जाना हमारा उद्देश्य है।

१९५२ के शुरू से सरकारी कारखानों में बोनस सिस्टम लागू हुआ है।

१—इस्पात, कोयला, जंगलात से मुनाफ़े का ५ फीसदी और बढ़े हुए कोटे के मुनाफ़े का २० फ़ीसदी।

२—बिजली, इंजीनियरिंग और रेलवे में मुनाफ़े का ३.५ फ़ीसदी और बढ़े हुए कोटे के मुनाफ़े का १५ फीसदी।

३—खाने और जनता की जरूरियात वाले उद्योगों-दफ़्तरों में मुनाफ़े का २.५ फीसदी और बढ़े हुए कोटे के मुनाफ़े का १२ फीसदी।

बोनस फंड सालाना तनख्वाह का १५% तक होना चाहिए। अभी इससे ज़्यादा नहीं।

बोनस फँड का इस्तेमाल १—बढ़े हुए मजदूरों को व्यक्तिगत या सामूहिक तौर पर इनाम देने, २—बड़े परिवारों को खास मदद देने, ३—साँस्कृतिक और सुविधा की चीजों को बढ़ाने, ४—सुरक्षा और स्वास्थ्य का सामान इकट्ठा करने और ५—उत्पादन के लिए जरूरी